सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 53, नई दिल्ली । शनिवार, 03 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

लोग तुम्हारी स्तुति करें या निंदा,
लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो युग में,
तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।
– स्वामी विवेकानंद

03 'देवी' योजना में मिली यह 400 बसें केन्द्र सरकार का दिल्ली वालों का दूसरा बड़ा तोहफा
06 वर्तमान पत्रकारिता की दशा और दिशा
08 झारखंड में सेवानिवृत्त पर कार्यरत डीजीपी लेकर भाजपा परेशान

---तीन दिन शेष--- सम्मान प्राप्त करने के लिए फार्म भरने की अंतिम तिथि 4 मई 2025

परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में अपनी योग्यता/ कार्यशैली / जनहित में समर्पण के आधार पर सम्मान प्राप्त करने के लिए आनलाइन गूगल फार्म जमा करने की अन्तिम तिथी है 4 मई 2025, इसके बाद फार्म स्वीकार नहीं किए जाएंगे। यह सम्मान सिर्फ आपकी योग्यता के आधार पर ही आप प्राप्त कर सकते हैं। सम्मान प्राप्त करने के लिए फार्म निशुल्क है और सम्मान भी योग्यता के आधार पर है जिसका कोई शुल्क/ चार्ज नहीं है।

12 तारीख तक फार्म की जांच के उपरान्त सफल मान्यगणों को मेल/ व्हाट्सएप द्वारा सूचित किया जाएगा और साथ ही समारोह में उपस्थित होने के लिए निमंत्रण पत्र प्राप्त जारी किया जाएगा।

17 मई दिन शनिवार को कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया में 3 pm से 6 pm तक सम्मान वितरण किया जाएगा। इस समारोह में प्रवेश सिर्फ़ निमंत्रित अतिथियों को निमंत्रण पत्र के आधार पर ही मिलेगा। आम व्यक्तियों के लिए सम्मान समारोह हाल में प्रवेश वर्जित है अतः आने से पूर्व अपने निमंत्रण पत्र की जांच अवश्य कर ले।

अगर आप मानते हैं की आपने ऐसे कार्य किए जिनके आधार पर आपको सम्मान प्राप्त होना चाहिए तो जल्द से जल्द "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" द्वारा जारी गूगल फार्म भर कर जमा करे। गूगल फार्म लिंक नीचे उपलब्ध है

सुनहरा अवसर सम्मान प्राप्त करने के लिए

गूगल फार्म भरे और पाए भारत के पहले परिवहन क्षेत्र के समाचार पत्र "**परिवहन विशेष**" से सम्मान

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfuZ3djD-SaHn5EjDHDvY23xfor75p0gT60_8pwdDxeuFEiqA/viewform?usp=dialog

जहां मेट्रो नहीं जाएगी, वहां देवी पहुंचाएगी, सीएम रेखा गुप्ता का बड़ा ऐलान : 400 इलेक्ट्रिक बसें लॉन्च

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली में सत्ता परिवर्तन के तीसरा महीना होने वाला है. मगर, दिल्लीवालों को नई सरकार लगातार तोहफे पर तोहफा दे रही है. रेखा गुप्ता सरकार ने दिल्लीवालों को 400 इलेक्ट्रिक बसों का तोहफा दिया. सीएम रेखा गुप्ता ने बसों के अंदर का दृश्य दिखाते हुए उसकी क्वालिटी बताई. साथ ही बताया कि इनकी वजह से दिल्ली के पर्यावरण को कितना लाभ होगा. उन्होंने पूर्व की आम आदमी पार्टी की सरकार पर उन्होंने हमला भी बोला है.

दिल्ली के मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा, 'देवी ईवी बस (DEVI EV Bus) बेहतर ट्रांसपोर्टेशन लेकर आ रही है. दिल्ली की पूरी परिवहन व्यवस्था को हम इलेक्ट्रिक पर लेकर आएंगे. ईवी बस में महिला सुरक्षा का खास ख्याल रखा गया है. इसमें कैमरा है, पैनिक बटन है, जिसकी वजह से महिलाएं पूरी तरीके से सुरक्षित रहेंगी.' साथ ही उन्होंने कहा, 'इन बसों की वजह से पॉल्यूशन खत्म होगा. ये बस एक नया बदलाव लेकर आएंगे. सार्वजनिक परिवहन को इलेक्ट्रिक व्हीकल पर लेकर आएंगे. यह महिलाओं और जनता के लिए सुविधाजनक है. इसमें आसानी से चल और उतर सकते हैं. हर छोटी-छोटी जगह पर आसानी से पहुंचा जा सकता है.'

समस्याएं हमें विरासत में मिली

उन्होंने कहा कि दिल्ली की सरकार का काम दिल्ली की व्यवस्थाओं को सुधारना है. समस्याएं हमें विरासत में मिली हैं, उन्हें निपटाना हमारा काम है. शासन प्रशासन पूरी तरीके से मुस्तैद है. बता दें कि जल्द ही ट्रैफिक की समस्या भी खत्म होगी.'

पिछली सरकार पर बोला हमला

उन्होंने पिछली सरकार पर भी हमला बोला है. उन्होंने कहा, 'पिछली सरकार ने बस की बात तो थी. लेकिन, न इस योजना को शुरू किया और ना ही बस खरीदी गई. इस साल के अंत तक हम 2080 बसें और खरीद कर दिल्ली को समर्पित करने वाले है. प्रदूषण का 45 प्रतिशत हिस्सा गाड़ियों की वजह से होता है. उसको कम करने के लिए अगले साल तक पूरे ट्रांसपोर्ट सिस्टम को इलेक्ट्रिक मोड पर ले आयेंगे. हम जल्द ही ईवी पॉलिसी लाएंगे, जिससे प्राइवेट व्हीकल को भी सड़कों पर चलाया जाए.' उन्होंने कहा कि दिल्ली में नए चार्जिंग स्टेशन और डिपो बनाए जा रहे है. इस परिवहन व्यवस्था के लिए 9 हजार करोड़ का बजट रखा गया है.

सड़कों पर मुश्तैद हमारे नेता

इसके आलवा उन्होंने बताया कि इसका नाम देवी बस क्यों रखा गया है. उन्होंने कहा कि दिल्ली पर देवी की कृपा है, हर चुनौती से दिल्ली लड़ी है, इसलिए हमने बस का नाम देवी रखा है. इसके अलावा उन्होंने आज के बारिश के बहाने अरविंद केजरीवाल पर भी निशाना साधा है. उन्होंने कहा कि आज सुबह अचानक मेरी आंख बिजली कड़कने की आवाज से खुली. तब तेज बारिश भी हो रही थी. मैं ये देख रही थी कि कहां क्या चला रहा है. जब बारिश हो रही थी तब मंत्री प्रवेश वर्मा सड़कों पर पानी की स्थिति खुद देख रहे थे. सारे अधिकारी सुबह से सड़कों पर खड़े थे, सांसद मेयर भी सड़कों पर जल निकासी का काम करवा रहे हैं. मैने खुद 3 प्वाइंट देखे जहां जल भराव था और ट्रैफिक लगा हुआ था. दिल्ली में अब ट्रिपल इंजन की सरकार मुस्तैदी से काम कर रही है।

"एक नई दिशा, एक नई सोच— सड़क सुरक्षा और ट्रांसपोर्ट क्षेत्र को समर्पित अद्वितीय आयोजन"

परिवहन विशेष द्वारा प्रस्तुत – सड़क सुरक्षा, नवाचार, और ट्रांसपोर्ट जगत की अग्रणी हस्तियों का संगम।

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र"– देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र का "द्वितीय वार्षिक सम्मान समारोह"

दिनांक : शनिवार 17 मई 2025.
प्रात: 10:00 बजे से 7 बजे तक,
स्थान : स्पीकर हॉल, कंस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली।

"द्वितीय वार्षिक सम्मान समारोह"

मुख्य अतिथि :–

श्री शंभू सिंह, आईएएस सचिव शिपिंग भारत सरकार (सेवानिवृत्त) शिपिंग मंत्रालय होंगे।

विशेषज्ञ / मुख्य वक्ता :–

1. श्री अनिल छिक्कारा, पूर्व डिप्टी कमिश्नर दिल्ली,
2. श्री अजय शाह, टायर परिप्रेक्ष्य के लिए सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ।
3. श्री प्रशांत चोपड़ा, दो पहिया वाहनों के लिए सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ,
4. श्री अनिल शर्मा, 4 दशकों से अधिक समय से विमान पायलट प्रशिक्षक,
5. श्री राजीव शरद – आईटी से संबंधित सड़क सुरक्षा में देश का जाना–माना नाम
6. श्री महाराज सिंह – मीटर वाहन नियम / अधिनियम विशेषज्ञ
7. श्री अंकुर शरण –
8. श्री आशीष कुमार जैन
9. . श्री एम. के. गिरी – अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत

ट्रकों-बसों पर लगेंगे प्रदूषण कम करने वाले डिवाइस

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने ओपन इनोवेशन चैलेंज की घोषणा की जिसका उद्देश्य प्रदूषण से लड़ने के लिए नए स्टार्टअप्स और आम जनता की मदद लेना है। सरकार बसों और ट्रकों पर प्रदूषण कम करने वाले डिवाइस लगाएगी। कहा कि इनोवेशन से ही प्रदूषण का समाधान होगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में वायु गुणवत्ता सुधारने की दिशा में पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने गुरुवार को एक 'ओपन इनोवेशन चैलेंज' का एलान किया। इस चैलेंज का मकसद आम जनता और नए स्टार्टअप्स को दिल्ली में प्रदूषण के खिलाफ जारी लड़ाई में हिस्सा लेने का मौका देना है।

ट्रकों और बसों पर लगेंगे प्रदूषण कम करने वाले डिवाइस

मंत्री सिरसा ने बताया कि सरकार अब ट्रांसपोर्ट को समस्या नहीं, बल्कि समाधान का हिस्सा बनाने जा रही है। इसके तहत बसों और ट्रकों पर ऐसे डिवाइस लगाए जाएंगे जो हवा में प्रदूषण को कम कर सकें। उन्होंने कहा कि हमने ठान लिया है कि दिल्ली के प्रदूषण को साइंस और तकनीक की मदद से हराएंगे। आमतौर पर प्रदूषण का प्रमुख कारण माना जाने वाला ट्रांसपोर्ट अब इसके समाधान का हिस्सा बनेगा। हम इनोवेशन में विश्वास रखते हैं। इनोवेशन ही पॉल्यूशन को खत्म करेगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार जल्द ही एक स्कीम लांच करेगी, जिसमें आम लोग और स्टार्टअप अपने आइडिया दे सकते हैं।

ये सुझाव ऐसे उपकरणों से जुड़े होंगे, जिन्हें सार्वजनिक वाहनों की छतों पर लगाकर हवा को साफ किया जा सके। मंत्री ने कहा कि भारतीयों में इनोवेशन की कमी नहीं है, एक विशेषज्ञ समिति इन आइडियाज को तीन बिंदुओं एफिकेसी, कास्ट और पावर एफिशिएंसी पर परखेगी। जिन प्रस्तावों को स्वीकृति मिलेगी, उनके लिए सरकार टेंडर निकालेगी।

इलेक्ट्रिक जीरो-एमिशन व्हीकल समेत अन्य मशीनों को मंत्री सिरसा ने देखा

इस घोषणा के साथ ही सिरसा ने दिल्ली सचिवालय के बाहर धूल प्रदूषण नियंत्रण से जुड़ी मशीनों का प्रदर्शन देखा। इन मशीनों में पूर्णरूप से इलेक्ट्रिक जीरो-एमिशन व्हीकल, एक रोड स्वीपर, एक मोबाइल लिटर सक्शन यूनिट और एक हाई-प्रेशर वाटर जेटिंग मशीन थी। ये सभी लिथियम आयन बैटरी से संचालित होते हैं और अलग-अलग भौगोलिक परिस्थितियों में कई तरीके से सफाई करने में सक्षम हैं।

रोड स्वीपर को एक ही साथ स्वीपिंग, वैक्यूम क्लीनिंग और पानी का छिड़काव करते दिखाया गया। लिटर सक्शन यूनिट कॉम्पैक्ट थी और पार्कों व संकरी गलियों के लिए उचित मानी गई। वहीं, वॉटर जेटिंग व्हीकल (500 लीटर कैपेसिटी) ने रोड, दीवारों और सतह को साफ करने की क्षमता दिखाई।

मंत्री ने पहले से मौजूद एंटी स्मोग गन और वाटर सप्रिंक्लरों की भी समीक्षा की और देखा कि ये कैसे पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे पार्टिकुलेट मैटर को कम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदूषण से लड़ाई तीन बिंदुओं टेक्नोलाजी, स्पीड और गंभीरता पर आधारित है।

चार धाम यात्रा के लिए सफदरजंग रेलवे स्टेशन से चलेगी भारत गौरव ट्रेन, 27 मई को होगी रवाना

भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) चारधाम यात्रा के लिए भारत गौरव ट्रेन चलाने जा रहा है। यह ट्रेन 27 मई को दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से रवाना की जाएगी। 17 दिन में बद्रीनाथ जगन्नाथ पुरी रामेश्वरम और द्वारका के दर्शन कराए जाएंगे। इसका किराया 135870 रुपये है।

नई दिल्ली: बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम और द्वारका इन चार धामों की यात्रा के लिए लिए भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) द्वारा भारत गौरव ट्रेन चलाने की घोषणा की गई है। 27 मई को यह विशेष पर्यटक ट्रेन दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से रवाना होगी। विशेष पर्यटक ट्रेन 17 दिनों में 8,425 किलोमीटर की यात्रा करेगी।

इस यात्रा में बद्रीनाथ, माणा गांव, नरसिंह मंदिर, जोशीमठ, ऋषिकेश, जगन्नाथ मंदिर, पुरी समुद्र तट, कोणार्क सूर्य मंदिर, चंद्रभागा समुद्र तट, रामेश्वरम में रामनाथ स्वामी मंदिर और धनुषकोड़ी तथा द्वारका में द्वारकाधीश मंदिर, नागेश्वर ज्योतिर्लिंग तथा बेट द्वारका के दर्शन होंगे। इसके साथ ही वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर, पुणे में भीमशंकर मंदिर और नासिक में त्रंबकेश्वर मंदिर का भी दर्शन कर सकेंगे। भारत गौरव डीलक्स पर्यटक ट्रेन में वातानुकूलित प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी के कोच लगाए जाएंगे।

इस ट्रेन में कई आधुनिक व आरामदायक सुविधाएं हैं। दो डायनिंग रेस्तरां, एक आधुनिक किचन, जैव शौचालय की सुविधा है। यात्रियों की सुविधा के लिए फुट मसाजर, यात्रियों की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे और सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था भी की गई है। इस ट्रेन में 150 सीटें उपलब्ध है जिसे पहले आओ,पहले पाओ आधार पर बुक किया जाएगा। यात्री आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर इसकी बुकिंग कर सकेंगे। इसकी शुरुआती किराया 1,35,870 रुपये है। इसमें ट्रेन का किराया के साथ ही तीन सितारा होटल में रहने, तीनों समय का भोजन, रेलवे स्टेशन से पर्यटन स्थल तक ले जाने की सुविधा, यात्रा बीमा, टूर मैनेजर की सेवा शामिल है।

पशुपतिनाथ की महिमा

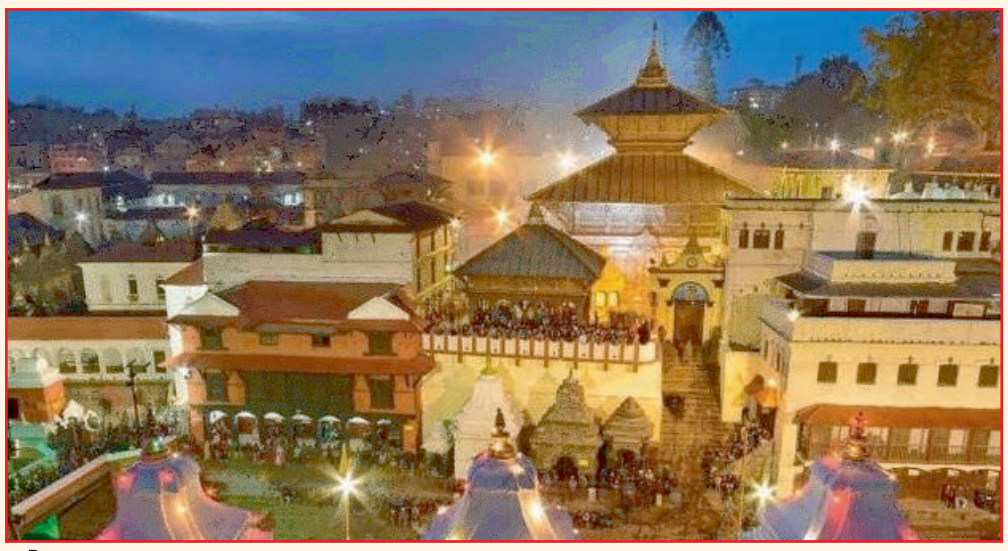

नेपाल का पशुपतिनाथ मंदिर ऐसा ही एक स्थान है, जिसके विषय में यह माना जाता है कि आज भी इसमें शिव की मौजूदगी है।

पशुपतिनाथ मंदिर को शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, केदारनाथ मंदिर का आधा भाग माना जाता है। पशुपतिनाथ मंदिर नेपाल की राजधानी काठमांडू से उत्तर-पश्चिम देवपाटन गांव में बागमती नदी के तट पर है स्थित है।

अगर आप कभी नेपाल घुमने जाते हैं तो आपको वहां जाकर इस बात का बिल्कुल भी एहसास नहीं होगा कि आप एक अलग देश में हैं। कुछ भारत जैसी संस्कृति और संस्कारों को देखकर आप आश्चर्यचकित जरुर हो जायेंगे। आप अगर शिव भगवान के भक्त हैं तो आपको एक बार नेपाल स्थित भगवान शिव का पशुपतिनाथ मंदिर जरूर जाना चाहिए।

नेपाल में भगवान शिव का पशुपतिनाथ मंदिर विश्वभर में विख्यात है। इसका असाधारण महत्त्व भारत के अमरनाथ व केदारनाथ से किसी भी प्रकार कम नहीं है। पशुपतिनाथ मंदिर नेपाल की राजधानी काठमांडू से तीन किलोमीटर उत्तर-पश्चिम देवपाटन गांव में बागमती नदी के तट पर स्थित है।

यह मंदिर भगवान शिव के पशुपति स्वरूप को समर्पित है। यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक विरासत स्थल की सूची में शामिल भगवान पशुपतिनाथ का मंदिर नेपाल में शिव का सबसे पवित्र मंदिर माना जाता है।

यह मंदिर हिन्दू धर्म के आठ सबसे पवित्र स्थलों में से एक है। नेपाल में यह भगवान शिव का सबसे पवित्र मंदिर है।

इस अंतर्राष्ट्रीय तीर्थ के दर्शन के लिए भारत के ही नहीं, अपितु विदेशों के भी असंख्य यात्री और पर्यटक काठमांडू पहुंचते हैं।

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव यहां पर चिंकारे का रूप धारण कर निद्रा में चले बैठे थे। जब देवताओं ने उन्हें खोजा और उन्हें वाराणसी वापस लाने का प्रयास किया तो उन्होंने नदी के दूसरे किनारे पर छलांग लगा दी। कहा जाता हैं इस दौरान उनका सींग चार टुकडों में टूट गया था। इसके बाद भगवान पशुपति चतुर्मुख लिंग के रूप में यहाँ प्रकट हुए थे।

पशुपतिनाथ लिंग विग्रह में चार दिशाओं में चार मुख और ऊपरी भाग में पांचवां मुख है। प्रत्येक मुखाकृति के दाएं हाथ में रुद्राक्ष की माला और बाएं हाथ में कमंडल है। प्रत्येक मुख अलग-अलग गुण प्रकट करता है। पहला मुख 'अघोर' मुख है, जो दक्षिण की ओर है। पूर्व मुख को 'तत्पुरुष' कहते हैं। उत्तर मुख 'अर्धनारीश्वर' रूप है। पश्चिमी मुख को 'सद्योजात' कहा जाता है। ऊपरी भाग 'ईशान' मुख के नाम से पुकारा जाता है। यह निराकार मुख है। यही भगवान पशुपतिनाथ का श्रेष्ठतम मुख माना जाता है।

इतिहास को देखने पर ज्ञात होता है कि पशुपतिनाथ मंदिर में भगवान की सेवा करने के लिए 1747 से ही नेपाल के राजाओं ने भारतीय ब्राह्मणों को आमंत्रित किया है। इसके पीछे यह तथ्य बताये जाते हैं कि भारतीय ब्राह्माण हिन्दू धर्मशास्त्रों और रीतियों में ज्यादा पारंगत होते हैं। बाद में 'माल्ला राजवंश' के एक राजा ने दक्षिण भारतीय ब्राह्मण को 'पशुपतिनाथ मंदिर' का प्रधान पुरोहित नियुक्त किया। दक्षिण भारतीय भट्ट ब्राह्मण ही इस मंदिर के प्रधान पुजारी नियुक्त होते रहे हैं।

मंदिर के निर्माण का कोई प्रमाणित इतिहास तो नहीं है किन्तु कुछ जगह पर यह जरुर लिखा गया है कि मंदिर का निर्माण सोमदेव राजवंश के पशुप्रेक्ष ने तीसरी सदी ईसा पूर्व में कराया था।

कुछ इतिहासकार पाशुपत सम्प्रदाय को इस मंदिर की स्थापना से जुड़ा मानते हैं। पशुपति काठमांडू घाटी के प्राचीन शासकों के अधिष्ठाता देवता रहे हैं। 605 ईस्वी में अमशुवर्मन ने भगवान के चरण छूकर अपने को अनुग्रहीत माना था। बाद में मध्य युग तक मंदिर की कई नकलों का निर्माण कर लिया गया। ऐसे मंदिरों में भक्तपुर (1480), ललितपुर (1566) और बनारस (19वीं शताब्दी के प्रारंभ में) शामिल हैं। मूल मंदिर कई बार नष्ट हुआ है। इसे वर्तमान स्वरूप नरेश भूपलेंद्र मल्ला ने 1697 में प्रदान किया।

मंदिर की आध्यात्मिक शक्ति की चर्चाआसपास में काफी प्रचलित है। भारत समेत कई देशों से लोग यहाँ आध्यात्मिक शांति की तलाश में आते हैं। अगर आप भी भगवान शिव के दर्शनों के अभिलाषी हैं तो यहाँ साफ़ और छल रहित दिल से आकर, आप शिव के दर्शन कर सकते हैं।

मंदिर की महिमा के बारे में आसपास के लोगों से आप काफी कहानियां भी सुन सकते हैं। मंदिर में अगर कोई घंटा-आधा घंटा ध्यान करता है तो वह जीव कई प्रकार की समस्याओं से मुक्त भी हो जाता है।

भारत के उत्तराखण्ड राज्य में स्थित प्रसिद्ध केदारनाथ मंदिर की किंवदंती के अनुसार

जब महाभारत के युद्ध में पांडवों द्वारा अपने ही रिश्तेदारों का रक्त बहाया गया तब भगवान शिव उनसे बेहद क्रोधित हो गए थे। श्रीकृष्ण के कहने पर वे भगवान शिव से मांफी मांगने के लिए निकल पड़े।

गुप्त काशी में पांडवों को देखकर भगवान शिव वहां से विलुप्त होकर एक अन्य थान पर चले गए। आज इस स्थान को केदारनाथ के नाम से जाना जाता है।

शिव का पीछा करते हुए पांडव केदारनाथ भी पहुंच गए लेकिन भगवान शिव उनके आने से पहले ही भैंस का रूप लेकर वहां खड़े भैंसों के झुंड में शामिल हो गए। पांडवों ने महादेव को पहचान तो लिया लेकिन भगवान शिव भैंस के ही रूप में भूमि में समाने लगे।

इसपर भीम ने अपनी ताकत के बल पर भैंस रूपी महादेव को गर्दन से पकड़कर धरती में समाने से रोक दिया। भगवान शिव को अपने असल रूप में आना पड़ा और फिर उन्होंने पांडवों को क्षमादान दे दिया।

लेकिन भगवान शिव का मुख तो बाहर था लेकिन उनका देह केदारनाथ पहुंच गया था। जहां उनका देह पहुंचा वह स्थान केदारनाथ और उनके मुख वाले स्थान पशुपतिनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इन दोनों स्थानों के दर्शन करने के बाद ही ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने का पुण्य प्राप्त होता है। पशुपतिनाथ में भैंस के सिर और केदारनाथ में भैंस की पीठ के रूप में शिवलिंग की पूजा होती है।

पशुपति नाथ मंदिर के विषय में यह मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस स्थान के दर्शन करता है उसे किसी भी जन्म में पशु योनि प्राप्त नहीं होती। लेकिन साथ ही यह भी माना जाता है कि पशुपतिनाथ के दर्शन करने वाले व्यक्ति को सबसे पहले नंदी के दर्शन नहीं करने चाहिए, अगर ऐसा होता है तो उस व्यक्ति को पशु योनि मिलना तय होता है।

पशुपतिनाथ मंदिर के बाहर एक घाट स्थित है जिसे आर्य घाट के नाम से जाना जाता है। पौराणिक काल से ही केवल इसी घाट के पानी को मंदिर के भीतर ले जाए जाने का प्रावधान है। अन्य किसी भी स्थान का जल अंदर लेकर नहीं जाया जा सकता।

पशुपतिनाथ विग्रह में चारों दिशाओं में एक मुख और एकमुख ऊपर की ओर है। प्रत्येक मुख के दाएं हाथ में रुद्राक्ष की माला और बाएं हाथ में कमंदल मौजूद है।

ये पांचों मुख अलग-अलग गुण लिए हैं। जो मुख दक्षिण की ओर है उसे अघोर मुख कहा जाता है, पश्चिम की ओर मुख को सद्योजात, पूर्व और उत्तर की ओर मुख को क्रमशः तत्वपुरुष और अर्धनारीश्वर कहा जाता है। जो मुख ऊपर की ओर है उसे ईशान मुख कहा जाता है।

पशुपतिनाथ मंदिर का ज्योतिर्लिंग चतुर्मुखी है। ऐसा माना जाता है कि ये पारस पत्थर के समान है, जो लोहे को भी सोना बना सकता है।

जाने कौन सा पूजन- अनुष्ठान किस कामना के लिए किया जाना चाहिए ?

1 : बटुक भैरव स्त्रोत्र : इस स्त्रोत्र के पाठ करने मात्र से महामारी राजभय अग्निभय चोरभय उत्पात भयानक स्वप्न के भय में घोर बंधन में इस बटुक भैरव का पाठ अति लाभदाई है । तथा हर प्रकार की सिद्धी हो जाती है । इस प्रयोग का कम से कम १०८ पाठ करना चाहिए ।

2 : श्री सूक्त प्रयोग : श्री सूक्त प्रयोग एक ऐसा प्रयोग है जिससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर घर में स्थिर रूप से निवास करती है । इसके ११०० आवृति [पाठ] कराने पर विशेष लाभ होता है ।

3 : श्री कनकधारा स्तोत्र : यह स्तोत्र आद्य शंकराचार्य जी द्वारा रचित है जिसके पाठ से स्वर्ण वर्षा हुई थी । कनकधारा स्तोत्र के पाठ करवाने से घर ऑफिस व्यापार स्थल में उतरोत्तर वृद्धि होती रहती है कनकधारा में कमला प्रयोग से अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है ।

4 : श्री मद भागवत गीता : यह महाभारत के भीष्म पर्व से लिया गया है । इसमें भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को आत्मज्ञान दिया तथा कर्म में लगे रहने के विषय में बतलाया है । इस के पाठ करवाने से घर में शांति सुख व्समृद्धि आती है , तथा सभी दोष पाठ मात्र से नष्ट होते है यह अत्यंत लाभकारी है ।

5 : श्री अखंड रामचरित मानस पाठ : यह तुलसीदास द्वारा रचित है । इस मानसमें सात कांड जिसका पारायण [पाठ] अनवरत है । इसलिए इसे अखंड पाठ कहते है । यह २० से २५ घंटे में पूर्ण होता है । मानस पाठ से घर मे काफी शांती तथा यश व कीर्ती बढती हे तथा मनुष्य सही नीती से चलता है ।

6 : सुंदर कांड पाठ : सुंदर कांड पाठ तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस से लिया गया है इस पाठ से हनुमान जी को प्रसन्न किया जाता है विशेषतः शनी के प्रकोप को शांत करणे के लिये सुंदरकांड का पाठ लाभदायक होता है , वैसे कम से कम १०८ पाठ ब्राह्मण के द्वारा करवाया जाता है ।

7 : हनुमान चालीसा : हनुमान चालीसा कलियुग मे मनुष्य के जीवन का आधार है इसका पाठ प्रायः प्रतिदिन किया जाता है । परंतु विशेष रूप से ४१ दिन मे प्रतिदिन १०० पाठ कराने से कोई भी महत्वपूर्ण कार्य के लिए किये गया सभी अनुष्ठान पूर्ण होता है ।

8 : बजरंग बाण : बजरंग बाण के पाठ से मनुष्य स्वयं सुरक्षित रहता है । बजरंग बाण के पाठ से मनुष्य सुरक्षित राहता है इसका कम से कम ५२ पाठ करके हवन करने पर विशेष लाभ प्राप्त होता है ।

9 : हरि किर्तन [हरे राम हरे कृष्ण] : प्रभू कि कृपा प्राप्ती तथा घर मे आनंद एवं सुख के लिये तथा सन्मार्ग प्राप्ती के लिये हरि किर्तन करवाया जाता है ।

10 : श्री सुंदर कांड [वाल्मिकी रामायण] : वाल्मिकी रामायण के सुंदर कांड का पाठ करने से संतान बाधा दूर होती है तथा इसके प्रयोग से सारी कठिनाइय समाप्त हो जाती है । वाल्मिकी द्वारा रचित सुंदर कांड एक याज्ञिक प्रयोग है । इस पाठ का १०८ पाठ विशेषतः हवनात्मक रूप से लाभ दायक है ।

11 : श्री ललिता सहस्त्र नामावली : ललिता सहस्त्र नाम अर्थात दुर्गा माताकि प्रतिमूर्ती है । इस सहस्त्र नाम के पाठ से अर्चन व अभिषेक तथा हवन करने से विशेषतः रोग बाधा दूर होता है ।

12 : श्री शिव सहस्त्र नामावली : शिव सहस्त्र नामावली के कई प्रयोग है । इस प्रयोग से कई लाभ मिळते है । सहस्त्र नामावली के द्वारा अर्चन व अभिषेक तथा हवन प्रयोग से अपारशांती मिळती है ।

13 : श्री हनुमत सहस्त्र नामावली : श्री हनुमत सहस्त्र नामावली के प्रयोग से विशेषतः शनी शांती होती है ।

14 : श्री शनी सहस्त्र नामावली : शनी के प्रकोप या शनी कि साढे साती या अढ्या चाल रही हो तो शनी सहस्त्रनाम का प्रयोग किया जाता है ।

15 : श्री कात्यायनी देवी जप : जिस किसी भी कन्या के विवाह मे बाधा आ रही हो या विलंब हो रहा हो तो कात्यायनी देवी का ४१००० मंत्र का जप केले के पत्ते पर ब्राह्मण पान खाकर जप करता है , तो उस कन्या के विवाह मे आने वाली सभी बाधाये दूर हो जाती है । यह अनुष्ठान २१ दिन मे पूर्ण हो जाता है । यह प्रयोग अनुभव सिद्ध है।

16 : श्री गोपाल सहस्त्र नाम : जब किसी भी दंपती को पुत्र या संतान कि प्राप्ती न हो रही हो तो ,वह सदाचार तथा धार्मिक पुत्र कि प्राप्ती के लिये गोपाल सहस्त्रनाम का पाठ करावे । गोपाल मंत्र का सवा लाख जप पुत्र प्राप्ती मे अत्यंत लाभदायक है । यह प्रयोग अनुभूत है ।

17 : श्री हरिवंश पुराण : श्री हरिवंश पुराण कथा का श्रवण अत्यंत प्रभावी होता है । जिस किसी भी परिवार मे संतान न उत्पन्न हो रहा हो तो इस पुराण के पारायण [पाठ] से घर मे संतान उत्पत्ती होती है ।यह अनुभूत है तथा , यह ७ दिन का कार्यक्रम होता है ।

18 : श्री शिव पुराण : श्री शिव पुराण मे शिव जी के महिमा का हि विशेष वर्णन है तथा उनके सभी अवतरो का वर्णन किया गया है । यह श्रावण मास या पुरुषोत्तम मास मे विशेष रूप से पाठ बैठाया जाता है ।

19 : श्री देवी भागवत : श्री देवी भागवत मे भी १८००० श्लोक है तथा यह माता जी के प्रसन्नता के लिये किया जाता है ,यह प्रयोग नवरात्र या विशेष पर्व पर किया जाता है ।

20 : श्री गणपती पूजन एवं अभिषेक : किसी भी शुभ अवसर पर यह पूजन किया जा सकता है । इससे सभी बाधाये दूर हो जाती है तथा कार्य मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

21 : भूमी पूजन ,आफिस एवं दुकान उदघाटन : भूमि पूजन एवं दुकान उदघाटन उस भूमि पर कार्य शुरू करने के पूर्व वहा का भूमि पूजन सम्पन्न किया जाता है । जिससे वहा किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो और कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाता हैं।

श्री गंगा सप्तमी आज

सनातन धर्म में गंगा स्नान का खास महत्व है। बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूर्णिमा, संक्रांति, गंगा सप्तमी, गंगा दशहरा और अमावस्या समेत शुभ तिथियों पर गंगा नदी में आस्था की डुबकी लगाकर मां गंगा, सूर्य देव, महादेव और भगवान विष्णु की पूजा करते हैं। सामान्य दिनों में भी साधक गंगा स्नान करते हैं। शास्त्रों में वर्णित है कि गंगा स्नान करने से जाने-अनजाने में किए गए पाप नष्ट हो जाते हैं। वहीं, गंगाजल से देवों के देव महादेव का अभिषेक करने से साधक की हर परेशानी दूर हो जाती है। साथ ही जीवन में खुशियों का आगमन होता है। मां गंगा की पूजा भक्ति करने से सुख और सौभाग्य में अपार वृद्धि होती है।

कब मनाई जाती है गंगा सप्तमी?

हर साल वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि पर गंगा सप्तमी मनाई जाती है। यह दिन पूर्णता देवी मां गंगा को समर्पित होता है। इस शुभ अवसर पर साधक सबसे पहले गंगा स्नान करते हैं। इसके बाद देवी मां गंगा और महादेव की पूजा करते हैं। वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि पर गंगा नदी के तट पर मेला का आयोजन किया जाता है। साथ ही संध्याकाल में गंगा आरती की जाती है।

गंगा सप्तमी कब है?

वैदिक पंचांग के अनुसार, 03 मई को सुबह 07 बजकर 51 मिनट पर वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि शुरू होगी। वहीं, 04 मई को सुबह 04 बजकर 18 मिनट पर वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि समाप्त होगी। सनातन धर्म में उदया तिथि मान है। इसके लिए 03 मई को गंगा सप्तमी मनाई जाएगी। इस दिन गंगा स्नान हेतु शुभ मुहूर्त सुबह 10 बजकर 58 मिनट से लेकर दोपहर 01 बजकर 38 मिनट तक है।

गंगा सप्तमी के शुभ योग

वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि पर त्रिपुष्कर योग का निर्माण हो रहा है। साथ ही रवि और शिववास योग का भी संयोग है। रवि योग में गंगा स्नान करने से साधक को सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलेगी। वहीं, शिववास योग में गंगा स्नान कर देवों के देव महादेव की पूजा करने से सुख और सौभाग्य में वृद्धि होगी।

गंगा सप्तमी की कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, राजा सगर ने युद्ध में मारे गए अपने पुत्रों को मोक्ष के लिए कठोर तपस्या कर गंगा को धरती पर अवतरित करवाया था। गंगा नदी का वेग इतना ज्यादा था। कि उससे पूरी पृथ्वी का संतुलन बिगड़ने का खतरा उत्पन्न हो गया था। ऐसे में भगवान शिव ने गंगा नदी का अपने जटाओं में धारण कर लिया और नियंत्रित रूप से धरती पर अवतरित होने दिया। भगवान शिव ने गंगा नदी को वर्ष वैशाख के माह में शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि अपनी जटाओं में धारण किया था। ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को गंगा दशहरा मनाया जाता है। इस दिन गंगा नदी धरती पर अवतरित हुई थीं।

धूप बत्ती के प्रकार लाभ और निर्माण विधि

हिंदू धर्म में धूप देने और दीपक जलाने का बहुत अधिक महत्त्व है। सामान्य तौर पर धूप दो तरह से ही दी जाती है। पहला गुग्गुल-कर्पूर से और दूसरा गुड़-घी मिलाकर जलते कंडे पर उसे रखा जाता है।

वर्तमान परिस्थितियों में समय की कमी एवं प्रचार की अधिकता के कारण आमतौर पर हम बाजार से लाई गई धूप ही प्रयोग करते है जिनमे भी हमे विभिन्न प्रकार की सुगंध वाली धूप मिल जाती है लेकिन इनके निर्माण में अधिकांशतः कैमिकल और गाड़ियों का बचा हुआ काला तेल प्रयोग किया जाता है।

गुड़ और घी से दी गई धूप का ख़ास महत्त्व है। इसके लिए सर्वप्रथम एक कंडा जलाया जाता है। फिर कुछ देर बाद जब उसके अंगारे ही रह जाएँ, तब गुड़ और घी बराबर मात्रा में लेकर उक्त अंगारे पर रख दिया जाता है और उसके आस-पास अँगुली से जल अर्पण किया जाता है। अँगुली से देवताओं को और अँगूठे से अर्पण करने से वह धूप पितरों को लगती है। जब देवताओं के लिए धूप दान करें, तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश का ध्यान करना चाहिए और जब पितरों के लिए अर्पण करें, तब अर्यमा सहित अपने पितरों का ध्यान करना चाहिए तथा उनसे सुख-शांति की कामना करें।

नियम

हिन्दू धर्म में धूपबत्ती आदि से धूप देने के भी नियम बताए गये हैं, जैसे-

किसी कारण से यदि रोज धूप नहीं दे पाएँ तो त्रयोदशी, चतुर्दशी तथा अमावस्या और पूर्णिमा को सुबह-शाम धूप अवश्य देना चाहिए। सुबह दी जाने वाली धूप देवगणों के लिए और शाम को दी जाने वाली धूप पितरों के लिए होती है।

धूप देने के पूर्व घर की सफाई करनी चाहिए। पवित्र होकर-रहकर ही धूप देना चाहिए। धूप ईशान कोण में ही दें। घर के सभी कमरों में धूप की सुगंध फैल जानी चाहिए। धूप देने और धूप का असर रहे तब तक किसी भी प्रकार का संगीत नहीं बजाना चाहिए। हो सके तो कम से कम बात करना चाहिए।

धूप के प्रकार

तंत्रसार के अनुसार अगर, तगर, कुष्ठ, शैलज, शर्करा, नागरमाथा, चंदन, इलायची, तज, नखनखी, मुशीर, जटामांसी, कर्पूर, ताली, सदलन और गुग्गुल ये सोलह प्रकार के धूप माने गए हैं। इसे 'षोडशांग धूप' कहते हैं।

'मदरत्न' के अनुसार चंदन, कुष्ठ, नखल, राल, गुड़, शर्करा, नखगंध, जटामांसी, लघु और क्षौद्र सभी को समान मात्रा में मिलाकर जलाने से उत्तम धूप बनती है। इसे 'दशांग धूप' कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त भी अन्य मिश्रणों का भी उल्लेख मिलता है, जैसे- छह भाग कुष्ठ, दो भाग गुड़, तीन भाग लाक्षा, पाँचवाँ भाग नखला, हरीतकी, राल समान अंश में, दपै एक भाग, शिलाजय तीन लव जिनता, नागरमोथा चार भाग, गुग्गुल एक भाग लेने से अति उत्तम धूप तैयार होती है। रुहिकाख्य, कण, दारुसिहक, अगर, सित, शंख, जातीफल, श्रीश ये धूप में श्रेष्ठ माने जाते हैं।

इन सबके अतिरिक्त दैनिक पूजन अथवा विशेष कामना से निम्न धूप अथवा धूनी का प्रयोग भी किया जाता है इनके प्रकार और फल निम्नलिखित है।

1- कर्पूर और लौंग

रोज़ाना सुबह और शाम घर में कर्पूर और लौंग जरूर जलाएं। आरती या प्रार्थना के बाद कर्पूर जलाकर उसकी आरती लेनी चाहिए। इससे घर के वास्तुदोष ख़त्म होते हैं। साथ ही पैसों की कमी नहीं होती।

2- गुग्गल की धूनी

हफ्ते में 1 बार किसी भी दिन घर में कंडे जलाकर गुग्गल की धूनी देने से गृहकलह शांत होता है। गुग्गल सुगंधित होने के साथ ही दिमाग के रोगों के लिए भी लाभदायक है।

3- पीली सरसों

पीली सरसों, गुग्गल, लोबान, गौघृत को मिलाकर सूर्यास्त के समय उपले (कंडे) जलाकर उस पर ये सारी सामग्री डाल दें। नकारात्मकता दूर हो जाएगी।

4- धूपबत्ती

घर में पैसा नहीं टिकता हो तो रोज़ाना महाकाली के आगे एक धूपबत्ती लगाएं। हर शुक्रवार को काली के मंदिर में जाकर पूजा करें।

5- नीम के पत्ते

घर में सप्ताह में एक या दो बार नीम के पत्ते की धूनी जलाएं। इससे जहां एक और सभी तरह के जीवाणु नष्ट हो जाएंगे। वही वास्तुदोष भी समाप्त हो जाएगा।

6- षोडशांग धूप

अगर, तगर, कुष्ठ, शैलज, शर्करा, नागर, चंदन, इलायची, तज, नखनखी, मुशीर, जटामांसी, कर्पूर, ताली, सदलन और गुग्गल, ये सोलह तरह के धूप माने गए हैं। इनकी धूनी से आकस्मिक दुर्घटना नहीं होती है।

7- लोबान धूनी

लोबान को सुलगते हुए कंडे या अंगारे पर रख कर जलाया जाता है, लेकिन लोबान को जलाने के नियम होते हैं इसको जलाने से पारलौकिक शक्तियां आकर्षित होती है। इसलिए बिना विशेषज्ञ से पूछे इसे न जलाएं।

8- दशांग धूप

चंदन, कुष्ठ, नखल, राल, गुड़, शर्करा, नखगंध, जटामांसी, लघु और क्षौद्र सभी को समान मात्रा में मिलाकर जलाने से उत्तम धूप बनती है। इसे दशांग धूप कहते हैं। इससे घर में शांति रहती है।

9- गायत्री केसर

घर पर यदि किसी ने कुछ तंत्र कर रखा है तो जावित्री, गायत्री केसर लाकर उसे कूटकर मिला लें। इसके बाद उसमें उचित मात्रा में गुग्गल मिला लें। अब इस मिश्रण की धुप रोज़ाना शाम को दें। ऐसा 21 दिन तक करें।

पुराण में उल्लेख

'हेमाद्रि' ने धूप के कई मिश्रणों का उल्लेख किया है, यथा- अमृत, अनन्त, अक्षधूप, विजयधूप, प्राजापत्य, दस अंगों वाली धूप का भी वर्णन है।

'कृत्यकल्पतरु' ने 'विजय' नामक धूप के आठ अंगों का उल्लेख किया है।

'भविष्य पुराण' का कथन है कि विजय धूपों में श्रेष्ठ है, लेपों में चन्दन लेप सर्वश्रेष्ठ है, सुरभियों (गन्धों) में कुंकुम श्रेष्ठ है, पुष्पों में जाती तथा मीठी वस्तुओं में मोदक (लड्डू) सर्वोत्तम है। 'कृत्यकल्पतरु' ने इसका उदधृत किया है। धूप से मक्खियाँ एवं पिस्सू नष्ट हो जाते हैं।

सामान्य धुप बत्ती बनाने की सामग्री

गोबर 100 ग्राम

लकड़ी कोयला 125 ग्राम

नागरमोथा 125 ग्राम

लाल चन्दन 125 ग्राम

जटामासी 125 ग्राम

कपूर कांचली 100 ग्राम

राल। 250 ग्राम

घी 200 ग्राम

चावल की धोवन 200 ग्राम

चन्दन तेल या केवड़ा तेल 20 ml

षोडशांग धूप के लिये सामग्री

अगर, तगर, कुष्ठ, शैलज, शर्करा, नागरमाथा, चंदन, इलायची, तज, नखनखी, मुशीर, जटामांसी, कर्पूर, ताली, सदलन और गुग्गुल ये सोलह प्रकार की सामग्री मिलाकर बनाए।

दशांग धूप के लिये सामग्री

चंदन, कुष्ठ, नखल, राल, गुड़, शर्करा, नखगंध, जटामांसी, लघु और क्षौद्र सभी को समान मात्रा में मिलाकर जलाने से उत्तम धूप बनती है। इसे 'दशांग धूप' कहा जाता है।

इन सभी को मिलाकर आटे की तरह गूथ ले यहाँ ध्यान दें इसे गूथने में जितनी ज्यादा मेहनत करेंगे परिणाम उतने ही अच्छे मिलेंगे अन्यथा बाद में जलाने से पहले इसे आकार देने के लिये हाथों में जब रगड़ते है तो यह बत्ती बनने की जगह फैल भी सकती है। अच्छी तरह गूथने पर बाद में मनचाहे आकर की धूपबत्ती बना सकते है।

धूप जलाने के लाभ

गोमय और जड़ी बूटियों से बनी इस पूजा धुप के उपयोग से कई लाभ है।

यह पर्यावरण को शुद्ध कर प्रदूषणमुक्त करता है। इसके धुंए से वातावरण में फैले रोगाणु नष्ट होते है। धूप देने से मन, शरीर और घर में शांति की स्थापना होती है। रोग और शोक मिट जाते हैं। गृह कलह और आकस्मिक घटना-दुर्घटना नहीं होती। घर के भीतर व्याप्त सभी तरह की नकारात्मक ऊर्जा बाहर निकलकर घर का वास्तुदोष मिट जाता है। ग्रह-नक्षत्रों से होने वाले छिटपुट बुरे असर भी धूप देने से दूर हो जाते हैं। श्राद्ध पक्ष में 16 दिन ही दी जाने वाली धूप से पितृ तृप्त होकर मुक्त हो जाते हैं तथा पितृदोष का समाधान होकर पितृयज्ञ भी पूर्ण होता है।

प्रतिदिन घर, कार्यालय में धुप का उपयोग करने से गो शाला स्वावलम्बी बनेगी और उसकी रक्षा होगी।

17 सालों में रिकॉर्ड दूसरी सबसे ज्यादा बारिश
कई इलाकों में जलभराव; खुल गई तैयारियों की पोल

दिल्ली में भारी वर्षा के कारण कई सड़कों पर जलभराव हो गया है जिससे यातायात प्रभावित हुआ। सरकार ने जलभराव की समस्या को दूर करने का दावा किया था लेकिन वर्षा होते ही दावों की पोल खुल गई। मिंटो ब्रिज और आईटीओ जैसे संवेदनशील स्थानों पर पानी भर गया जिससे वर्षा होते ही जलभराव की समस्या फिर सामने आ गई है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों में शुक्रवार सुबह झमाझम बारिश हुई। इस कारण मई के महीने में एक दिन की 17 सालों (2009 से 2025) में यह दूसरी सर्वाधिक वर्षा दर्ज की गई।

इससे पूर्व 20 मई 2021 को 119.3 मिमी वर्षा दर्ज हुई थी। लोधी रोड पर 78.0 मिमी, पालम में 45.6 मिमी, रिज में 59.2 और आया नगर में 39.4 मिमी वर्षा रिकॉर्ड की गई है। इस बारिश और आंधी से तापमान में भी गिरावट दर्ज हुई है।

दिल्ली की कई सड़कों पर लबालब पानी

भारी बारिश से एक बार फिर से दिल्ली की कई सड़कों पर पानी भर गया। दिल्ली की नई भाजपा सरकार इस बार जलभराव की समस्या दूर करने का दावा कर रही थी। इसके लिए मुख्यमंत्री से लेकर मंत्री अधिकारियों के साथ बैठक व सड़कों पर उतरकर निरीक्षण कर रहे थे। लेकिन, वर्षा होते ही दिल्लीवासियों की परेशानी बढ़ गई। पिछले वर्ष की तरह जलभराव को लेकर संवेदनशील स्थानों पर पानी भर गया।

सरकार का दावा- जलभराव को लेकर पूरी है तैयारी

पिछले दिनों बैठक में अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया था कि जलभराव वाले अधिकांश स्थानों पर समस्या दूर कर दी गई है। अन्य स्थानों पर तेजी से काम चल रहा है। पिछले कई दिनों से नालों की सफाई का काम चल रहा है, लेकिन शुक्रवार सुबह की वर्षा से उनके दावों की पोल खुल गई। मिंटो ब्रिज, आईटीओ, किशनगंज अंडरपास सहित अन्य स्थानों पर पानी भरने से वाहनों की आवाहाजी प्रभावित हुई।

जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने किया जल निकासी काम का निरीक्षण

लोक निर्माण विभाग व जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने कई स्थानों पर जल निकासी के काम का निरीक्षण किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा बेमौसम रिकॉर्ड वर्षा से कई स्थानों पर कुछ मात्रा में पानी रूक गया है। सुबह साढ़े पांच बजे से ही कई स्थानों पर जाकर स्थिति का जायजा लिया।

जल मंत्री ने मिंटो ब्रिज पर जाकर देखा कि चारों पंप चल रहे थे और ऑपरेटर भी तत्पर था। एक पाइप फट गया था जिसको ठीक करने के लिए बोला गया है। मानसून को ध्यान में रखकर पीडब्ल्यूडी, नगर निगम, दिल्ली जल बोर्ड, एनडीएमसी और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग द्वारा नालों की सफाई की जा रही है।

भाजपा सरकार की मुख्य मंत्री, मंत्री, विधायक, महापौर एवं पार्षद ही नही सांसद तक सड़कों पर उतरे और त्वरित सफाई सुनिश्चित की : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की कल देर रात एवं आज सुबह दिल्ली ही नही आसपास 100 किलोमीटर क्षेत्र में भारी तूफान के साथ वर्षा हुई और उसके चलते पेड़ गिरने से एक दुखद हादसा हुआ जिससे एक परिवार के चार सदस्यों की आकस्मिक मृत्यु हो गई और दिल्ली में कुछ अन्य स्थानों पर पेड़ गिरने एवं जलभराव के समाचार सामने आये।

दिल्ली में जलबोर्ड एवं दिल्ली नगर निगम के सफाई कर्मियों ने बहुत सुबह से काम में लग कर दिल्ली की सड़कों से तुरंत पानी की निकासी एवं सफाई सुनिश्चित की।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की जहां जाफरपुर कलां में एक ही परिवार के चार लोगों की पेड़ गिरने से मृत्यु हुई है वहां भाजपा के क्षेत्रीय विधायक श्री संदीप सहरावत, पार्षद अमित खरखड़ी एवं शशी यादव ने सम्बंधित परिवार के लिए राहत एवं दुर्घटना में घायल परिवार के मुखिया के लिए मैडिकल राहत संगठित की।

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष ने कहा की अरविंद केजरीवाल सरकार के समय विपदा आने पर सत्ताधारी लोग गायब हो जाते थे पर कल रात आये तूफान के बाद दिल्ली की भाजपा सरकार की मुख्य मंत्री, मंत्री, विधायक, महापौर एवं पार्षद ही नही सांसद तक सड़कों पर उतरे और त्वरित सफाई सुनिश्चित की।

अपने शहर को जलभराव से बचाएं – अब नहीं तो कभी नहीं!

लेखकः डॉ. अंकुर शरण

बारिश आते ही जब शहर की सड़कों पर पानी भर जाता है, तो सोशल मीडिया पर तस्वीरें और शिकायतें वायरल हो जाती हैं—₹शहर डूब गया₹, ₹कोई सुनवाई नहीं₹, ₹सिस्टम फेल है₹। लेकिन क्या केवल शिकायत करने से कुछ बदलेगा? क्या हमने कभी यह सोचा कि इस समस्या का समाधान हम सबके हाथ में है?

मैं, आप और हम—सिस्टम का हिस्सा बनें

समस्या को समझना जरूरी है। जलभराव केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है; यह हम सबकी सामूहिक जवाबदेही है। अगर नालियों में प्लास्टिक, घरों से निकला कचरा या निर्माण मलबा फेंका जाए, तो सबसे पहले नाले चोक होते हैं और फिर वही पानी सड़कों पर बाढ़ बनकर लौट आता है। क्या आपने कभी यह देखा कि आपके घर के पास की नाली कब साफ हुई थी? क्या आपने अपने वार्ड पार्षद या नगर निगम को लिखित में शिकायत भेजी? अगर नहीं, तो अब समय है—बोलने का नहीं, करने का।

सड़क सुरक्षा और जलभराव – सीधा संबंध

जब सड़क पर जलभराव होता है, तो सबसे ज्यादा खतरा सड़क उपयोगकर्ताओं को होता है—खासकर दोपहिया वाहन चालकों और पैदल यात्रियों को। कई हादसे इसी कारण होते हैं कि गड्ढा पानी में छिपा होता है या वाहन फिसल जाते हैं। क्या आपने कभी सोचा कि अगला पीड़ित कोई अपना भी हो सकता है?

मैंने स्वयं एक ऑन-ग्राउंड सर्वे किया, जहाँ जलभराव की वजह से एक स्कूल वैन पलट गई। बच्चे घायल हो गए। वजह? पानी से भरी सड़क, कोई चेतावनी बोर्ड नहीं, और न ही किसी ने पहले इसकी जानकारी संबंधित विभाग को दी।

"Act Now – कल बहुत देर हो जाएगी"

हमने 'रोड सेफ्टी स्क्वॉड' के ज़रिए कई मुहिम चलाई हैं—लोगों को न केवल सड़क सुरक्षा के लिए जागरूक किया, बल्कि उनसे आग्रह किया कि वे समस्या की तस्वीरें, वीडियो और जानकारी ईमेल या लिखित रूप में नगर निगम, PWD या ट्रैफिक विभाग को भेजें। कई मामलों में लोगों की सक्रिय भागीदारी से तुरंत कार्यवाही भी हुई।

आप भी बनें 'लोकल रोड सेफ्टी चैम्पियन'

अपने मोहल्ले के नालों की नियमित सफाई की निगरानी करें

खराब ड्रेनेज, गड्ढे, अवरुद्ध सड़क आदि की जानकारी सही विभाग को दें

सोशल मीडिया पर शिकायत डालने से पहले संबंधित अधिकारी को ईमेल करें

सड़क किनारे प्लास्टिक या मलबा न फेंकने के लिए अपने आसपास के लोगों को प्रेरित करें

सड़क सुरक्षा से जुड़े नियमों का पालन स्वयं करें और दूसरों को भी प्रेरित करें

यह शहर हमारा है – और इसकी जिम्मेदारी भी हमारी है

हमें सिस्टम को कोसने की बजाय उसका सक्रिय हिस्सा बनना होगा। यह बदलाव तभी आएगा जब हम सब व्यक्तिगत स्तर पर ज़िम्मेदारी लेंगे। मैं, डॉ. अंकुर शरण, एक लॉजिस्टिक प्रोफेशनल होने के साथ-साथ, एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में यह संदेश देना चाहता हूँ कि—हर छोटी कार्रवाई, एक बड़ा बदलाव ला सकती है।

चलो मिलकर संकल्प लें—सड़कें भी साफ हों, शहर भी सुरक्षित हो और नागरिक भी जागरूक हों।

"कल मत सोचो, आज ही कार्रवाई करें। हम सबकी चुप्पी किसी और की जान न ले ले।"

roadsafetysquad@gmail.com

'देवी' योजना में मिली यह 400 बसें केन्द्र सरकार का दिल्ली वालों का दूसरा बड़ा तोहफा है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सचदेवा ने भाजपा की सीएम रेखा गुप्ता सरकार द्वारा केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान की उपस्थिती में दिल्ली में डी.टी.सी. बेड़े में 400 बसे जोड़ कर जनता के सेवा में समर्पित करने का स्वागत किया है।

उन्होने बताया की दिल्ली को केन्द्र सरकार से ₹फेमर₹ योजना के अंतर्गत मिली 1700 इलैक्ट्रिक बसों के बाद ₹देवी₹ योजना में मिली यह 400 बसें केन्द्र सरकार का दिल्ली वालों का दूसरा बड़ा तोहफा है

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की आम आदमी पार्टी की अरविंद केजरीवाल सरकार ने दस साल तक डी.टी.सी. के बस बेड़े में एक भी बस नही जोड़ी नतीजा डी.टी.सी. की सभी बसे अपना कानूनी फिटनेस जीवन पूरा ही नही उससे भी दो साल अधिक हो चुकी हैं और ईमानदारी से कहें तो इनमे लोगों को यात्रा करवाना एक मजबूरी है।

केजरीवाल सरकार की लापरवाही के चलते दिल्ली में बसों की कमी है पर हम इस कमी को दूर करने के लिए तेज़ी से काम कर रहे हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की सीएम रेखा गुप्ता सरकार एक लक्ष्य लेकर काम कर रही है और हम 2026 के अंत तक दिल्ली वालों को आवश्यकतानुसार 11000 बसों का सार्वजनिक परिवहन बेड़ा देने को प्रयासरत हैं।

भाजपा की चार इंजन की सरकार की सच्चाई सबके सामने है, पहली बारिश में 4 लोगों की दुखद मौत हो गई : सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली की पहली ही बारिश ने भाजपा के चारों इंजनों की पोल खोल कर रख दी। भाजपा सरकार के चारों इंजन खटारा साबित हुए और मिंटो रोड, आईटीओ, धौला कुंआ, दिल्ली एयरपोर्ट, ओल्ड राजेंद्र नगर समेत दिल्ली के तमाम इलाकों की सड़के जलमग्न हो गईं। सड़कों पर कई फीट पानी भर जाने से वहां चालकों को भारी मशक्कत का सामना करना पड़ा और लोगों को खासी परेशानी हुई। आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज, वरिष्ठ नेता व पंजाब प्रभारी मनीष सिसोदिया, सांसद संजय सिंह, नेता प्रतिपक्ष आतिशी व जैस्मीन शाह समेत अन्य नेताओं ने दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में हुए जलभराव की वीडियो को सोशल मीडिया एक्स पर साझा कर दिल्ली में फेल है चुकी भाजपा की चार इंजन की सरकार पर तीखा हमला बोला।

आम आदमी पार्टी ने सबको पर हुए जल भराव की वीडियो व फोटो साझा करते हुए कहा कि भाजपा की विपदा सरकार में अब नाले सड़कों पर बह रहे हैं। गुरुवार की रात हुई बारिश से सड़कें और गलियां जलमग्न हो गईं और कई मासूम लोगों की जान भी चली गई। देश की राजधानी दिल्ली को बर्बाद करने में भारतीय जनता पार्टी की विपदा सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

'आप' ने पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा के मंत्रालय पीडब्ल्यूडी ऑफिस के सामने से गुजर रही सड़क की वीडियो को साझा किया, जहां भारी जलभराव हुआ था। पार्टी ने कहा कि पीडब्ल्यूडी ऑफिस के सामने से गुजर रही पूरी सड़क पानी से भरी हुई है। अब डर इस बात का लग रहा है कि अभी तो बारिश का मौसम आया भी नहीं है और अभी इतनी बुरी स्थिति है तो बारिश के मौसम में क्या ही होगा? जब समय था तब तो विपदा सरकार ने कुछ काम किया नहीं, अब जब दिल्ली डूब रही है तो मंत्री फोटो खिंचवा रहे हैं

'दिल्ली की प्रमुख सड़कों पर हुए जलभराव से लोग परेशान'

मिंटो रोड, आईटीओ, करोलबाग मेट्रो स्टेशन, ओल्ड राजेंद्र नगर समेत तमाम इलाकों में जल भराव हो गया। सड़कें बृष के पानी से लबालब भर गईं। वाहनों के आवागमन में खासी परेशानी का सामना करना पड़ा। कई इलाकों में इतना पानी भर गया कि बड़े वाहनों के भी पहिए पानी में डूब गए। लोगों को घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया।

मूवी रिव्यू : हिट _ द थर्ड केस
फिल्म की कहानी आपको झकझोरकर रख देगी

रेटिंग: *** एंड हॉफ

मुख्य संवाददाता

इस हफ्ते रिलीज हुई साउथ स्टार नानी की फिल्म 'हिट द थर्ड केस' है, इस फिल्म में जबरदस्त सस्पेंस क्राइम के साथ थ्रिलर है। आपको दमदार कहानी के साथ ही जबरदस्त एक्शन सीक्वेंस है। फिल्म की कहानी और कई सीन आपको हिलाकर रख देंगे। अगर अगर आप पिछले दिनों हिट रही स्त्री 2, भूल भुलैया 3 जैसी एक्शन, थ्रिल, हॉरर, कॉमेडी देखने का प्लान बना रहे हैं तो आप

इस फिल्म को जरूर देखने जाए।

स्टोरी प्लॉट

फिल्म की कहानी आपको झकझोरकर रख देगी। इसमें डार्क वेबसाइट के बारे में दिखाया गया है, जो क्राइम की नई दुनिया है। इसमें जम्मू-कश्मीर की कहानी है, जिसमें लोग झूठी आजादी के नाम पर मासूम बच्चों तक का बेरहमी से कत्ल करने तक को तैयार हैं। कहानी खूनी खेल की है, जिसे मिटाने का काम एक मूडी और साइको पुलिस अफसर एसपी अर्जुन सरकार करता है। कहानी में कई कड़ियां हैं, जिसे खोजते-खोजते पूरी फिल्म खत्म हो जाती है। इसे आप वन मैन फिल्म कह सकते हैं। फिल्म का ट्रीटमेंट गजब का है। फिल्म शुरुआत से ही फ्रेम से आपको बांध लेती है। शुरुआत में आपको नानी जेल में दिखाई देते हैं लेकिन फिर अंत में जो होता है वो कमाल होता है। फिल्म के कुछ सीन्स को आप देखते रह जाएंगे इस फिल्म का एक्शन ज्यादा हाई लेवल का हैं। कुछ वक्त पहले तक हीरो सीन में आठ दस को मारता था लेकिन अब दर्शकों ऐसे सीस में मजा नहीं आता। बल्कि अब तो हीरो दर्जनों को मारता है और दर्शक ऐसे एक्शन सीक्वंस का मजा लेते है, ऐसे सीस इस में है

ओवर ऑल

फिल्म की कहानी ठीकठाक है, दमदार एक्टिंग के साथ बेहतरीन स्टोरी में फिट स्टार कास्ट और सोने पर सुहागा फिल्म का कसा हुआ क्लाइमैक्स दर्शको के लिए पैसा वसूल है।

मेरी नजर में फिल्म के कुछ सींस ऐसे है जिन्हें देख आप हिल जायेंगे। डायरेक्टर सैलेश कोलानू की खास तौर से तारीफ करनी होगी कि उन्होंने अपने बेहतरीन डायरेक्शन से फिल्म का क्लाइमैक्स ऐसा है आप दिल थामे रहेंगे और आपकी पलक तक नहीं झपकेगी और आगे क्या होगा यह जानने के लिए आपकी उत्सुकता बढ़ जाएगी कि आगे क्या होगा। एक-एक खुलासे, हाई एक्शन सीक्वेंस के बीच आपको खुश करने वाला बेहतरीन कैमियो है, मेरा दावा है हर सिंगल स्क्रीन सिनेमा में इस सीन पर दर्शको की खूब सीटियां बजेगी फिल्म में साउथ स्टार अदिवी शेष का असरदार कैमियो है। फिल्म का बैकग्राउंड स्कोर फिल्म की हर कड़ी को अगली कड़ी से जोड़ने का काम करता है और जानदार है।

क्यों देखे:

अगर आप एक्शन, सस्पेंस, हॉरर क्राइम थ्रिलर फिल्मों के शौकीन हैं तो आपके लिए नानी स्टारर यह फिल्म फुल पैसा वसूल है और हां कमजोर दिल के है तो जरा दिल थाम कर इस फिल्म को देखे।

मुख्य कलाकारः नानी, श्रीनिधि शेट्टी, सूर्या निवास और प्रतीक बब्बर,

डायरेक्टर : एस कोलानू, सेंसरः यूए,

फरीदाबाद : बरसात ने दिखाई सच्चाई, अब ज़रूरत है सख़्त कार्रवाई

विशेष रिपोर्ट | फरीदाबाद

2 मई 2025 को फरीदाबाद में महज़ 2-3 घंटे की बारिश से शहर के लगभग सभी प्रमुख अंडरपास – NHPC अंडरपास, मेवला महराजपुर अंडरपास, और Old अंडरपास – जलमग्न हो गए, जिससे न केवल यातायात बाधित हुआ, बल्कि आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

बारिश शुरू होते ही सड़कें तालाब में तब्दील हो गईं। जगह-जगह जलभराव ने ट्रैफिक को जाम कर दिया और वाहन चालकों को घंटों फंसे रहना पड़ा। हालांकि रोड सेफ्टी स्क्वाड और स्वेच्छा से कार्य कर रहे वॉलंटियर्स ने तत्परता दिखाते हुए अधिकारियों को सक्रिय किया, जिससे राहत कार्य तेज़ी से शुरू हुए।

ट्रैफिक अधिकारियों ने मोर्चा संभालते हुए जल निकासी कार्यों में हाथ बँटाया, जो सराहनीय तो है, परंतु इससे एक बड़ा सवाल भी खड़ा होता है – आखिर ये छोटी-छोटी लेकिन अहम समस्याएं समय रहते गंभीरता से क्यों नहीं ली जातीं?

क्या जल निकासी व्यवस्था की नियमित सफाई और मॉनिटरिंग इतनी कठिन है कि हर बार बारिश होने पर पूरे शहर को रुक जाना पड़ता है?

जनता का यह भी सवाल है कि मुख्य सड़कों और अंडरपासों से जलभराव हटाने की ज़िम्मेदारी किसकी है, और क्यों हर बार पुलिस को अपने मूल कार्यक्षेत्र से हटकर इन कार्यों में लगना पड़ता है?

अब समय आ गया है कि नगर निगम और संबंधित विभाग इस मुद्दे पर सख्त रुख अपनाएं। मुख्य सड़कों और अंडरपास की जल निकासी व्यवस्था की सम्पूर्ण सफाई होनी चाहिए और उसकी साप्ताहिक रिपोर्ट उच्चाधिकारियों के साथ साझा की जानी चाहिए।

फरीदाबाद जैसे विकासशील शहर में सड़क सुरक्षा और जल निकासी जैसे मूलभूत मुद्दों को नज़रअंदाज़ करना अब संभव नहीं। अगर अब भी कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले मानसून में हालात और भी गंभीर हो सकते हैं।

जातीय जनगणना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है

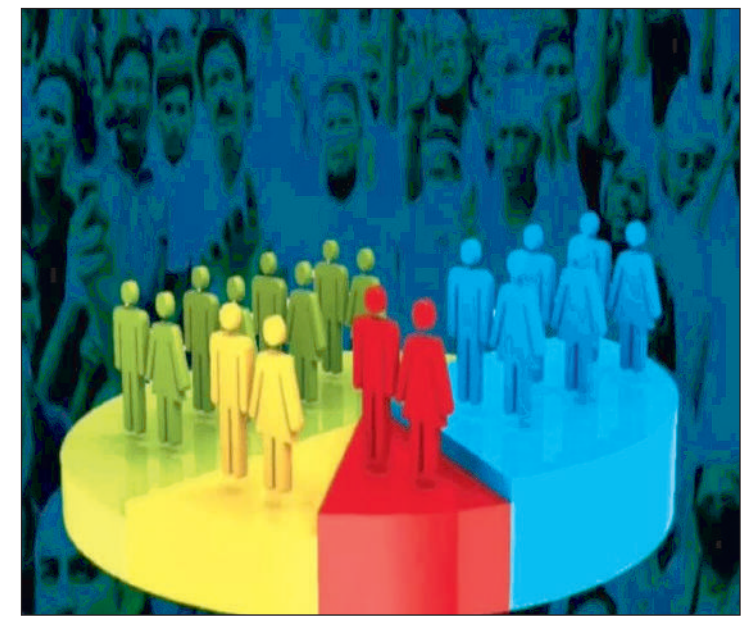

राहुल गांधी जी ने जातीय जनगणना की मांग की थी, और सरकार ने इस मांग को मान लिया है। यह कहना कि सरकार का निर्णय राहुल गांधी की मांग के कारण हुआ है, एक राजनीतिक व्याख्या हो सकती है।

यह तय करना मुश्किल है कि सरकार के निर्णय के पीछे कौन से कारण थे, लेकिन यह सच है कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी ने जातीय जनगणना की मांग को जोरदार तरीके से उठाया था।सरकार के निर्णय के फायदे और नुकसान दोनों हो सकते हैं, और इसका प्रभाव देश की राजनीति और समाज पर पड़ सकता है।

जातीय जनगणना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें देश की जनसंख्या के विभिन्न जातीय समूहों की संख्या और उनकी विशेषताओं का विवरण दर्ज किया जाता है। भारत में स्वतंत्रता के बाद पहली बार जातीय जनगणना करने का निर्णय लिया गया है, जिसके मुख्य बिंदु और फायदे निम्नलिखित हैं।जातीय जनगणना में विभिन्न जातीय समूहों की पहचान की जाएगी और उनकी संख्या का विवरण दर्ज किया जाएगा।जातीय जनगणना में विभिन्न जातीय समूहों के बारे में आँकड़ों का संग्रह किया जाएगा, जैसे कि उनकी संख्या, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य आदि।

जातीय जनगणना के आँकड़ों का उपयोग करके सरकार विभिन्न जातीय समूहों के लिए नीतियों और कार्यक्रमों का विकास कर सकती है।

जातीय जनगणना से जातीय समूहों की आवश्यकताओं की पहचान की जा सकती है और उनके लिए विशेष कार्यक्रमों का विकास किया जा सकता है।जातीय जनगणना के आँकड़ों का उपयोग करके शिक्षा और रोजगार में सुधार के लिए विशेष कार्यक्रमों का विकास किया जा सकता है।जातीय जनगणना के आँकड़ों का उपयोग करके स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए विशेष कार्यक्रमों का विकास किया जा सकता है।जातीय जनगणना से सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है और विभिन्न जातीय समूहों के बीच समानता को बढ़ावा दिया जा सकता है।

जातीय जनगणना में सरकार आम जन से विभिन्न प्रश्न पूछ सकती है, जिनमें से कुछ संभावित प्रश्न निम्नलिखित हो सकते

व्यक्ति का नाम और पता।
व्यक्ति की जाति और उपजाति।
व्यक्ति का धर्म।
व्यक्ति की आयु और लिंग।
व्यक्ति की शैक्षिक योग्यता और शिक्षा का स्तर व्यक्ति का रोजगार और व्यवसाय।
व्यक्ति की आय और आर्थिक स्थिति।
व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति और बीमारियों के बारे में जानकारी।
व्यक्ति का निवास स्थान और प्रवास के बारे में जानकारी।
व्यक्ति की मातृभाषा और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी।

इन प्रश्नों के अलावा, सरकार अन्य प्रश्न भी पूछ सकती है जो जातीय जनगणना के उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करेंगे। जातीय जनगणना के प्रश्नों का उद्देश्य आम जन की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति के बारे में जानकारी इकट्ठा करना होगा।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

डॉ. लॉजिस्टिक्स : विश्व व्यापार के उथल-पुथल में भारत का स्वर्णिम क्षण - वैश्विक मंच पर उभरती नई शक्ति

सुशांत भटनागर

जब वैश्विक महाशक्तियाँ टकरा रही हैं और पुराने व्यापारिक समीकरण टूट रहे हैं, तब एक नया विश्व व्यवस्था आकार ले रही है — और इस परिवर्तन के केंद्र में भारत अपने नेतृत्व के लिए तैयार खड़ा है।

अमेरिका और चीन के बीच तीव्र व्यापार युद्धों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को झकझोर दिया है, आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित किया है, और दशकों से स्थापित व्यापारिक मान्यताओं को चुनौती दी है। लेकिन इस उथल-पुथल के बीच भारत मात्र एक दर्शक नहीं, बल्कि स्थिरता, दृढ़ता और असीम संभावनाओं का प्रतीक बनकर उभरा है।

आज, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ निवेश के लिए सुरक्षित और भरोसेमंद स्थलों की तलाश में हैं — और उनका रुख तेजी से भारत की ओर हो रहा है। एक ऐसा भारत जो युवा ऊर्जा, लोकतांत्रिक मजबूती और दूरदर्शी सुधारों से सशक्त है।

सिलिकॉन वैली के गलियारों से लेकर टोक्यो के बोर्डरूम तक, एक सच्चाई तेजी से स्पष्ट हो रही है: भविष्य उन्हीं अर्थव्यवस्थाओं का है, जो भरोसे, व्यापकता और तीव्र गति का संयोजन प्रस्तुत कर सकें — और भारत इन तीनों कसौटियों पर खरा उतरता है।

'मेक इन इंडिया', पीएलआई योजनाओं और बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण जैसे ऐतिहासिक कदमों ने भारत में एक विनिर्माण और नवाचार क्रांति की नींव रखी है। हमारी

डिजिटल क्रांति, मजबूत स्टार्टअप इकोसिस्टम और बढ़ती उद्यमशीलता की भावना अब उभरती अर्थव्यवस्थाओं की परिभाषा को ही पुनर्परिभाषित कर रही है।

परंतु, प्रत्येक परिवर्तन की यात्रा अपने साथ चुनौतियाँ भी लाती है।

भारत की सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम इकाइयाँ — जो हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं — आपूर्ति संकट और लागत में वृद्धि जैसी समस्याओं से जूझ रही हैं। अवसंरचनात्मक कमियाँ, नौकरशाही अड़चनें और ऊर्जा मूल्य अस्थिरता हमारी तत्परता की परीक्षा ले रहे हैं।

लेकिन इतिहास साक्षी है: हर महान छलांग विपरीत परिस्थितियों से ही जन्म लेती है।अब समय छोटे-मोटे सुधारों का नहीं है।यह साहसिक सुधारों, दूरदर्शी निवेशों और अडिग क्रियान्वयन का समय है।

भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी भागीदारी को गति देनी होगी, ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी, और उन अत्याधुनिक तकनीकों में निवेश करना होगा जो आने वाले समय की औद्योगिक रूपरेखा तय करेंगी।

हमें अपने युवाओं को भविष्य के अनुरूप कौशल से लैस करना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि 'भारतीय ब्रांड' विश्व भर में गुणवत्ता, भरोसे और नवाचार का पर्याय बने।

विश्व व्यवस्था पुनर्गठित हो रही है। एक ही देश में केंद्रित विनिर्माण का युग समाप्त हो गया है। अब विश्व भारत की ओर देख रहा है — विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि आवश्यकता के रूप में।

यदि हम इस क्षण को साहस और संकल्प के साथ थाम लें, तो भारत एक विनिर्माण शक्ति, तकनीकी नेतृत्वकर्ता और वैश्विक व्यापार का भरोसेमंद स्तंभ बन सकता है।

यह केवल एक आर्थिक अवसर नहीं है; यह भारत के भाग्य को पुनः परिभाषित करने का आह्वान है।

परिवर्तन की हवाएँ तीव्र हैं — पर ये उन्हीं के पक्ष में होती हैं, जो उनमें साहसपूर्वक नाव चलाना जानते हैं।

समय आ गया है।

भारत का वैश्विक नेतृत्व से साक्षात्कार प्रारंभ हो चुका है।

सुशांत भटनागर एक लॉजिस्टिक्स और अंतरराष्ट्रीय व्यापार विशेषज्ञ हैं, जिन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापार संचालन का गहरा अनुभव प्राप्त है। वे एक प्रतिष्ठित लेखक और विचारक भी हैं, जो वैश्विक व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला और भारत की वैश्विक भूमिका जैसे विषयों पर नियमित लेखन करते हैं। उनके विश्लेषण और अनुभव नीति-निर्माताओं, उद्यमियों और व्यापार विशेषज्ञों को नई दिशा प्रदान करते हैं।

धनौली के दलित परिवारों को बेदखली नोटिस, उपेन्द्र सिंह के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी से की मुलाकात

वरिष्ठ भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह ने फतेहपुर सीकरी के सांसद राजकुमार चाहर से भी दूरभाष पर वार्ता कर पीड़ितों की सहायता हेतु आग्रह किया।

आगरा, संजय सागर सिंह। तहसीलदार सदर द्वारा आगरा के ग्राम धनौली में दलित समाज के लगभग 70 परिवारों को बेदखली के नोटिस भेजे जाने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। इस संबंध में पीड़ित परिवारों का एक प्रतिनिधिमंडल आज भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह के नेतृत्व में जिलाधिकारी अरविन्द मलप्पा बंगारी से मिला और उन्हें स्थिति से अवगत कराते हुए एक ज्ञापन सौंपा। उपेन्द्र सिंह ने बताया कि ये परिवार पिछले 50 वर्षों से अधिक समय से ग्राम धनौली में निवास कर रहे हैं। अचानक मिले बेदखली नोटिस से इनके बीच भय और असुरक्षा का माहौल बन गया है। उन्होंने जिलाधिकारी से हस्तक्षेप कर न्यायसंगत समाधान की मांग की। प्रतिनिधिमंडल की इस मुलाकात के दौरान फतेहपुर सीकरी के सांसद राजकुमार चाहर ने भी जिलाधिकारी से दूरभाष पर वार्ता कर पीड़ितों की सहायता हेतु आग्रह किया। इससे पूर्व, दो दिन पहले दर्जनों पीड़ितजन उत्तर प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री श्री असीम अरुण से भी मिलकर अपनी समस्या साझा कर चुके हैं। मंत्री श्री अरुण ने भी प्रशासन से वार्ता कर पीड़ितों को सहायता दिलाने का आश्वासन दिया था।जिलाधिकारी श्री बंगारी ने मामले की गंभीरता को समझते हुए पीड़ित परिवारों को उचित समाधान का भरोसा दिलाया। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल में लोकेश कुमार (प्रधान प्रतिनिधि), भगवान सिंह, रूप किशोर, मनीष, रमेश जाटव सहित कई अन्य लोग उपस्थित रहे।

कानपुर : महिला सफाई कर्मी के साथ मारपीट में सपा विधायक के देवर को भेजा जेल

सुनील बाजपेई, कानपुर। सफाई कर्मचारी के साथ मारपीट करना समाजवादी पार्टी की सीसामऊ से विधायक नसीम सोलंकी के देवर को बहुत महंगा पड़ा। रिपोर्ट दर्ज कराने के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर जेल का रास्ता दिखा दिया।

रिपोर्ट दर्ज करने वाली महिला कर्मचारी का आरोप है कि विधायक के देवर ने उसे गिराकर पीटा। उसके साथ गाली-गलौज की। इसके बाद धक्का मारकर भगा दिया।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक जाजमऊ थाना क्षेत्र के डिफेंस कॉलोनी में पीड़िता कर्मचारी विधायक के घर के सामने कचरा उठा रही थी। इसी बीच विधायक का देवर आया और महिला को पीटने लगा। दर्ज कराई गई रिपोर्ट के मुताबिक कैंट के लाल कुर्ती तोपखाना निवासी रूपरानी नगर निगम में महिला सफाईकर्मी हैं। वह जाजमऊ केडीए बाजार की बीट पर तैनात हैं। घटना केसमय वह डिफेन्स कॉलोनी में पूर्व विधायक इरफान सोलंकी के घर के बाद कूड़ा उठा रही थीं। तभी सपा विधायक नसीम सोलंकी का देवर इमरान सोलंकी उर्फ बबलू सोलंकी वहां पहुंचा। महिला के अनुसार इमरान आते ही गाली देने लगे। जब उसने कहा कि भइया गाली मत दीजिए। तब इमरान ने कहा कि जबान लड़ाती हो। इतना कहते हुए गाली-गलौज करते हुए मारपीट करने लगे। धक्का मारकर भगा दिया। इसके बाद महिला ने जाजमऊ थाने में शिकायत की। इसके बाद पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करके आरोपियों को गिरफ्तार जेल भेज दिया।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस 3 मई 2025-वर्तमान डिजिटल युग में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ प्रेस के सभी प्लेटफॉर्म्स की महत्वपूर्ण भूमिका

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर वर्तमान डिजिटल युग में मीडिया के अनेकों प्लेटफॉर्म्स आ जाने के कारण न केवल लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया की जवाबदेही बढ़ गई है बल्कि दुनियाँ के सरकारों की भी जवाब दे गई बढ़ गई है क्योंकि प्रेस की स्वतंत्रता के साथ -साथ देश की एकता अखंडता सुरक्षा व सुरक्षा से जुड़े सीक्रेट्स को बनाए रखना होता है, ताकि विदेशी हमलों से सुरक्षा की जा सके इसलिए हमने देखे कि पिछले दिनों भारत सरकार ने प्रेस के लिए गाइडलाइंस भी जारी किए थे।आज हम प्रेस से जुड़े मुद्दे इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि ३ मई २०२५ को हम विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस २०२५ मना रहे हैं, इस दिन दुनियाँ भर में प्रेस की स्वतंत्रता का मूल्यांकन किया जाता है,मीडिया को उसकी स्वतंत्रता पर हमले से बचाया जाता है, अपने पेशे के दौरान जान कुर्बान करने वाले मीडिया साथियों को श्रद्धांजलि दी जाती है। चूँकि वर्तमान डिजिटल युग में इलेक्ट्रॉनिक सोशल व प्रिंट मीडिया में पारदर्शिता, स्वतंत्रता, निष्पक्षता व ईमानदारी से काम करना समय की मांग है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस ३ मई २०२५, वर्तमान डिजिटल युग में लोकतंत्र के चौथेस्तंभ प्रेस के सभी प्लेटफॉर्म्स की महत्वपूर्ण भूमिका।

साथियों बात अगर हम लोकतंत्र के चौथे स्तंभ प्रेस की स्वतंत्रता की करें तो, लोकतंत्र के चार स्तंभ होते हैं यह हम सब जानते हैं। न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायका और प्रेस/मीडिया। लोकतंत्र के इस चौथे स्तंभ का विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस ३ मई २०२५ को मनाया जा रहा है।

प्रेस/मीडिया की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने, आम लोगों की आवाज़ प्रशासन तक पहुंचाने की है जो आज के युग में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।हालांकि किसी भी देश की सरकारें, शासन-प्रशासन अपने कर्तव्यों अधिकारों का पालन संविधान, कानून, नियमों, विनियमों की प्रक्रिया के दायरे में ही करते हैं तथा देश के उद्योगपति, व्यवसाई नागरिक भी अपना दैन्य जीवनकार्य शासन द्वारा बनाए नियमों की सीमाओं में ही करते हैं। परंतु कुछ इसके अपवाद भी हो सकते हैं जो इन कानूनों, मर्यादाओं को ताक पर रखकर अपने कर्तव्यों की अनदेखी कर अनधिकृत रूप से कार्यों को दिशा देते हैं। बस! यही से प्रेस/मीडिया का कार्य शुरू होता है जो इतनीं जोख़िम भरी सेवा होती है जो यह हम सब समझ सकते हैं। भारतीय कानूनी प्रणाली द्वारा यह स्पष्ट रूप से संरक्षित नहीं किया गया है लेकिन यह संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (क) के तहत संरक्षित है जिसमें कहा गया है कि सभी नागरिकों को वा एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार होगा। हालांकि प्रेस की स्वतंत्रता भी असीमित नहीं होती है। कानून इस अधिकार के प्रयोग पर केवल उन प्रतिबंधों को लागू करता है जो अनुच्छेद 19 (२) मौलिक अधिकारों पर प्रतिबंध के दायरे में आते हैं। वह हैं, भारत की संप्रभुता और अखंडता से संबंधित मामले, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध, सार्वजनिक व्यवस्था शालीनता या नैतिकता या न्यायालय की अवमानना के संबंध में मानहानि या अपराध को प्रोत्साहन।

साथियों बात अगर हम प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने के उद्देश्यों व महत्व की करें तो,विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस २०२५ के उद्देश्य (1) विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस, ३ मई, २०२५ को मीडिया स्वतंत्रता के मूल सिद्धांतों को बढ़ावा देने, दुनिया भर में मीडिया की स्वतंत्रता की स्थिति का आकलन करने और पत्रकारों और मीडिया पेशेवरों को उनके काम पर हमलों से बचाने पर ध्यान केंद्रित करेगा। (२) यह पारदर्शिता, जवाबदेही और सार्वजनिक रूप से सूचित चर्चा के लिए स्वतंत्र प्रेस के महत्व को रेखांकित करने का दिन है जो किसी भी लोकतांत्रिक समाज की तीन प्रमुख आधारशिलाएँ हैं। (३) पत्रकारों के सामने आने वाले खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जाएगी, जिसमें सेंसरशिप, धमकी, उत्पीड़न, कारावास और हिंसा शामिल हैं। (4) ऐसी चुनौतियों को उजागर करके, विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस सरकारों संस्थानों और व्यक्तियों को प्रेस के लिए एक स्वतंत्र और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। (5) यह उन पत्रकारों को सम्मानित करने के लिए भी एक दिन है जो कठिन और खतरनाक परिस्थितियों में रिपोर्टिंग करना जारी रखते हैं। (6) यह नैतिक पत्रकारिता, शांति और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका और गलत सूचना और भ्रामक सूचनाओं का मुकाबला करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है, पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। (7) विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मीडिया संगठनों, नागरिक समाज और प्रेस स्वतंत्रता के लिए अंतरराष्ट्रीय निकायों के बीच वैश्विक एकजुटता और सहयोग को मजबूत करता है। अंत में, यह सार्वजनिक हित के रूप में स्वतंत्र पत्रकारिता के लिए सभी क्षेत्रों से समर्थन और सरकारों से जनता के जानने के अधिकार की रक्षा करने का आह्वान करता है विश्व प्रेस m स्वतंत्रता दिवस २०२५ का महत्वपूर्ण महत्व--(1) ३ मई, २०२५ को, दुनियाँ विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस को एक महत्वपूर्ण दिन के रूप में मनाएगी, क्योंकि यह लोकतंत्र के निर्माण के साथ-साथ मानवा धिकारों की सुरक्षा में एक स्वतंत्र और स्वतंत्र प्रेस की भूमिका को प्रमाणित करता है। (२) यह एक गंभीर अनुस्मारक है कि प्रेस की स्वतंत्रता एक विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि एक मानव अधिकार है जो नागरिकों को सूचित करता है, उन्हें नागरिक जीवन में शामिल करता है और सत्ता में बैठे लोगों को जवाबदेह बनाता है। (३) इसका उद्देश्य पत्रकारों के सामने आने वाले विभिन्न खतरों और चुनौतियों जैसे कि सेंसरशिप, धमकी, उत्पीड़न और यहां तक कि हिंसा की ओर वैश्विक ध्यान आकर्षित करना है। यह ऐसी परिस्थितियाँ लाता है जो मीडिया पेशेवरों के लिए व्यापक सुरक्षा और संरक्षा की माँग करती हैं ताकि वे बढ़ती संख्यामें मानवाधिकार-आधारित जुड़ाव के हित के क्षेत्र में आ सकें। (4) यह गलत सूचना से लड़ने और नैतिक पत्रकारिता का समर्थन करने की माँग करता है जो सूचना देने के लिए है न कि गुमराह करने के लिए। (5) विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस उन पत्रकारों की स्मृति को अमर बनाता है

जिन्होंने सत्य की खोज में अपनी अंतिम कीमत चुकाई। (6) यह मीडिया बहुलवाद, पारदर्शिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रति सरकारों, मीडिया संस्थानों और नागरिक समाज के बीच स्थायी संवाद को बढ़ावा देता है। (7) तेजी से बदलते डिजिटल परिदृश्य में, यह दिन हमें सार्वजनिक विश्वास को बढ़ावा देने के लिए विश्वसनीय और स्वतंत्र पत्रकारिता के महत्व के बारे में जागरूक बनाता है। (8) यह अंततः इस बात पर जोर देता है कि प्रेस की स्वतंत्रता न्याय, विकास और दुनिया भर में लोकतांत्रिक मूल्यों के रखरखाव के लिए महत्वपूर्ण है।

साथियों बात अगर हम ३ मई २०२५ को प्रेस स्वतंत्रता दिवस के थीम की करें तो, हर साल ३ मई को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। यह दिन न केवल पत्रकारों की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों की रक्षा की याद दिलाता है, बल्कि यह मीडिया के मूलभूत सिद्धांतों की पुनः पुष्टि करने का एक अवसर भी है। एक स्वतंत्र प्रेस किसी भी लोकतंत्र की आत्मा होता है, और जब यह स्वतंत्रता खतरे में होती है, तो पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर हो जाती है। २०२५ में यह दिन और भी खास है क्योंकि इस बार की थीम सीधे भविष्य की पत्रकारिता से जुड़ी है- "रिपोर्टिंग इन द ब्रेव न्यू वर्ल्ड-द इम्पैक्ट ऑफ़ आर्टिफिशल इंटेलीजेंस ऑन प्रेस फ्रीडम एंड द मीडिया", यानी "बहादुर नई दुनिया में रिपोर्टिंग - प्रेस स्वतंत्रता और मीडिया पर कृत्रिम बुद्धिमता का प्रभाव"। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस- वरदान या चुनौती? एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमता आज मीडिया की दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है। समाचार लेखन से लेकर वीडियो संपादन, ऑडियो ट्रांसक्रिप्शन, डाटा एनालिसिस और भाषाओं के बीच अनुवाद, सब कुछ एआई की मदद से पहले से अधिक कुशल, तेज़ और विस्तारशील हो गया है।

एआई के लाभ:जांच-पड़ताल आधारित पत्रकारिता को अधिक गहराई और गतिसमाचारों का मल्टीलिंगुअल प्रसारण फेक्ट-चेकिंग में वास्तविक समय सहयोगडाटा विज़ुअलाइजेशन और एनालिटिक्स के ज़रिए बेहतर रिपोर्टिंग लेकिन हर तकनीकी क्रांति की तरह एआई के साथ भी जोख़िम है जो पत्रकारिता की स्वतंत्रता को प्रभावित कर सकते हैं, जैसे, डीपफेक तकनीक से गलत जानकारियों का प्रसार, मशीन आधारित सेंसरशिप और बायस्ड कंटेंट मॉडरेशन एआई सर्वेलेंस टूल्स के ज़रिए पत्रकारों की निजता का उल्लंघन, ऑटो- जेनरेटेड न्यूज़ के कारण पत्रकारों की रोजगार सुरक्षा पर ख़तरा, इसलिए इस बार की थीम का उद्देश्य है: एआई के इन दोनों पहलुओं की गंभीरता से चर्चा करना और यह सुनिश्चित करना कि यह तकनीक लोकतंत्र और प्रेस की स्वतंत्रता को कमजोर करने की बजाय, उसे सशक्त बनाए।

साथियों बात अगर हमविश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने की करें तो, यह दिन क्यों मनाया जाता है? विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस की शुरुआत 1993 में यूनेस्को द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य है:पत्रकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सुरक्षा प्रदान करनाउन पत्रकारों को सम्मान देना जो सच के लिए अपनी जान जोख़िम में डालते हैं, दुनियाभर में मीडिया की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना इस दिन की प्रेरणा 'विंडहोक डिक्लेरेशन' से आई थी, जिसे 1991 में नामीबिया में अपनाया गया था और जिसमें एक स्वतंत्र और विविधतापूर्ण प्रेस की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। २०२५ में जब हम प्रेस की स्वतंत्रता की बात करते हैं, तो तकनीक के साथ इसका गहरा जुड़ाव दिखता है।आज का पत्रकार न केवल कलम और कैमरे से लैस है, बल्कि उसके पास एआई आधारित टूल्स भी हैं जो उसके काम को नई ऊंचाइयों पर ले जाते हैं।परंतु जब एआई के ज़रिए ऑटोमेटेड न्यूज़ जनरेशन होता है, तब यह सवाल उठता है- क्या यह स्वतंत्र पत्रकारिता है या कोड से संचालित सूचना? क्या हर बार सच दिखाया जा रहा है या एआई एल्गोरिथ्म के अनुसार तैयार की गई 'सुविधाजनक सच्चाई' पेश की जा रही है?इन मुद्दों पर विश्व स्तर पर विमर्श आवश्यक है, ताकि तकनीक लोकतंत्र की रीढ़, पत्रकारिता, को कमजोर न करे।

साथियों बात अगर हम प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने के कार्यक्रमों की करें तो, विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस हर साल ३ मई को मनाया जाता है। यह दिन प्रेस की स्वतंत्रता और महत्व को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। भारत में इस दिन को मनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं, जैसे:- सेमिनार और कार्यशालाएं: प्रेस की स्वतंत्रता और इसके महत्व पर चर्चा करने के लिए।- पुरस्कार समारोह: पत्रकारिता में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार प्रदान करने के लिए।- जागरूकता अभियान: लोगों को प्रेस की स्वतंत्रता के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए।- मीडिया संगठनों द्वारा विशेष कार्यक्रम: प्रेस की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने और इसके महत्व को उजागर करने के लिए इन कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रेस की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना और इसके महत्व को उजागर कर

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसकाविश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस ३ मई २०२५-वर्तमान डिजिटल युग में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ प्रेस के सभी प्लेटफॉर्म्स की महत्वपूर्ण भूमिका सरकारों की जवाबदेही सुनिश्चित करने, आम लोगों की आवाज़ प्रशासन तक पहुंचने में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिकावर्तमान डिजिटल युग में इलेक्ट्रॉनिक, सोशल,प्रिंट मीडिया में पारदर्शिता,स्वतंत्रता,निष्पक्षता व ईमानदारी से काम करना समय की मांग हैं।

टोयोटा इनोवा का एक्सक्लूसिव एडिशन लॉन्च; हाइब्रिड इंजन, पैनोरमिक सनरूफ और एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम फीचर्स से लैस

परिवहन विशेष न्यूज

टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस एक्सक्लूसिव एडिशन को भारत में 32.58 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। यह ZX (O) Hybrid वेरिएंट से 1.24 लाख रुपये सस्ती है। इसे कई नए बेहतरीन फीचर्स से लैस किया गया है जिसमें सिल्वर फ्रंट और रियर फॉक्स स्किड प्लेट व्हील आर्च क्लैडिंग पर सिल्वर तत्व और बाहरी रियरव्यू मिरर (ORVM) पर क्रोम गार्निश जैसी चीजें है।

नई दिल्ली। Toyota Innova Hycross का एक्सक्लूसिव एडिशन भारत में लॉन्च किया गया है। यह पूरी तरह से लोडेड ZX(O) हाइब्रिड वैरिएंट पर ही बेस्ड है, लेकिन इसकी कीमत उससे कम है। इसकी बिक्री जुलाई 2025 से शुरू की जाएगी। आइए जानते हैं कि Toyota Innova Hycross Exclusive Edition को किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

क्या मिला नया?

Toyota Innova Hycross एक्सक्लूसिव एडिशन को केवल दो कलर ऑप्शन में लॉन्च किया गया है, जो सुपर व्हाइट और पर्ल व्हाइट है। इसमें सीमित-रन वाले वेरिएंट में स्टैंडर्ड ट्रिम में मिलने वाले फीचर्स के मुकाबले अलग सुविधाएं दी गई हैं।

ऑल ब्लैक रूफ

कॉन्ट्रैक्टिक एलिमेंट के साथ ब्लैग ग्रिल

18 इंच के ब्लैक अलॉय व्हील

बोनट पर ब्लैक कलर की इनोवा लिखा

सिल्वर फ्रंट और रियर फॉक्स स्किड प्लेट

व्हील आर्च क्लैडिंग पर सिल्वर तत्व

बाहरी रियरव्यू मिरर (ORVM) पर क्रोम गार्निश

टेलगेट पर 'एक्सक्लूसिव' बैज

बूट लिड पर क्रोम गार्निश

इसके साथ ही इसमें डुअल-टोन इंटीरियर के साथ ही नया वायरलेस फोन चार्जर, फुटवेल लाइटिंग और एयर प्यूरीफायर दिया गया है। इसे इनोवा के सभी मॉडल में पेश नहीं किया गया है। वहीं, इसमें मिलने बाकी फीचर्स इनोवा हाइक्रॉस के ZX(O) हाइब्रिड वेरिएंट जैसा ही मिलते हैं।

फीचर्स

Toyota Innova Hycross Exclusive Edition में 10.1 इंच की टचस्क्रीन, 7 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, रियर वेंट्स के साथ डुअल-जोन ऑटो AC, मेमोरी और वेंटिलेशन फंक्शन के साथ 8-वे पावर्ड फ्रंट सीटें दी गई है। इसमें पावर्ड 2nd रो ओटोमन सीटें, पैनोरमिक सनरूफ और 9-स्पीकर JBL साउंड सिस्टम भी दिया गया है।

सेफ्टी फीचर्स

इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग, 60-डिग्री कैमरा, एक टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS), और एक ऑटो-डिमिंग इनसाइड रियरव्यू मिरर (IRVM) दिया गया है। इसके साथ ही ADAS सूट के लेन कीप असिस्ट और अडेप्टिव क्रूज कंट्रोल सेफ्टी फीचर दिया गया है।

इंजन

इसे हाइब्रिड पावरट्रेन के साथ लेकर आया गया है। इसमें 2-लीटर स्ट्रॉन्ग-हाइब्रिड पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 186 PS की पावर और 188 Nm का टॉर्क जनरेट करता है और इलेक्ट्रिक मोटर के साथ 206 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। कंपनी इसको लेकर दावा करती है कि यह 23.24 kmpl तक का माइलेज देती है।

कीमत

Toyota Innova Hycross Exclusive Edition को भारत में 32.58 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। यह ZX (O) Hybrid (कीमत 31.34 लाख रुपये) वेरिएंट से 1.24 लाख रुपये सस्ती है। भारत में इसका मुकाबला Kia Carens, Maruti XL6, Maruti Ertiga और Toyota Rumion से देखने के लिए मिलता है।

क्या एक दिन में 2 बार कट सकता है ट्रैफिक चालान? इसको लेकर क्या है यातायात नियम

परिवहन विशेष न्यूज

क्या आप भी ऐसा सोच रहे हैं कि अगर एक दिन में एक बार ट्रैफिक चालान कट जाए तो फिर दोबारा चालान नहीं कट सकता है। अगर आप ऐसा सोच रहे हैं तो आप गलत है। हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि एक दिन में कितनी बार किसी का ट्रैफिक चालान कट सकता है। आइए इसके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत सरकार ने सड़क पर चलने के लिए कुछ जरूरी नियम बनाए हैं। इनका सभी को पालन करना बेहद जरूरी है। इन नियमों का पालन को उन लोगों को ज्यादा जरूरी है, जो मोटर वाहन से सड़कों पर चलते हैं। अगर आप इन ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करते हैं, तो आपको मोटा जुर्माना भरना पड़ सकता है। आमतौर पर लोगों का मानना है कि अगर एक बार एक दिन में वाहन का चालान हो जाए, तो फिर दिन भर चालान नहीं होता है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

क्या है नियम?

अगर एक दिन में एक चालान के नियमों की बात करें को यह कुछ परिस्थितियों में सही है। मोटर व्हीकल एक्ट के तहत कुछ नियमों को तोड़ने पर सिर्फ दिन में एक ही चालान हो सकता है। इसमें यह भी जरूरी है कि एक नियम उल्लंघन पर ही चालान नहीं हो सकता है। इसे आप इस तरह से भी समझ सकते हैं, मान लीजिए आपने किसी नियम का उल्लंघन किया और कुछ देर बाद उसी नियम का फिर से उल्लंघन करते हुए पाए जाते हैं, तो चालान नहीं कटेगा। हालांकि, यह सभी नियमों के लिए नहीं है और कुछ ही नियमों को तोड़ने पर ऐसा होता है, लेकिन ऐसे नियम है जिनका पालन नहीं कर दिन भर में कई बार आपका चालान काटा जा सकता है। कुल मिलाकर यह अलग-अलग नियमों और उनको तोड़ने पर निर्भर करता है। उनका एक दिन में फिर से चालान हो सकता है।

इन गलतियों पर दिन भर में कई बार कट सकता है चालान

अगर आप ओवर स्पीडिंग कर रहे हैं और आपका चालान काटा गया है तो फिर दिन में दूसरी या तीसरी बार इस नियम को तोड़ने पर आपका चालान काटा जा सकता है।

इसके साथ ही अगर आप कार चला रहे हैं और आपने सीट बेल्ट नहीं पहना है। इसको लेकर दिन में एक बार चालान कट चुका है, लेकिन अगर फिर से आप ऐसा करते हुए पाए जाते हैं, तो आपका फिर से चालान काटा जा सकता है। यहां पर एक वजह यह भी हो सकती है कि जानबूझकर सीट बेल्ट नहीं पहना गया है।

अगर आपका बिना हेलमेट के बाइक चलाने के दौरान ट्रैफिक चालान कट गया है। इसपर फिर से उसी दिन आपका दोबारा चालान नहीं हो सकता है। इसकी वजह ये है कि एक बार घर से निकल गए हैं, तो उसे सुधारा नहीं जा सकता है।

कार का AC कितने टन का होता है? गर्मियों में केबिन को कैसे रखता है कूल-कूल

कार एसी कूलिंग गाइड हाल के समय में आने वाली सभी कारों में AC फीचर मिलता है। यह कार के केबिन को गर्मी में ठंडा और ठंडी में गर्म रखने का काम करता है। यह सिस्टम रेफ्रिजरेंट कंप्रेसर और इवेपोरेटर जैसे हिस्सों की मदद से काम करता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि कार का एयर कंडीशनर कितने टन का होता है?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हाल के समय में कारों में एयर कंडीशनिंग सिस्टम एक जरूरी फीचर हो गया है। वर्तमान में आने वाली सभी गाड़ियों में यह फीचर दिया जाता है, जो गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों में आरामदायक ड्राइविंग अनुभव देता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि गर्मी के मौसम में आपकी कार को ठंडा रखने वाला AC कितने टन का होता है और यह कैसे काम करता है? हम यहां पर आपको इन सवालों का जवाब विस्तार में दे रहे हैं।

AC में टन का मतलब क्या है?

एयर कंडीशनर की कैपेसिटी को मापने के लिए टन शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। एसी में टन का मतलब है कि वह कैपेसिटी जिसमें 24 घंटे में 2,204 पाउंड बर्फ पूरी तरह पिघल जाए। इसे एनर्जी के रूप में देखें तो टन लगभग 3.52 किलोवाट के बराबर होता है। घर में इस्तेमाल होने वाली एसी में 12,000 ब्रिटिश थर्मल यूनिट (BTU) को 1 टन माना जाता है; यानी 1.5 टन का एसी 18,000 BTU और 2 टन का एसी 24,000 BTU की कैपेसिटी रखता है।

कार में AC की कैपेसिटी

कारों में AC की कैपेसिटी वाहन के आकार और प्रकार पर निर्भर करती है:

हैचबैक और सेडान: इनमें सिंगल कूलिंग प्वाइंट सिस्टम होता है, जिसकी कैपेसिटी 1 से 1.2 टन तक होती है।

कॉम्पैक्ट SUV: इनमें भी सिंगल कूलिंग प्वाइंट सिस्टम दिया जाता है, लेकिन इसकी कैपेसिटी 1.3 से 1.4 टन तक हो सकती है।

बड़ी SUV और MPV: इनमें डुअल कूलिंग प्वाइंट सिस्टम मिलता है, जिसकी कैपेसिटी 1.4 से 1.5 टन तक होती है।

कार का AC कैसे काम करता है?

कार में मिलने वाला एसी दो मोड में काम करता है, जो कूलिंग और हीटिंग है।

1. कूलिंग मोड

रेफ्रिजरेंट का कंप्रेसर: कंप्रेसर रेफ्रिजरेंट गैस को हाई प्रेशर और तापमान पर कंप्रेस करता है।

कंडेनसर में ठंडा करना: यह गर्म हवा को कंडेनसर में प्रवेश करती है, जहां पर यह ठंडी होकर लिक्विड में बदल जाती है।

एक्सपेंशन वाल्व से गुजरना: यह लिक्विड रेफ्रिजरेंट एक्सपेंशन वाल्व से होकर गुजरता है, जिससे इसका दबाव कम हो जाता है।

इवेपोरेटर में वाष्पीकरण: कम प्रेशर वाला रेफ्रिजरेंट इवेपोरेटर में प्रवेश करता है, जहां पर यह वाष्पीकृत होकर केबिन की गर्मी को अवशोषित करता है, जिसकी वजह से केबिन ठंडा होता रहता है।

2. हीटिंग मोड

इंजन की गर्मी का इस्तेमाल: इंजन से निकलने वाली गर्मी को कूलेंट में ट्रांसफर किया जाता है।

हीटर कोर में प्रवाह: गर्मी कूलेंट हीटर कोर से होकर गुजरता है, जिससे हवा गर्म होती है।

केबिन में गर्म हवा का प्रवाह: यह गर्म हवा ही वेंट्स के जरिए केबिन में जाती है, जिससे कार का तापमान बढ़ता रहता है।

कार का एसी सिस्टम थोड़ा तकनीकी जरूर होता है, लेकिन इसका काम बहुत आसान और कारगर होता है।

इस तारीख को लॉन्च होगी नई एमजी विंडसर प्रो; बड़ी बैटरी, नया प्रीमियम केबिन समेत मिलेंगे प्रो फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

एमजी विंडसर का नया वेरिएंट भारत में लॉन्च होने वाली है। इसका नाम MG Windsor PRO होगा। इसमें मौजूदा मॉडल से ज्यादा बेहतरीन फीचर्स मिलेंगे जिसमें एडवांस तकनीक बेहतर सुरक्षा प्रीमियम इंटीरियर सुविधा स्टाइल और नया बैटरी पैक तक शामिल है। भारत में MG Windsor के लॉन्च होने से 6 महीने में ही यह सबसे ज्यादा बिकने वाली इलेक्ट्रिक कार बन गई है।

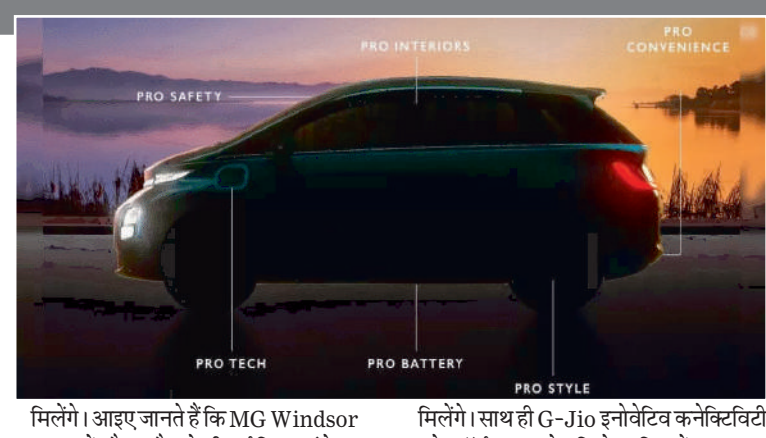

नई दिल्ली। JSW MG Motor India भारत में अपने पोर्टफोलियों को बढ़ाने जा रही है। कंपनी जल्द ही नई MG Windsor को भारत में लॉन्च करने वाली है, जो भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली इलेक्ट्रिक कार है। कंपनी इसे कई बड़े अपग्रेड देने वाली है, जिसे यह MG Windsor PRO के नाम से लॉन्च करेगी। कंपनी की तरफ से इसकी पुष्टि भी कर दी गई है। नई Windsor PRO में कई बड़े बदलाव देखने के लिए मिलेंगे। इसमें बड़ी बैटरी के साथ ही नए ADAS फीचर्स भी देखने के लिए मिलेंगे। आइए जानते हैं कि MG Windsor PRO में कौन-कौन से फीचर्स दिए जाएंगे?

क्या मिलेगा नया?

MG Windsor PRO को लोगों की बढ़ती अपेक्षाओं का ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। इसके नए मॉडल में एडवांस तकनीक, बेहतर सुरक्षा, प्रीमियम इंटीरियर, सुविधा, स्टाइल और नया बैटरी पैक दिए जाएगा।

Windsor PRO में ADAS के नए फीचर्स लेन डिपार्चर वॉर्निंग, ऑटोनॉमस क्रूज़ कंट्रोल, और ऑटोमैटिक इमरजेंसी ब्रेकिंग मिलेंगे। साथ ही G-Jio इनोवेटिव कनेक्टिविटी प्लेटफॉर्म का अपग्रेड मिलेगा, जिसमें 100+ AI-पावर्ड वॉयस कमांड्स और रियल-टाइम नेविगेशन होगा।

इसमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए 6 एयरबैग्स, ABS, EBD, 360-डिग्री कैमरा, और ESC जैसे फीचर्स मिलेंगे। इसके अलावा, बेहतर टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS) और हिल-होल्ड असिस्ट भी शामिल हो सकते हैं।

इसमें पहले से प्रीमियम केबिन दिया जा सकता है। इसमें वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स, बेहतर लेदरेट अपहोल्स्ट्री, और संभवतः अपग्रेडेड 15.6-इंच ग्रैंडव्यू टच डिस्प्ले होगा। वहीं, रियर सीट्स का रिक्लाइन फीचर और 604-लीटर बूट स्पेस भी दिया जाएगा। इसमें पावर्ड टेलगेट, वायरलेस चार्जिंग, और ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल जैसी सुविधाओं को पहले से बेहतर किया जाएगा।

Windsor PRO में मौजूदा मॉडल से बड़ी बैटरी मिलेगी। इसमें 50 kWh या 55 kWh बैटरी पैक देखने के लिए मिल सकता है, जो फुल चार्ज होने के बाद 450-500 किमी तक का रेंज दे सकता है। इसे लंबी दूरी का भी सफर किया जा सकें, इसके लिए बड़ी बैटरी दी जा रही है।

लॉन्च और कीमत

MG Windsor PRO को भारत में 6 मई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। मौदूजा Windsor को BaaS सर्विस के साथ 9.99 लाख रुपये के शुरुआती कीमत के साथ पेश की जाती है। वहीं, पूरी बैटरी के साथ इसे 14-16 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। MG Windsor PRO को को 16 लाख रुपये से 18 लाख रुपये के बीच लॉन्च किया जा सकता है।

5 मई सेवोक्सवैगन गोल्फ जीटीआईकी बुकिंग शुरू, प्रीमियम इंटीरियर और एडवांस फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

वोक्सवैगन गोल्फ जीटीआई की बुकिंग 5 मई 2025 से शुरू होने जा रही है। कंपनी इसे मई 2025 के आखिरी में भारत में लॉन्च कर सकती है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे। इसे भारत में 50 लाख रुपये के आसपास लॉन्च किया जा सकता है। वहीं इसका भारत में मुकाबला BMW Mini Cooper S से देखने के लिए मिलेगा।

नई दिल्ली। Volkswagen Golf GTi को भारतीय बाजार में मई 2025 के आखिरी तक लॉन्च किया जाएगा। इसके लॉन्च से पहले बुकिंग शुरू होने जा रही है। कंपनी Volkswagen Golf GTi की बुकिंग 5 मई 2025 से शुरू करने वाली है। इसे पहली बार भारत में लाया जा रहा है। यह भारत में Volkswagen का दूसरा GTi-बैज वाला मॉडल होने वाली है। इसे पहले 3-डोर Polo GTI को लॉन्च किया जा चुका है। यह पूरी तरह से आयातित होने वाली है, जिसकी वजह से यह महंगी होगी। आइए जानते हैं कि Volkswagen Golf GTi किन फीचर्स से लैस रहने वाली है?

इंजन होगा पावरफुल

Volkswagen Golf GTi में 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन देखने के लिए मिलेगा, जो 265hp की पावर और 370Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसके इंजन को 7-स्पीड ड्यूल-क्लच ऑटोमैटिक गियरबॉक्स से जोड़ा जाएगा, जो पहियों तक पावर भेजेगा। इसमें इलेक्ट्रॉनिक रूप से कंट्रोलित फ्रंट-एक्सल डिफरेंशियल लॉक भी होगा। कंपनी ने दावा किया है कि यह महज 5.9 सेकंड में 0-100kph की स्पीड पकड़ लेगी और इसकी टॉप स्पीड 250kph होगी।

अट्रैक्टिव है डिजाइन

Volkswagen Golf GTi को काफी अट्रैक्टिव डिजाइन दिया गया है। इसमें 18 इंच के अलॉय व्हील, GTi बैज और पीछे की तरफ ट्विन एग्जॉस्ट टिप्स के सौजन्य से अपेक्षित स्पोर्टी दिखाते हैं। इसमें डुअल-टोन फ्रंट बम्पर पर पांच-पीस लाइटिंग एलिमेंट भी दिया गया है और इसका एलईडी डीआरएल हेडलैम्प से बाहर निकलकर ग्रिल की तरफ जाती है। जिससे यह और भी शानदार दिखाई देती है। इसे चार कलर ऑप्शन ग्रेनेडिला ब्लैक मेटैलिक, ओरिक्स व्हाइट प्रीमियम, मूनस्टोन ग्रे ब्लैक और किंग्स रेड प्रीमियम के साथ भारत में उतारी जाएगी।

प्रीमियम है इंटीरियर

Volkswagen Golf GTi क इंटीरियर काफी हद तक हाल ही में लॉन्च हुई कंपनी Tiguan R Line जैसा है। इसमें बड़ी 15-इंच की सेंट्रल टचस्क्रीन और 10.3-इंच का ऑल-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर मिलेगा। इसमें GTi-स्पेक स्टीयरिंग व्हील और GTi ब्रांडिंग वाली स्पोर्ट्स सीटें भी दी गई है।

कितनी होगी कीमत?

Volkswagen Golf GTi को भारतीय बाजार में 50 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के आसपास लॉन्च किया जा सकता है। कंपनी ने पहले बैच में इसकी 250 यूनिट को आयात किया है। भारत में लॉन्च होने के बाद इसका मुकाबला Mini Cooper S से देखने के लिए मिलेगा।

वर्तमान पत्रकारिता की दशा और दिशा

विजय गर्ग

समाचार पत्र और पत्रकार (मीडिया) समाज के दर्पण कहे जाते हैं। समाज को आज भी इनसे काफी उम्मीदें हैं। समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति न्याय की खातिर अपनी बात को शासन-सत्ता के शीर्ष पर बैठे व्यक्ति तक पहुंचाने में जब असमर्थ हो जाता है तो वह इस दर्पण रूपी समाचार पत्र और पत्रकार की शरण में आता है। वह इस खातिर कि मीडिया के माध्यम से उसकी आवाज को संबंधित व्यक्ति तक ज़रूर पहुंचाया जा सकता है। उसे विश्वास होता है, आखिरकार हो भी क्यों न, पत्रकारिता का इतिहास ही इतना गौरवमई है। अगर बात करें देश के आजादी या नौकरशाही के विरुद्ध बिगुल बजाने की तो ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जब समाचार पत्रों और पत्रकारों ने समाज के शोषितों, पीड़ितों, गरीबों और मजलूमों की आवाज बनकर शासन-सत्ता से लेकर नौकरशाहों को आड़े हाथ लिया है। देश की आजादी में भी पत्रकारिता का बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसको भुलाया नहीं जा सकता है। स्वतंत्रता आंदोलन के महानायकों के साथ-साथ पत्रकारिता के महानायकों ने भी अपनी कलम रूपी तलवार से अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने का कार्य किया। तब जब संसाधनों का अभाव हुआ करता था, पत्रकारिता का अपना एक लक्ष्य और मिशन था। इस मिशन भरी पत्रकारिता में तमाम तरह की परेशानियां थीं, बावजूद इसके उस दौर की पत्रकारिता के महानायकों ने कलम की ताकत को कभी झुकने नहीं दिया था। उनकी कलम आग उगला करती थी।

कालांतर में व्यवस्थाएं बदलीं हैं, संसाधन बदले हैं तो पत्रकारिता की जिम्मेदारियां भी बढीं हैं। काफी कुछ बदलाव भी हुआ है। खासकर सोशल मीडिया के युग में प्रिंट मीडिया की महत्ता कहने को भले ही घटी है, लेकिन देखा जाए तो इसकी उपयोगिता नहीं घटी है, बल्कि जिम्मेदारियां बढ़ी हैं। इन्हीं के साथ आज की पत्र और पत्रकारिता के समक्ष कई गंभीर चुनौतियां भी सामने खड़ी हुईं हैं। इन चुनौतियों में से सबसे प्रमुख चुनौती पत्रकारिता में बढ़ते घुसपैठ की है। आज की 'मिशन पत्रकारिता' में ऐसे घुसपैठियों की एंट्री तेजी से हुई है, जिन्हें पत्रकारिता के उसूलों और सिद्धांतों से कोई लेना-देना या सरोकार नहीं है। यदि उन्हें कुछ सरोकार है तो सिर्फ अपने निजी स्वार्थों का, जिनके चलते पत्रकारिता की गरिमा दिनोंदिन धूल धूसरित होती जा रही है। जिस प्रकार से पत्रकारिता में घुसपैठियों की भरमार होती जा रही है, वह न केवल चिंतनीय है, बल्कि पत्रकारिता की गरिमा के विपरीत भी है। जिनके काले-कारनामों की वजह से पत्रकारिता की गरिमा को ठेस भी पहुंचा है। यदि गौर से देखा जाए तो इस अव्यवस्था के लिए कोई और नहीं बल्कि अपने लोग ही जिम्मेदार हैं। चंद पैसों की खातिर पत्रकारिता के उसूलों और सिद्धांतों को ताक पर रख मिशन को 'कमीशन' में परिवर्तित कर दुकानदारी चलाने वाले कुछेक लोगों ने इस क्षेत्र का माखौल उड़ाने का कार्य किया है। जिनकी करतूतों से कहीं न कहीं मिशन पत्रकारिता को जीवित रखने वाले उन महान मनीषियों की आत्मा को ठेस पहुंच रहा है, जिन्होंने अपने जीवन प्रयत्न पत्रकारिता को मिशन की भांति जीने का कार्य किया है।

अपने मिशन से भटक आज की पत्रकारिता कई गुटों में बंटी नज़र आती है। जिसने पत्रकारों को एकता के सूत्र में पिरोने की बजाय उन्हें भटकाव की राह पर ला खड़ा किया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि शौचालय से लेकर सचिवालय तक के लोग अपनों पर आने वाली आपदा-विपदा के दौरान न केवल एक साथ खड़े नज़र आते हैं, बल्कि डंके के साथ अपनी बातों को मनवाने में कामयाब भी होते हैं। लेकिन वही बात जब पत्र और पत्रकार की आती है तो यह अलग-अलग नज़र आते हैं। अपराधी से लेकर अधिकारी तक के प्रताड़ना से जूझते कलमकारों के समक्ष कई गंभीर चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं। बात करें यदि निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता की, तो आज इनकी राह न केवल दुरूह हो चुकी है, बल्कि जोखिम के साथ काफी दुर्गम भी हो गई है। हाल के वर्षों में देश के कई राज्यों में पत्रकारों के ऊपर हुए हमले यह बताने के लिए काफी हैं कि वर्तमान पत्रकारिता की राह में अब रोड़े उत्पन्न किए जा रहे हैं। नौकरशाही जहां सत्यता से भरी पत्रकारिता को पचा नहीं पा रहा है तो वहीं अपराधी

अपने कृत्यों को उजागर होने से रोकने के लिए पत्रकार के राह में रोड़ा बन रहा है। खासकर ग्रामीण पत्रकारों के समक्ष ऐसी तमाम चुनौतियां और परेशानियां उत्पन्न हुई हैं, जिनके बीच से गुजरते हुए उन्हें जोखिम भरी पत्रकारिता करनी पड़ रही है। बावजूद इसके शासन-सत्ता समाचार पत्र और पत्रकारों की सुरक्षा के प्रति गंभीर नहीं है, जो बेहद चिंतनीय विषय है।

सरकार देश की हो या प्रदेश की, पत्रकारों के प्रति उसका रवैया उचित नहीं रहा है। सरकार जहाँ पत्रकारों के आवश्यकताओं की लगातार अनदेखी कर रही है तो वहीं उनके उत्पीड़न जैसे मामलों में त्वरित कार्रवाई के बजाय इनमें लचर नीति अपनाई जा रही है। पत्रकार लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ होता है, लेकिन देखा जाए तो दिन-प्रतिदिन यह चौथा स्तंभ कमजोर होता जा रहा है। इसकी आवाज को दबाने का चक्र रचा जा रहा है। लोकतंत्र सेनानियों, सांसद, विधायकों की भांति पत्रकारों को यह मानदेय देने के साथ ही पत्रकार एक्ट का गठन, सरकार द्वारा पत्रकार आयोग बनाये जाने की मांग पत्रकारों के विभिन्न संगठन समय-समय पर करते आए हैं, ताकि उनके मान-सम्मान और अधिकार की व्यवस्था सुनिश्चित हो सके। कहने को तो पत्रकार भीड़ का हिस्सा नहीं हैं, देखा जाए तो भीड़ में पत्रकारों के साथ जिस प्रकार से सौतेला व्यवहार किया जाता है, उससे यह समाज अपने आप को सर्वाधिक उपेक्षित लोगों में महसूस करता है। देश में पत्रकारों की समस्या के निस्तारण की व्यवस्था प्रमुखता से किए जाने की मांग लंबित पड़ी हुई है। इसी के साथ न्यूज़ कवरेज के दौरान कोई आपदा या अनहोनी होने पर आर्थिक सहयोग की व्यवस्था सुनिश्चित कराए जाने जैसे मुद्दों को लेकर भी आवाज उठती रही है, लेकिन इसमें भी भेदभाव चरम पर है। कुछेक मामलों को छोड़ दिया जाए तो इससे ग्रामीण पत्रकार उपेक्षित होता आया है। इससे यह महसूस होता है कि आज का पत्रकार चौथे स्तम्भ की जगह महज स्तम्भ बनकर रह गया है। इनके हित के बारे में सोचने के लिए सरकारों के पास न समय है और न ही प्रशासनिक अमलों द्वारा सम्मान देने की गुंजाइश है। लोगों को उनका हक़ और अधिकार दिलाने वाला पत्रकार आज खुद अपने अधिकार के लिए अपना हाथ-पांव मार रहा है।

हिंदी पत्रकारित दिवस का इतिहास बताते हुए पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी दिनेश चन्द्र बताते हैं कि 30 मई, 1826 को कोलकाता (पश्चिम बंगाल) से युगल किशोर शुक्ल ने अपने संपादन में हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड के पहले अंक का प्रकाशन किया था। इस पत्र का प्रकाशन प्रत्येक मंगलवार को होता था। पहली बार इस अखबार की 500 प्रतियां छापी गईं थीं। महीने के प्रत्येक मंगलवार को प्रकाशित होने वाला यह हिंदी अखबार 79 अंक प्रकाशित होने के बाद बंद हो गया। दुनिया में हिन्दी का यह पहला अखबार था। इसमें प्रकाशित होने वाली खबरों और सामग्रियों ने अंग्रेजों की नींद हराम कर दी थी। उन दिनों यह अखबार हिंदी जानने, समझने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में ऊर्जा भरने में सहायक साबित हो रहा था। जिसके चलते अंग्रेजी हूकूमत में इस अखबार के प्रति तिलमिलाहट बढ़ती रही। इसके सम्पादक कलम के सिपाही और अदम्य साहसी युगल किशोर शुक्ल कानपुर (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले थे। दिनेश चन्द्र कहते हैं कि निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता पत्रकार के जीवन का मिशन होना चाहिए। विशेषकर लोकतंत्र में इनकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। आज हिंदी पत्रकारिता राजनेताओं, धर्मगुरुओं और बाबाओं के झांसे में आकर अपने मूल उद्देश्यों से भटक रही है। जनता को अंधविश्वास और पाखंड से उबारने के बजाय अंधेरे में धकेल रहे हैं। जबकि एक अखबार भूले-भटके के लिए रोशनी है, जहां उसे ज्ञान के साथ न्याय की भी उम्मीद रहती है। जनता की उपेक्षा और उसकी समस्या का जब कोई रास्ता नही निकलता है तब अखबार ही उसे संकट से उबारता है। लोकतंत्र में अखबार आम आदमी की आवाज़ है।

कहानी: दिल धड़कने दो

विजय गर्ग

शादीशुदा होते हुए भी वे अपने अपने फ्लैट की खिड़की से एक दूसरे को क्यों छिपछिप कर देखा करते थे क्या उन के बीच शादी से पहले कोई रिश्ता था या फिर...

सुबह 6 बजे का अलार्म बजा तो तन्वी उठ कर हमारे 10 साल के बेटे राहुल को स्कूल भेजने की तैयारी में व्यस्त हो गई. मैं भी साथ ही उठ गया. फ्रेश हो कर रोज की तरह 5वीं मंजिल पर स्थित अपने फ्लैट में राहुल के बैडरूम की खिड़की के पास आ कर खड़ा हो गया. कुछ दूर वाली बिल्डिंग की तीसरी मंजिल के फ्लैट में उस के बैडरूम की भी लाइट जल रही थी.

इस का मतलब वह भी आज जल्दी उठ गई है. कल तो उस के बैडरूम की खिड़की का परदा 7 बजे के बाद ही हटा था. उस की जलती लाइट देख कर मेरा दिल धड़का, अब वह किसी भी पल दिखाई दे जाएगी. मेरे फ्लैट की बस इसी खिड़की से उस के बैडरूम की खिड़की, उस की किचन का थोड़ा सा हिस्सा और उस के फ्लैट का वाशिंग ऐरिया दिखता है.

तभी वह खिड़की के पास आ खड़ी हुई. अब वह अपने बाल ऊपर बांधेगी, कुछ पल खड़ी रहेगी और फिर तार से सूखे कपड़े उतारेगी. उस के बाद किचन में जलती लाइट से मुझे अंदाजा होता है कि वह किचन में है. 10 साल से मैं उसे ऐसे ही देख रहा हूं. इस सोसायटी में उस से पहले मैं ही आया था. वह शाम को गार्डन में नियमित रूप से जाती है. वहीं से मेरी उस से हायहैलो शुरू हुई थी. अब तो कहीं भी मिलती है, तो मुसकराहट और हायहैलो का आदानप्रदान जरूर होता है. मैं कोई 20-25 साल का नवयुवक तो हूं नहीं जो मुझे उस से प्यारव्यार का चक्कर हो. मेरा दिल तो बस यों ही उसे देख कर धड़क उठता है. अच्छी लगती है वह मुझे, बस. उस के 2 युवा बच्चे हैं. वह उम्र में मुझ से बड़ी ही होगी. मैं उस के पति और

बच्चों को अच्छी तरह पहचानने लगा हूं. मुझे उस का नाम भी नहीं पता और न उसे मेरा पता होगा. बस सालों से यही रूटीन चल रहा है.

अभी औफिस जाऊंगा तो वह खिड़की के पास खड़ी होगी. हमारी नजरें मिलेंगी और फिर हम दोनों मुसकरा देंगे.

औफिस से आने पर रात के सोने तक मैं इस खिड़की के चक्कर काटता रहता हूं. वह दिखती रहती है, तो अच्छा लगता है वरना जीवन तो एक ताल पर चल ही रहा है. कभी वह कहीं जाती है तो मुझे समझ आ जाता है वह घर पर नहीं है' सन्नाटा सा दिखता है उस फ्लैट में फिर. कई बार सोचता हूं किसी की पत्नी, किसी की मां को चोरीछिपे देखना, उस के हर क्रियाकलाप को निहारना गलत है. पर क्या करूं, अच्छा लगता है उसे देखना.

तन्वी मुझ से पहले औफिस निकलती है और मेरे बाद ही घर लौटती है. राहुल स्कूल से सीधे सोसायटी के डे केयर सैंटर में चला जाता है. मैं शाम को उसे लेते हुए घर आता हूं. कई बार जब वह मुझ से सोसायटी की मार्केट में या नीचे किसी काम से आतीजाती दिखती है तो सामान्य अभिवादन के साथ कुछ और भी होता है हमारी आंखों में अब. शायद अपने पति और बच्चों में व्यस्त रह कर भी उस के दिल में मेरे लिए भी कुछ तो है, क्योंकि रोज यह इत्तेफाक तो नहीं कि जब मैं औफिस के लिए निकलता हूं, वह खिड़की के पास खड़ी मुझे देख रही होती है.

वैसे कई बार सोचता हूं कि मुझे अपने ऊपर नियंत्रण रखना चाहिए. क्यों रोज मैं उसे सुबह देखने यहां खड़ा होता हूं फिर सोचता हूं कुछ गलत तो नहीं कर रहा हूं' उसे देख कर कुछ पल चैन मिलता है तो इस में क्या बुरा है किसी का क्या नुकसान हो रहा है

तभी वह सूखे कपड़े उतारने आ गई. उस ने ब्लैक गाउन पहना है. बहुत अच्छी लगती है वह इस में. मन करता है वह अचानक मेरी तरफ देख ले तो मैं हाथ हिला दूं पर उस ने कभी नहीं देखा. पता नहीं उसे पता भी है या नहीं' यह खिड़की मेरी है और मैं यहां खड़ा होता हूं. नीचे लगे पेड़ की कुछ टहनियां आजकल मेरी इस खिड़की तक पहुंच गई हैं. उन्हीं के झुरमुट से उसे देखा करता हूं.

कई बार सोचता हूं हाथ बढ़ा कर टहनियां तोड़ दूं पर फिर मैं उसे शायद साफसाफ दिख जाऊंगा' सोचेगी' हर समय यहीं खड़ा रहता है' नहीं, इन्हें रहने ही देता हूं. वह कपड़े उतार कर किचन में चली गई तो मैं भी औफिस जाने की तैयारी करने लगा. बीचबीच में मैं उसे अपने पति और बच्चों को 'बाय' करने के लिए भी खड़ा देखता हूं. यह उस का रोज का नियम है. कुल मिला कर उस का सारा रूटीन देख कर मुझे अंदाजा होता है कि वह एक अच्छी पत्नी और एक अच्छी मां है.

औफिस में भी कभीकभी उस का यों ही खयाल आ जाता है कि वह क्या कर रही होगी. दोपहर में सोई होगी' अब उठ गई होगी' अब उस सोफे पर बैठ कर चाय पी रही होगी, जो मेरी खिड़की से दिखता है.

औफिस से आ कर मैं फ्रेश हो कर सीधा खिड़की के पास पहुंचा. राहुल कार्टून देखने बैठ गया था. मेरा दिल जोर से धड़का. वह खिड़की में खड़ी थी. मन किया उसे हाथ हिला दूं' कई बार मन होता है उस से कुछ बातें करने का, कुछ कहने का, कुछसुनने का, पर जीवन में कई इच्छाओं को, एक मर्यादा में, एक सीमा में रखना ही पड़ता है' कुछ सामाजिक दायित्व भी तो होते हैं' फिर सोचता हूं दिल का क्या है, धड़कने दो.

सुबह 6 बजे का अलार्म बजा. मैं ने तेजी से उठ कर फ्रेश हो कर अपने बैडरूम की लाइट जला दी. समीर भी साथ ही उठ गए थे.

वे सुबह की सैर पर जाते हैं. मैं ने बैडरूम की खिड़की का परदा हटाया. अपने बाल बांधे. जानती हूं वह सामने अपने फ्लैट की खिड़की में खड़ा होगा, आजकल नीचे लगे पेड़ की कुछ टहनियां उस की खिड़की तक जा पहुंची हैं. कई बार सोचती हूं वह हाथ बढ़ा कर उन्हें तोड़ क्यों नहीं देता पर नहीं, यह ठीक नहीं होगा. फिर वह साफसाफ देख लेगा कि मैं उसे चोरीचोरी देखती रहती हूं. नहीं, ऐसे ही ठीक है. तार से कपड़े उतारते हुए मैं कई बार उसे देखती हूं, कपड़े तो मैं दिन में कभी भी उतार सकती हूं, कोई जल्दी नहीं होती इन की पर इस समय वह खड़ा होता है न, न चाहते हुए भी उसे देखने का लोभ संवरण नहीं कर पाती हूं.

मैं ने कपड़े उतारते हुए कनखियों से उसे देखा. हां, वह खड़ा था. मन हुआ हाथ हिला कर हैलो कर दूं पर नहीं, एक विवाहिता की कुछ अपनी मर्यादाएं होती हैं. मेरा दिल जोर से धड़कता है जब मैं महसूस करती हूं वह अपनी खिड़की में खड़ा हो कर मेरी तरफ देख रहा है. स्त्री हूं न, बहुत कुछ महसूस कर लेती हूं, बिना किसी के कुछ कहेसुने. मैं समीर और अपने बच्चों के नाश्ते और टिफिन की तैयारी मैं व्यस्त हो गई.

तीनों शाम तक ही वापस आते हैं. मेरी किचन के एक हिस्से से उस की खिड़की का थोड़ा सा हिस्सा दिखता है, जिस खिड़की के पास वह खड़ा होता है वह शायद बैडरूम की है. किचन में काम करतेकरते मैं उस पर नजर डालती रहती हूं. सब समझ आता रहता है, वह अब तैयार हो रहा है. मुझे अंदाजा है उस के कमरे की किस दीवार पर शीशा है. मैं ने उसे वहां कई बार बाल ठीक करते देखा है.

जानती हूं किसी के पति को, किसी के पिता को ऐसे देखना मर्यादासंगत नहीं है पर क्या करूं, कुछ है, जो दिल धड़कता है उस के सामने होने पर. 10 साल से कुछ है जो उसे कहीं देखने पर, नजरें मिलने पर, हायहैलो होने पर दिल धड़क उठता है. वह अपनी कामकाजी पत्नी की घर के काम में काफी मदद करता है, बेटे को ले कर आता है, घर का सामान लाता है, कभी अपनी पत्नी को छोड़ने और लेने भी जाता है' सब दिखता है मुझे अपने घर की खिड़की से. कुल मिला कर वह एक अच्छा पति और अच्छा पिता है. कई बार तो मैं ने उसे कपड़े सुखाते भी देखा है' न मुझे उस का नाम पता है न उसे मेरा पता होगा. बस, उसे देखना मुझे अच्छा लगता है. मैं कोई युवा लड़की तो हूं नहीं जो प्यारव्यार का चक्कर हो. बस, यों ही तो देख लेती हूं उसे. वैसे दिन में कई बार खयाल आ जाता है कि क्या काम करता है वह कहां है उस का औफिस वह औफिस से आते ही अपनी खिड़की खोल देता है. मुझे अंदाजा हो जाता है वह आ गया है, फिर वह कई बार खिड़की के पास आताजाता रहता है. वह कई बारछुट्टियों में बाहर चला जाता है तो बड़ा खालीखाली लगता है.

10 साल से यों ही देखते रहना एक आदत सी बन गई है. वह दिखता रहता है पेड़ की पत्तियों के बीच से. दिल करता है उस से कुछ बातें करूं, कुछ कहूं, कुछ सुनूं पर नहीं जीवन में कई इच्छाओं को एक मर्यादा में रखना ही पड़ता है' कुछ सामाजिक उसूल भी तो हैं, फिर सोचती हूं दिल का क्या है, धड़कने दो.

चश्मा पहनने से पड़ गए हैं नाक पर काल धब्बे, तो अपनाएं ये आसान से घरेलू उपाय

विजय गर्ग

आज के समय में लोगो का ज्यादातर समय कमंप्यूटर पर काम करते हुए या फिर फोन चलाते हुए बीतता है। जिसका सबसे ज्यादा असर हमारी आंखों पर पड़ता है। कंप्यूटर और फोन से निकलने वाली लाइट की वजह से आंखो की रोशनी कम होने लगती है। इसलिए आपको अपने चारो तरफ ज्यादातर लोग चश्मा पहने हुए दिख जाएंगे हो सकता है कि आप भी चश्म पहनते हो। जब हम चश्मा पहनते हैं तो उसका स्टैंड हमारी नाक पर रहता है लगातार कई घंटो तक रोज चश्मा पहनने की वजह से हमारी नाक पर काले निशान पड़ जाते हैं, जो देखने में बेहद खराब लगते हैं। इन धब्बों को हटाने के लिए आपको ब्यूटी पार्लर जाकर ज्यादा पैसे खर्च करने की जरुरत नहीं है। घर में ही मिलने वाली कुछ चीजों का उपयोग करके आप आसानी से इन धब्बों से छुटकारा पा सकते हैं।

ज्यादातर लोगों के घरो में एलोवेरा लगा होता है। ऐलोवेरा हमारी त्वचा और बालों दोनों के लिए ही फायदेमंद होता है। ये आपकी त्वचा तो नमी प्रदान करता है। बाजार में भी ऐलोवेरा जैल मिल जाता है, लेकिन आप घर पर ही ऐलोवेरा की पत्ती को बीच से काटकर उसके गूदे का पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को अच्छी तरह से नाक पर बने हुए निशान पर लगाकर हल्के हाथों मसाज करें। कुछ ही दिनों में इसके उपयोग से आपके नाक के काले धब्बे दूर हो जाएंगे। इसके अलावा आप इसे पूरे चेहरे पर भी लगा सकती हैं।

आलू एक ऐसी सब्जी है जो हर घर में मिल जाएगी। आलू के रस का उपयोग करके आसानी से आप चश्मे के निशान से छुटकारा पा सकते हैं। कच्चे आलू को घिसने के बाद इसका रस निकाल लें। कुछ देर तक आलू के रस को धब्बों पर लगाकर रखें। कुछ ही दिनों में नाक के काले धब्बे दूर हो जाएंगे।

शहद त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद रहता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटीसेप्टिक गुण पाए जाते हैं जो त्वचा के काले धब्बे दूर करने में मददगार होते हैं। आप शहद का उपयोग करके भी अपनी नाक के काले धब्बों से निजात पा सकते हैं।

टमाटर चेहरे के दाग-धब्बों को दूर करने में बहुत कारगर होता है। इसमें एक्सफोलिएशन का गुण पाया जाता है। जिससे आपके चेहरे की मृत त्वचा हट जाती है। अपने चेहरे और नाक के काले धब्बे हटाने के लिए टमाटर का पेस्ट बनाकर लगाएं। इसके उपयोग से कुछ ही दिनों में आपके चेहरे के दाग दूर हो जाएंगे।

नाक पर पड़े हुए काले धब्बों को दूर करने के लिए आप संतरे के ताजे छिलका को उपयोग भी कर सकते हैं। संतरे के छिलके पीसकर इसमें दूध मिलाकर पेस्ट की तरह तैयार करें और हल्के हाथों से निशान वाली जगह पर लगाकर मसाज करें। इससे आपकी नाक पर पड़े हुए काले निशान कुछ ही दिनों में गायब हो जाएंगे।

जेईई से परे कैरियर विकल्प, पाठ्यक्रम जो बड़े वेतन प्राप्त करते हैं

विजय गर्ग

जेईई के इच्छुक उम्मीदवार जो अपने सपनों के कॉलेज में जाने का मौका चूक गए, उनके पास अभी भी आर्किटेक्चर, डेटा साइंस और फोरेंसिक साइंस जैसे क्षेत्रों में करियर बनाने के अवसर हैं

मैथ्स और साइंस के साथ कक्षा 12 पास करने के बाद, कई छात्र देश के शीर्ष इंजीनियरिंग कॉलेजों में जाने के लिए जेईई (संयुक्त प्रवेश परीक्षा) को मंजूरी देने का सपना देखते हैं। हालांकि, चूंकि परीक्षा अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और प्रत्येक स्ट्रीम में सीटें सीमित हैं, कुछ उम्मीदवारों के सपने अमल में नहीं आ सकते हैं। फिर भी, जेईई या अन्य इंजीनियरिंग परीक्षा की तैयारी से गणित और विज्ञान की पृष्ठभूमि और ज्ञान वाले छात्रों के पास कई क्षेत्रों में करियर बनाने के अवसर हैं। ये क्षेत्र न केवल आकर्षक वेतन प्रदान करते हैं, बल्कि चुनौतीपूर्ण और रोमांचक करियर भी प्रदान करते हैं।

यहां कुछ कैरियर विकल्पों पर विचार कर रहे हैं:

डेटा विज्ञान

शिक्षा विशेषज्ञ सीता राम ने बताया कि हाल के वर्षों में डेटा वैज्ञानिकों की मांग तेजी से बढ़ी है। यदि आपके पास डेटा रुझानों की समझ और उन्हें सरल शब्दों में समझाने की क्षमता है, तो आप डेटा वैज्ञानिक बन सकते हैं। डेटा वैज्ञानिक का वेतन इंजीनियरों की तुलना में है। इस करियर को आगे बढ़ाने के लिए, छात्र डेटा साइंस में बीएससी या बीसीए या सांख्यिकी में बीएससी कर सकते हैं। फ़िलहाल डेटा वैज्ञानिकों की मांग लगातार बढ़ रही है.

वास्तुकार

विशेषज्ञों ने कहा कि वास्तुकला एक ऐसा क्षेत्र है जो रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ाता है। इसे इंजीनियरिंग की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए एक मजबूत कैरियर विकल्प माना जाता है, क्योंकि गणित का व्यापक रूप से डिजाइन से लेकर परियोजना विकास तक उपयोग किया जाता है। छात्र इस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर का पीछा कर सकते हैं।

अनुसंधान वैज्ञानिक अनुसंधान वैज्ञानिकों की मांग बढ़ रही है, कंपनियों ने उन्हें सक्रिय रूप से भर्ती किया है। अनुसंधान वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करते हैं, डेटा का विश्लेषण करते हैं, और निष्कर्ष निकालते हैं, कंपनियों या संस्थानों को नई अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। एक शोध वैज्ञानिक बनने के लिए, छात्र भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के साथ बीएससी पूरा कर सकते हैं, और फिर आगे के शोध कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं।

विमानन क्षेत्र शिक्षा विशेषज्ञ सीता राम ने यह भी बताया कि विमानन उद्योग में जेईई उम्मीदवारों के लिए बहुत सारे अवसर हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो विविध नौकरी की भूमिकाएं प्रदान करता है। छात्रों के पास दो मुख्य विकल्प हैं: वे या तो पायलट प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से पायलट बनने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं या बीबीए पूरा करने और विमानन में आगे के अध्ययन के बाद अन्य कैरियर विकल्पों का पता लगा सकते हैं। इस क्षेत्र में कैरियर के अवसरों को व्यक्तिगत हितों के अनुसार चुना जा सकता है। फोरेंसिक विज्ञान विशेषज्ञ ने यह भी कहा कि फोरेंसिक विज्ञान में पर्याप्त अवसर हैं। यह अनुशासन वैज्ञानिक तरीकों और सिद्धांतों का उपयोग करके कानूनी निर्णय लेने पर केंद्रित है। छात्र फोरेंसिक साइंस, फोरेंसिक बायोलॉजी या फोरेंसिक पैथोलॉजी में बीएससी का पीछा करके इस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं।

2026 से कक्षा 10 के लिए दोहरी बोर्ड परीक्षा - भारत की शिक्षा प्रणाली के लिए इसका क्या मतलब है

विजय गर्ग

भारत की शिक्षा प्रणाली 2025-26 शैक्षणिक वर्ष में शुरू होने वाले कक्षा 10 के छात्रों के लिए दोहरी बोर्ड परीक्षा शुरू करने के साथ एक बड़े बदलाव से गुजरने वाली है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा घोषित, यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक वर्ष छात्रों को दो अवसरों की अनुमति देकर बोर्ड परीक्षाओं के उच्च दबाव वाले वातावरण को कम करना है।

फरवरी 2026 से शुरू होकर, छात्र दो बार बोर्ड परीक्षा दे सकेंगे - एक बार फरवरी में और फिर अप्रैल / मई में - अपना सर्वश्रेष्ठ स्कोर रखने का विकल्प। हालांकि यह परिवर्तन छात्रों को अधिक लचीलापन प्रदान करने और तनाव को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, यह छात्रों, शिक्षकों और व्यापक शिक्षा ढांचे पर इसके प्रभावों के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न भी लाता है। कोई पूरक परीक्षा नहीं: शैक्षणिक वसूली के दृष्टिकोण में बदलाव

नई दोहरी बोर्ड परीक्षा प्रणाली के तहत, छात्रों के पास पूरक परीक्षाओं का विकल्प नहीं होगा, जो पारंपरिक रूप से उन लोगों को पेश किए गए हैं जो एक या अधिक विषयों में असफल होते हैं। इसके बजाय, छात्र उसी शैक्षणिक वर्ष में परीक्षा को फिर से लेने में सक्षम होंगे - या तो फरवरी या अप्रैल / मई में - उन्हें अपने स्कोर में सुधार करने का दूसरा अवसर प्रदान करेंगे। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य निरंतर सीखने और प्रदर्शन में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूरक परीक्षा से जुड़े कलंक को कम करना है। परीक्षा संरचना और वित्तीय विचार: नेविगेट करने के लिए नई चुनौतियां

दोहरी बोर्ड परीक्षा प्रणाली की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि दोनों परीक्षाएं पूर्ण पाठ्यक्रम को कवर करेंगी, यह सुनिश्चित करते हुए कि दोनों सत्रों में छात्रों का व्यापक परीक्षण किया जाए। इसके अतिरिक्त, छात्रों को फरवरी और अप्रैल / मई दोनों प्रयासों के लिए एक ही परीक्षा केंद्र सौंपे जाएंगे, निरंतरता को बढ़ावा देंगे और तार्किक चुनौतियों को कम करेंगे। हालांकि, प्रत्येक प्रयास के लिए अलग परीक्षा शुल्क की शुरुआत कुछ परिवारों के लिए वित्तीय तनाव पैदा कर सकती है। इसके अलावा, संशोधित पंजीकरण और विषय चयन समयसीमा छात्रों पर त्वरित निर्णय लेने के लिए दबाव डाल सकती है, इस प्रक्रिया में तनाव की एक परत जोड़ सकती है। यह सुधार क्यों?

दो परीक्षा सत्रों की शुरूआत एनईपी 2020 के साथ मूल्यांकन को अधिक छात्र-अनुकूल बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है। उसी वर्ष के भीतर छात्रों को दूसरा मौका देकर, सुधार सिर्फ एक महत्वपूर्ण परीक्षा होने के दबाव को कम करता है। यह शिक्षार्थियों को पूर्ण शैक्षणिक वर्ष की प्रतीक्षा किए बिना अपने स्कोर में सुधार करने की अनुमति देता है। यह प्रणाली अंतरराष्ट्रीय मॉडलों के समान है, जैसे कि यूनाइटेड किंगडम में मॉड्यूलर परीक्षा,

और इसका उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक प्रथाओं से मेल खाने में मदद करना है। नीति का एक और लक्ष्य रटने के बजाय गहरी समझ को प्रोत्साहित करना है। 2026 के बाद से, परीक्षा पत्रों में अधिक योग्यता-आधारित प्रश्न शामिल होने की उम्मीद है, जिससे छात्रों को विश्लेषण और समस्या-समाधान जैसे कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी।

शिफ्ट की तैयारी करने वाले बोर्ड पूरे भारत में कई शिक्षा बोर्ड 2026 में दोहरे परीक्षा प्रारूप को रोल आउट करने की तैयारी कर रहे हैं। भारत और विदेश दोनों में लाखों छात्रों की देखरेख करने वाले केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने पुष्टि की है कि वह 2025-26 सत्र में एक पायलट कार्यक्रम के साथ शुरू होने वाली नई प्रणाली को अपनाएगा। आईसीएसई परीक्षा आयोजित करने वाली काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन ने भी बदलाव के लिए प्रतिबद्ध किया है।

महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एंड हायर सेकेंडरी एजुकेशन, तमिलनाडु के सरकारी परीक्षा निदेशालय, और कर्नाटक माध्यमिक शिक्षा परीक्षा बोर्ड जैसे राज्य बोर्ड तैयारियों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। झारखंड एकेडमिक काउंसिल (जेएसी) और पंजाब स्कूल एजुकेशन बोर्ड (पीएसईबी) इस प्रस्ताव की समीक्षा कर रहे हैं और जल्द ही इसे लागू कर सकते हैं। अन्य राज्य बोर्ड भी सक्रिय रूप से इस सुधार को अपनाने पर विचार कर रहे हैं, जिससे दोहरी बोर्ड परीक्षा प्रणाली के लिए व्यापक क्षेत्रीय समर्थन का संकेत मिलता है। लाभ और चिंताएं क्या हैं? नई प्रणाली कई स्पष्ट लाभ प्रदान करती है। छात्रों को अपने परिणामों को बेहतर बनाने का दूसरा अवसर मिलता है, जो परीक्षा के तनाव को कम करने और मानसिक कल्याण का समर्थन करने में मदद कर सकता है। बदलाव का समर्थन करने के लिए स्कूलों को डिजिटल टूल अपनाने की भी उम्मीद है। उदाहरण के लिए, सीबीएसई ने 2026 तक एआई-आधारित मूल्यांकन विधियों को पेश करने की योजना की घोषणा की है। हालांकि, कुछ चिंताएं भी हैं। छात्र दोनों परीक्षाओं में शामिल होने के लिए दबाव महसूस कर सकते हैं, जिससे इसे कम करने के बजाय अतिरिक्त तनाव हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, स्कूलों को परीक्षा योजना, संसाधन उपलब्धता और निष्पक्ष मूल्यांकन के साथ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। एक जोखिम यह भी है कि निजी कोचिंग सेंटर नए प्रारूप का लाभ उठा सकते हैं, संभावित रूप से विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों के बीच असमानता बढ़ सकती है। इस सुधार की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इसे कितनी अच्छी तरह लागू किया जाता है। अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्कूल ठीक से सुसज्जित हैं, शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है, और सभी क्षेत्रों के छात्रों के पास संसाधनों तक समान पहुंच है। उचित समर्थन और योजना के साथ, दोहरी परीक्षा प्रणाली भारत में अधिक समावेशी और लचीली शिक्षा संरचना का कारण बन सकती है। जैसा कि राष्ट्रीय और राज्य शिक्षा बोर्ड फरवरी 2026 के रोलआउट के लिए तैयार करते हैं, यह नीति देश में शैक्षणिक सफलता को कैसे मापा जाता है, इसे बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम को चिह्नित कर सकती है।

अंततः देश में जाति जनगणना: प्रतिनिधित्व या पुनरुत्थान?

भारत में दशकों से केवल अनुसूचित जातियों और जनजातियों की गिनती होती रही है, जबकि अन्य जातियाँ नीति निर्माण में अदृश्य रहीं। जाति जनगणना केवल गिनती नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की नींव है। बिना सटीक आंकड़ों के आरक्षण, योजनाएं और संसाधन वितरण अधूरे रहेंगे। विरोध करने वालों को डर है कि उनके विशेषाधिकार चुनौती में पड़ सकते हैं। लेकिन यह गिनती वंचितों की दृश्यता और भागीदारी सुनिश्चित करने का औज़ार है, न कि समाज को तोड़ने का। जब नीति जाति पर आधारित हो, तो डेटा भी होना चाहिए।

- प्रियंका सौरभ

भारत को जातियों में बाँटा गया, लेकिन उसे जोड़ने की कोशिश कभी पूरी ईमानदारी से नहीं हुई। संविधान ने सबको समानता का अधिकार दिया, मगर समान अवसर की नींव जातिगत असमानता को पहचानने पर ही टिकती है। इसी बुनियाद पर जब आज जाति जनगणना की मांग ज़ोर पकड़ रही है, तो सवाल खड़ा होता है — क्या यह सामाजिक न्याय का औज़ार है या समाज को और अधिक खांचों में बाँटने की कवायद?

भारत में पिछली बार व्यापक जातिगत जनगणना 1931 में हुई थी। उसके बाद, आज़ादी के बाद के राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में एक आदर्श सामने रखा गया — 'जातिविहीन समाज'। इस आदर्श का आकर्षण था, पर व्यवहार में यह एक तरह की चुप्पी थी। 1951 से लेकर 2011 तक हर जनगणना में केवल अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) की गिनती होती रही, बाकी जातियाँ 'अदृश्य' रहीं। लेकिन अगर नीति आरक्षण आधारित हो, योजनाएं वर्गों के लिए हों, तो आंकड़े क्यों न हों? क्या यह संभव है कि बिना जानकारी के न्यायपूर्ण वितरण हो?

बिहार की जाति आधारित सर्वेक्षण ने एक नई लहर पैदा की। नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव की पहल ने अन्य राज्यों को भी सोचने पर मजबूर किया। एक ओर जातिगत गणना को सामाजिक न्याय की बुनियाद बताया गया, तो दूसरी ओर कुछ वर्गों ने इसे सामाजिक विभाजन का उपकरण कहा। कई राजनीतिक दल इस मांग को समर्थन दे रहे हैं, खासकर वे जिनकी राजनीति वंचित तबकों पर आधारित है। लेकिन केंद्र सरकार की भूमिका झिझकभरी रही है। केंद्र का कहना है कि यह बेहद जटिल प्रक्रिया है और इससे सामाजिक तनाव पैदा हो सकते हैं।

जाति जनगणना के समर्थन में कई मजबूत तर्क दिए जा रहे हैं। अगर हम यह नहीं जानते कि कौन-सी जातियाँ किस आर्थिक व सामाजिक स्थिति में हैं, तो योजनाएं महज अंदाज़ों पर चलती रहेंगी। आरक्षण का पुनर्मूल्यांकन करना हो या सामाजिक योजनाओं का लक्ष्य तय करना हो, सटीक आंकड़ों की आवश्यकता है। अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) की जनसंख्या कई राज्यों में 40-50% तक मानी जाती है, जबकि उन्हें 27% आरक्षण मिलता है। यदि सही आंकड़े हों तो नीति ज्यादा न्यायसंगत हो सकती है।

विरोध करने वालों की मुख्य दलील यह है कि जाति जनगणना समाज में जातीय पहचान को और मजबूत करेगी। इससे सामाजिक एकता को खतरा होगा और राजनीतिक दल केवल जाति कार्ड खेलकर वोट बटोरने लगेंगे। कुछ वर्गों को डर है कि अगर सही आंकड़े सामने आ गए, तो उनका 'निहित अधिकार' छिन सकता है — जैसे सवर्ण वर्गों को लगता है कि ओबीसी या दलितों की संख्या के अनुपात में अगर आरक्षण बढ़ा, तो उनके लिए मौके और कम हो जाएंगे।

जब बिहार ने अपना जातिगत सर्वेक्षण कराया, तो केंद्र सरकार ने उससे दूरी बनाए रखी। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक जैसे राज्यों में भी मांग उठी, लेकिन सर्वसम्मति नहीं बन सकी। कई बार यह तर्क दिया गया कि यह विषय केंद्र के अधिकार क्षेत्र में आता है और इसे राष्ट्रीय स्तर पर ही किया जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में जाति आधारित जनगणना पर सीधे रोक नहीं लगाई, लेकिन कहा कि यह नीति का विषय है और सरकारें अपने विवेक से निर्णय लें।

वंचित समुदायों के लिए जाति जनगणना केवल गिनती नहीं है, यह उनकी दृश्यता का सवाल है। अगर समाज में कोई वर्ग आर्थिक, शैक्षणिक और राजनीतिक रूप से पिछड़ा है, तो सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि वह कहां? कितना है? डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था — "यदि आपको सुधार करना है, तो पहले तथ्यों को जानिए।" जातिगत आंकड़े भी ऐसे ही तथ्य हैं। यह आंकड़े केवल आरक्षण तय करने के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, स्वरोजगार जैसी नीतियों के लिए जरूरी हैं।

आश्चर्य की बात है कि जाति जनगणना जैसे गहन विषय पर मुख्यधारा मीडिया में गंभीर बहस कम होती है। जो बौद्धिक वर्ग खुद को प्रगतिशील मानता है, वह या तो इसे 'रिग्रेसिव' बताकर खारिज कर देता है या चुप रहता है। दरअसल, समस्या यह नहीं कि जाति की गिनती हो रही है। समस्या यह है कि जिन्हें अपने 'विशेषाधिकार' की चिंता है, वे इस गिनती से असहज हैं।

अब सबसे बड़ा सवाल — मान लीजिए कि जाति जनगणना होती है और सभी जातियों के आंकड़े सामने आते हैं। तब क्या होगा? क्या सरकारें इन आंकड़ों के आधार पर आरक्षण नीति में बदलाव करेंगी? क्या यह संभव होगा कि किसी जाति की संख्या ज़्यादा निकलने पर उन्हें ज़्यादा हिस्सेदारी दी जाए? या फिर आंकड़ों को दबा दिया जाएगा, जैसा 2011 की सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (SECC) के साथ हुआ? 2011 में हुई SECC के आंकड़े आज भी सार्वजनिक रूप से अधूरे हैं। सरकारें आती गईं, लेकिन किसी ने इसे पूरी पारदर्शिता से नहीं जारी किया।

जाति एक सामाजिक सच्चाई है, जिसे नज़रअंदाज़ करना संभव नहीं। जो सत्ताएं जातिविहीन समाज की बात करती हैं, वे चुनावी टिकट देने, मंत्रिमंडल गठन, और अफसरों की नियुक्ति में जाति ही देखती हैं — तो फिर आंकड़ों से डर क्यों? जाति जनगणना न सामाजिक टूटन लाएगी, न समाज की बुनियाद को कमजोर करेगी — बशर्ते इसका उपयोग न्यायपूर्ण नीति निर्माण के लिए हो। डर उन्हें है जिनके पास पहले से ही ज़्यादा है। जो वंचित हैं, वे तो सिर्फ अपनी मौजूदगी की पुष्टि चाहते हैं।

आख़िर यह देश सभी जातियों का है — तो सभी की गिनती क्यों नहीं?

"गिनती की बात"
(प्रियंका सौरभ की लेखनी से)

जो गिने गए, वे कुछ थे,
जो न गिने गए, वे सब थे।
गिनती से बाहर जो छूट गए,
उनका दर्द, उनकी भूख अब
तक जीवित है।

कहते हो — "जाति मत देखो",
पर पद, परंपरा, पंचायत में
हर पग पर जाति ही तो देखी जाती
है।
कहते हो — "जातिविहीन
समाज बनाना है",
मगर गुप्त सूचियों में, कुर्सियों
की ऊँचाई में,
नाम, उपनाम, वंश, सब बचे रह
जाते हैं।

गिनती कोई अपमान नहीं,
यह तो बस वह शीशा है,
जिसमें समाज अपना चेहरा देख
सके।
कितने वंचित हैं, कितने
बहिष्कृत,
कितने अब भी स्कूल की देहरी
तक नहीं पहुँचे —
यह जानना शर्म की बात नहीं,
यह जानना जिम्मेदारी है।

गिनती से पहले जो अदृश्य थे,
गिनती के बाद वे नागरिक
होंगे।
आँकड़ों में ही तो बसती है उम्मीद,
तथ्य ही तो तोड़ते हैं भ्रम की
ज़ंजीरें।
अगर आरक्षण जाति पर आधारित
है,
तो आँकड़े क्यों नहीं?
अगर शासन जातीय समीकरणों
से चलता है,
तो गिनती से परहेज़ कैसा?

डर किस बात का है, साहिब?
कि कहीं सच न सामने आ जाए?
कि कहीं बहुसंख्य समाज अपनी
हिस्सेदारी माँग न ले?
कि जिन्हें अधिक मिला, उन्हें
थोड़ी जगह समेटनी पड़े?

यह गिनती कोई विभाजन नहीं
लाएगी,
यह तो वह आईना होगी
जो सत्ता के गलियारों को स्पष्ट
दिखा देगी —
कि जिन्हें तुम 'बहुजन' कहते हो,
वे अब बहुशब्द नहीं,
बहुबल भी हैं।

गिन लो हमें,
हमारी संख्या को मत डराओ,
हम कोई परछाईं नहीं,
हम इस लोकतंत्र की असली
रौशनी हैं।
हम वह पंक्ति हैं
जिसे सदियों से पीछे रोका गया
—
अब हम आगे बढ़ना चाहते हैं,
बस एक बार हमें भी

जातिगत जनगणना से सामाजिक-आर्थिक नीतियों को मिलेगी गति !

हाल ही में केंद्र सरकार ने जाति जनगणना कराने की बात कही है। पाठकों को बताता चलूं कि विपक्षी दल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल समेत कई विपक्षी दल लगातार देश में जाति जनगणना की लगातार मांग करते रहे हैं और अब सरकार ने जाति जनगणना कराने का एक बड़ा और साहसिक कदम उठाया है। इस संबंध में केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने राजनीतिक मामलों पर कैबिनेट कमेटी की बैठक में लिए गए सरकार के इस फ़ैसले की जानकारी देते हुए यह बात कही है कि जातियों की गिनती जनगणना के साथ की जाएगी। गौरतलब है कि 'जनगणना' केंद्र का विषय(संविधान के अनुच्छेद 246 के अनुसार) है और अब सरकार ने जाति जनगणना का जो फैसला किया है,वह काबिले-तारीफ इसलिए है क्यों कि इससे यह पता चल सकेगा कि देश के विभिन्न संसाधनों में दलित, पिछड़े, आदिवासी, अल्पसंख्यक और ग़रीब सामान्य वर्ग के लोगों की कितनी और किस कदर हिस्सेदारी है। संक्षेप में कहें तो जाति जनगणना समाज के अंतिम आदमी के कल्याण का जरिया बन सकेगी। पाठकों को बताता चलूं कि विपक्ष ने सरकार के इस फैसले का पूरा समर्थन व स्वागत किया है, लेकिन विपक्ष ने सरकार को इसकी टाइमलाइन बताने की भी कि इस जातिगत जनगणना का काम कब तक पूरा हो पाएगा, की बात भी साथ ही साथ कही है। यहां यह बात गौरतलब है कि भारत में इससे पहले वर्ष 1931 में जाति जनगणना हुई थी, और उसके बाद देश में होने वाली जनगणनाओं में कभी जातियों की गिनती नहीं की गई थी। गौरतलब है कि जनगणना में दलितों और आदिवासियों की संख्या तो गिनी जाती है, लेकिन पिछड़ी और अति पिछड़ी (ओबीसी और ईबीसी) जातियों के कितने लोग देश में हैं, इसकी गिनती नहीं होती है। पाठकों को बताता चलूं कि अक्सर यह माना जाता है कि देश की कुल आबादी में लगभग 52 फ़ीसदी लोग पिछड़ी और अति पिछड़ी जाति के हैं तथा ओबीसी समुदाय के नेताओं का यह मानना है कि इस हिसाब से उनकी राजनीतिक हिस्सेदारी काफ़ी कम है। इस संबंध में विश्लेषकों का यह भी कहना है कि राजनीतिक दल इन समुदायों का समर्थन हासिल करने के लिए जाति जनगणना का समर्थन कर रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत आज भी विविधतापूर्ण देश है और यहां अनेक जातियों और धर्मों के लोग निवास करते हैं। हमारे देश में तो युगों युगों से जाति सामाजिक संरचना का एक अहम व महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि अब केंद्र द्वारा घोषित जातीय जनगणना विभिन्न जातियों के(ओबीसी , दलित, पिछड़े आदिवासी और अल्पसंख्यकों) के वास्तविक आंकड़ों और प्रतिनिधित्व की स्थिति को दर्शा सकेगी। सच तो यह है कि जाति जनगणना आने वाले समय में हमारे देश में आरक्षण व्यवस्था और न्यायिक समीक्षा के संदर्भ में नीति-निर्धारण के लिए एक ठोस व मज़बूत आधार बन सकती है। यहां यह बात दीगर है कि स्वतंत्रता के बाद से जातिगत जनगणना को 1931 के बाद से नियमित रूप से नहीं किया गया है, केवल अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आंकड़े ही एकत्र किए जाते रहे हैं। हालांकि, 1951 में स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना के समय तत्कालीन सरकार ने अनुसूचित जातियों और जनजातियों को छोड़कर अन्य जातियों की गणना नहीं कराने का निर्णय लिया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यूपीए सरकार के दौरान 2011 की जनगणना में जाति जनगणना हुई थी, लेकिन इसकी रिपोर्ट आम जनता के सामने नहीं आ सकी थी।कहना चाहूंगा कि जातिगत आंकड़ों का अभाव विभिन्न नीति-निर्माण में एक बड़ी बाधा रहा है, साथ ही इसने आरक्षण, विभिन्न सामाजिक कल्याण योजनाओं और संसाधनों के वितरण में कई दफा असमानता को और गहरा ही किया है। यहां यह कहना भी ग़लत नहीं होगा कि केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में घोषित जातीय जनगणना आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट की 50% वाली व्यवस्था वाली बहस को एक नया मोड़ दे सकती है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 1992 के इंदिरा साहनी बनाम भारत सरकार के मामले में सुप्रीम कोर्ट की नौ जजों की पीठ ने यह बात कही थी कि आरक्षण की सीमा 50% से अधिक नहीं होनी चाहिए, अब केंद्र सरकार द्वारा जाति जनगणना की बात से इस बहस को कहीं न कहीं नया मोड़ मिल सकेगा। बहरहाल , यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आरक्षण के मामले में हालांकि, माननीय कोर्ट ने ओबीसी के लिए 27% आरक्षण(मंडल आयोग) को मंजूरी दी, लेकिन साथ ही क्रीमी लेयर को इससे बाहर करने और असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर कुल आरक्षण सीमा पर रोक भी लगाई थी।इसके बाद भी कई बार केंद्र और राज्यों द्वारा इस सीमा से ऊपर आरक्षण देने की कोशिशें की गईं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने हर बार आंकड़ों और तथ्यों की मांग करते हुए इन्हें खारिज कर दिया। मसलन, सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2014 में जाट समुदाय को ओबीसी सूची में शामिल करने की यूपीए सरकार की कोशिश को खारिज कर दिया। बहरहाल,जानकारों का यह मानना है कि अगर जातिगत गणना हुई तो ओबीसी को 27 फीसदी कोटा बढ़ाने की मांग उठेगी। पाठकों को बताता चलूं कि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को वर्ष 2019 में केंद्र के 10 फीसदी आरक्षण देने के बाद से ही इसकी लगातार मांग की जा रही है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा मराठा आरक्षण बढ़ाने के कानून को भी सुप्रीम कोर्ट ने रद्द कर दिया था, क्योंकि इससे 50% आरक्षण की सीमा पार हो रही थी। बहरहाल, पिछले कुछ सालों से देश में जातिगत जनगणना विपक्षी दलों की एक प्रमुख और अहम मांग रही है। पाठकों को बताता चलूं कि बिहार में महागठबंधन की सरकार के दौरान वर्ष 2023 में जातिगत सर्वे के आंकड़े जारी किए गए थे। उस वक्त नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू और आरजेडी की राज्य में सरकार थी। उल्लेखनीय है कि बिहार के 2023 के सर्वे के अनुसार, ओबीसी और अत्यंत पिछड़े वर्ग (ईबीसी) राज्य की कुल आबादी का 63% से अधिक हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि बाद में तेलंगाना और कर्नाटक जैसे कुछ गैर बीजेपी शासित राज्यों में जाति आधारित सर्वे भी कराए गए हैं। वास्तव में बिहार के 2023 के जातिगत सर्वेक्षण के मुद्दे के बाद विपक्ष केंद्र पर इसे(जातीय जनगणना) राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने का दबाव बना रहा था।हाल फिलहाल , मोदी सरकार ने इस मांग को स्वीकार कर लिया है और विपक्षी दलों को शान्त कर दिया है। बिहार एक जातिप्रधान राज्य है, जहां इसी वर्ष विधानसभा भी चुनाव होने हैं, ऐसे में केंद्र सरकार का यह निर्णय एनडीए के लिए रणनीतिक फायदे की स्थिति भी बना सकता है।हालांकि, यह बात अलग है कि जातिगत जनगणना का महत्व केवल राजनीतिक लाभ तक ही सीमित नहीं है, सरकार के इस निर्णय से कहीं न कहीं सामाजिक न्याय की भावना को बल मिल सकेगा, वहीं दूसरी ओर इससे समावेशी विकास भी सुनिश्चित हो सकेगा।जातीय जनगणना से यह भी पता चल सकेगा कि विभिन्न जातीय समूहों की सामाजिक आर्थिक स्थिति क्या और कैसी है। समाज के जातिगत ढांचे के बारे में जानकारी प्राप्त होने से इन जातीय समूहों के उत्थान और विकास के लिए रणनीतियां तैयार की जा सकती हैं, लेकिन जातीय जनगणना कराना कोई आसान काम नहीं होगा,यह एक हरक्यूलियन टास्क होगा, क्यों कि भारत जातियों की विविधता वाला देश है और यहां हजारों जातियां-उपजातियां निवास करतीं हैं। यहां पर यदि हम आंकड़ों की बात करें तो 1901 की जनगणना से पता चला कि भारत में 1646 जातियां हैं। तथा 1931 की जनगणना होने तक यह संख्या 4147 जातियों तक पहुंच गई। उसके मुकाबले अब अकेले ओबीसी में हजारों जातियां हैं। 1980 में मंडल आयोग ने बताया था कि उसने 3428 जातियों की पहचान ओबीसी के रूप में की थी। वर्ष 2011 के एसईसीसी में राष्ट्रीय स्तर पर 46 लाख जातियों, उपजातियों का आंकड़ा बहुत बड़ा पाया गया था। इतना ही नहीं,राष्ट्रीय और राज्यों के स्तर पर जातियों के मामले में बहुत घालमेल है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ओबीसी की सेंट्रल लिस्ट में जहां करीब ढाई हजार जातियां हैं, वहीं राज्यों के स्तर पर ओबीसी में 3 हजार से ज्यादा जातियां हैं। कई ऐसी जातियां हैं, जो स्टेट ओबीसी लिस्ट में हैं, लेकिन सेंट्रल ओबीसी लिस्ट में नहीं हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि जातीय जनगणना एक बड़ा व टेढ़ा काम है। जातीय आंकड़े एकत्र करने के लिए एक सुव्यवस्थित और पारदर्शी तंत्र की जरूरत होगी, और जातिगत जनगणना को लागू करना भी इतना आसान नहीं होगा। जातीय जनगणना के बाद सरकार को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इन आंकड़ों का(जातीय जनगणना के आंकड़ों का) सदुपयोग हो। अंत में यही कहूंगा कि केंद्र सरकार का जातिगत जनगणना कराने का फैसला एक महत्वपूर्ण व बड़ा कदम है। निश्चित ही इससे देश में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में मदद मिल सकेगी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

पत्रकारिता: एक मशाल, एक मिशन, एक मर्सिया

एक कलम, कुछ शब्द, और सत्य की ताकत—यह वह हथियार है जो सत्ता के तख्त को हिला सकता है। लेकिन इस हथियार की कीमत क्या है? कभी-कभी स्याही, और कभी-कभी खून। विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस, जो हर 3 मई को आता है, केवल एक तारीख नहीं है। यह एक चीख है—उन पत्रकारों की, जिन्होंने सच के लिए अपनी जान दी। यह एक चुनौती है—उन सत्ताओं को, जो सवालों से डरती हैं। और सबसे बढ़कर, यह एक आह्वान है—हर उस इंसान के लिए, जो सच सुनना, सवाल पूछना, और न्याय की उम्मीद करना चाहता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब सत्ता स्याही से डरने लगे, तो समझ लीजिए कि कलम सही रास्ते पर है। लेकिन यह रास्ता सिर्फ कागज पर नहीं लिखा जाता—यह धमकियों, मुकदमों, सेंसरशिप, और खून से तर रास्तों से होकर गुजरता है।

पत्रकारिता कोई नौकरी नहीं, एक जंग है। यह जंग सच और झूठ के बीच, सत्ता और जनता के बीच, अंधेरे और रोशनी के बीच लड़ी जाती है। जब कोई पत्रकार युद्ध के मैदान से, भ्रष्टाचार की काली गलियों से, या वंचित गांवों की अनसुनी कहानियों को दुनिया के सामने लाता है, वह सिर्फ खबर नहीं लिखता। वह इतिहास के पन्नों पर सत्य को अमर करता है। वह उन आवाजों को बुलंद करता है, जो सत्ता के शोर में खो जाती हैं। लेकिन इस साहस की कीमत भारी है। 2024 में, रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया भर में 60 से अधिक पत्रकारों को उनके काम के लिए मार दिया गया, और 500 से ज्यादा जेल में बंद हैं। ये आंकड़े सिर्फ संख्याएं नहीं, बल्कि उन सपनों की चीत्कार हैं, जो सच के लिए कुचल दिए गए। फिर भी, ये पत्रकार अपनी कलम को तलवार बनाकर लड़ते हैं, ताकि हम एक लोकतांत्रिक समाज में सांस ले सकें।

प्रेस की आज़ादी कोई स्थायी खजाना नहीं, जिसे एक बार हासिल कर लिया तो हमेशा सुरक्षित रहे। यह एक नाजुक धागा है, जो सत्ता के एक झटके से टूट सकता है। जब सरकारें आलोचना को देशद्रोह मानने लगें, जब राष्ट्रवाद का नकाब सवाल उठाने वालों को चुप कराने के लिए इस्तेमाल हो, तब प्रेस स्वतंत्रता एक नारा नहीं, बल्कि एक क्रांति बन जाती है। यह क्रांति ज़रूरी है। क्योंकि जब सत्ता निरंकुश हो, तो एक स्वतंत्र प्रेस ही जनता की आखिरी उम्मीद होती है। भारत जैसे देश में, जहां लोकतंत्र की जड़ें गहरी हैं, वहां भी यह आज़ादी खतरे में है। पत्रकारों पर "राष्ट्रविरोधी" ट्वीट्स के लिए केस, डिजिटल मीडिया पर निगरानी, और ट्रोल आर्मी के हमले—ये सब प्रेस की सांसों को घोटने की साजिशें हैं। फिर भी, कुछ निडर पत्रकार अपनी आवाज़ को बुलंद रखते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उनकी चुप्पी कई पीढ़ियों को गूंगा बना सकती है।

आज का दौर सिर्फ कागज की पत्रकारिता का नहीं। डिजिटल क्रांति ने प्रेस की पहुंच को बढ़ाया है, लेकिन खतरों को भी कई गुना कर दिया है। एक ट्वीट को "राष्ट्रविरोधी" करार देना, एक पोस्ट को सेंसर करना, या एक पत्रकार को ऑनलाइन धमकियां देना—यह सब अब चंद सेकंड का खेल है। साइबर हमले, डेटा चोरी, और डिजिटल निगरानी पत्रकारों के लिए नई जंजीरें हैं। लेकिन यही डिजिटल मंच वह ताकत भी है, जहां सत्य की आवाज़ें गूंज रही हैं। स्वतंत्र पत्रकार, ब्लॉगर, और नागरिक पत्रकारिता ने दिखाया है कि सत्य को जंजीरों में नहीं बांधा जा सकता। फिर भी, इस आज़ादी को बचाने की ज़िम्मेदारी सिर्फ पत्रकारों की नहीं, हमारी भी है। क्योंकि जब प्रेस चुप होता है, तो समाज की आत्मा भी मौन हो जाती है।

सोचिए, अगर अखबार सिर्फ सत्ता के गुणगान छापें, न्यूज़ चैनल सरकार की कठपुतली बन जाएं, और सोशल मीडिया पर सेंसरशिप की तलवार लटके, तो सच्चाई कहां बचेगी? ऐसी दुनिया में हमारी आवाज़ें गुलाम हो जाएंगी। इसलिए विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस सिर्फ पत्रकारों का दिन नहीं। यह हर उस इंसान का दिन है, जो सच जानना चाहता है, जो सवाल पूछना चाहता है, जो अन्याय के खिलाफ खड़ा होना चाहता है। यह दिन हमें यह सिखाता है कि प्रेस की आज़ादी हमारी अपनी आज़ादी है। इसे बचाना हमारा धर्म है।

पत्रकारिता का साहस सिर्फ जेल की सलाखों या बंदूक की नोक पर ही नहीं दिखता। यह उस छोटे से न्यूज़रूम में भी चमकता है, जहां एक युवा पत्रकार अपनी पहली स्टोरी लिखते वक्त सोचता है कि क्या यह सच बोलने लायक है। यह उस स्वतंत्र पत्रकार की हिम्मत में झलकता है, जो बिना किसी बड़े मीडिया हाउस के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करता है। यह उस महिला पत्रकार की आवाज़ में गूंजता है, जो लैंगिक हिंसा की कहानियों को सामने लाती है, भले ही उसे ऑनलाइन गालियों और धमकियों का सामना करना पड़े। ये लोग हमारे समाज के असली सिपाही हैं। इनकी कलम हमारी मशाल है।

इसलिए, इस 3 मई को हम सिर्फ प्रेस की आज़ादी की बात न करें। हम उस दुनिया की बात करें, जहां सच बोलना अपराध नहीं, बल्कि गर्व की बात हो। हमें उन नीतियों की मांग करनी चाहिए, जो पत्रकारों को बिना डर के काम करने की आज़ादी दें। हमें उन कानूनों का विरोध करना चाहिए, जो सवालों को कुचलने की कोशिश करते हैं। हमें उन मंचों को मज़बूत करना चाहिए, जो स्वतंत्र पत्रकारिता को पंख देते हैं। और सबसे ज़रूरी, हमें खुद को जागरूक करना चाहिए—ताकि हम झूठ और सच का फर्क समझ सकें।

प्रेस की आज़ादी की लड़ाई कोई एक दिन का उत्सव नहीं। यह एक अनवरत युद्ध है, जो तब तक लड़ा जाएगा, जब तक आखिरी सवाल पूछने वाला ज़िंदा है। यह लड़ाई सिर्फ पत्रकारों की नहीं, हम सबकी है। क्योंकि एक निडर कलम ही वह ज्योति है, जो अंधेरे में रास्ता दिखाती है। इस विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर हम कसम खाएं—हम सत्य के साथ खड़े होंगे, हम सवाल पूछेंगे, और हम उस समाज को बनाएंगे, जहां सच की आवाज़ को कभी दबाया न जा सके। क्योंकि जब तक कलम चलती है, लोकतंत्र की धड़कनें थमती नहीं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

वर्ल्ड लाफ्टर डे: बिना शब्दों की सबसे सुंदर भाषा, [हँसी: वह अनहद राग, जो दिलों की सरहद मिटा दे]

हँसी — वह अनमोल राग, जो बिना शब्दों के दिलों को बाँध लेता है, वह चिंगारी, जो एक पल में उदासी के अंधेरों को रोशन कर देती है। क्या आपने कभी महसूस किया कि एक ठहाका कितनी सहजता से अनजान चेहरों को अपनों में बदल देता है? फिर भी, आज की दुनिया में, जहाँ तनाव की काली छायाएँ, अकेलेपन की ठंडी दीवारें और डिजिटल स्क्रीनों का शोर हमारी मुस्कान को छीन रहा है, हँसी एक दुर्लभ हीरा बन गई है। जब दुनिया की सबसे सस्ती दवा भी सबसे असरदार हो, तो उसे अपनाने में देर कैसी? मई के पहले रविवार को मनाया जाने वाला वर्ल्ड लाफ्टर डे सिर्फ एक दिन नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी पुकार है — हँसो, क्योंकि यही वह जादुई शक्ति है, जो नफरत की दीवारों को ढहा सकती है, टूटे दिलों को जोड़ सकती है, और दुनिया को इंसानियत का सबसे सुंदर रंग दे सकती है।

इस अप्रतिम उत्सव की जड़ें भारत की पवित्र मिट्टी में हैं, जहाँ एक साधारण चिकित्सक ने हँसी को दवाइयों से कहीं ज़्यादा ताकतवर माना। 1998 में, डॉ. मदन कटारिया ने मुंबई के एक छोटे से पार्क में पाँच लोगों के साथ लाफ्टर योग की नींव रखी। न कोई मंच, न कोई स्क्रिप्ट, न कोई चुटकुला — सिर्फ शुद्ध, बे-वजह की हँसी। यह छोटा सा बीज इतना शक्तिशाली था कि वह एक वैश्विक वटवृक्ष बन गया। आज 100 से ज्यादा देशों में लाखों लोग लाफ्टर क्लब्स में इकट्ठा होते हैं, जहाँ वे बिना किसी मजाक के, बिना किसी कारण के, सिर्फ हँसने के लिए मिलते हैं। यह हँसी भाषा, संस्कृति, धर्म और सीमाओं को लांघकर एक ऐसी ऊर्जा बन जाती है, जो हर दिल को एकसाथ गूंथ लेती है। यह आंदोलन सिर्फ खुशी का प्रचार नहीं करता, बल्कि यह सिखाता है कि हँसी वह अनमोल सेतु है, जो टूटी हुई दुनिया को फिर से एक कर सकता है।

विज्ञान भी इस जादुई शक्ति के सामने नतमस्तक है। जब हम हँसते हैं, हमारा शरीर एंडोर्फिन, डोपामाइन और सेरोटोनिन जैसे रसायनों का उत्सर्जन करता है, जो तनाव को पिघला देते हैं और मन को शांति की गहरी अनुभूति देते हैं। एक अच्छी हँसी रक्तचाप को नियंत्रित करती है, हृदय को ताकत देती है, और इम्यून सिस्टम को इतना मज़बूत बनाती है कि बीमारियाँ भी पीछे हटने को मजबूर हो जाएँ। शोध बताते हैं कि रोज़ाना 10-15 मिनट की हँसी योग जैसी हल्की हँसी न केवल जिम में घंटों मेहनत करने जितनी फायदेमंद है, बल्कि यह मस्तिष्क में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाकर एकाग्रता और रचनात्मकता को भी प्रज्वलित करती है। गंभीर बीमारियों, जैसे कैंसर या डिप्रेशन से जूझ रहे मरीज़ों के लिए हँसी एक ऐसी संजीवनी बनती है, जो दर्द को हल्का करती है और जीवन को नए अर्थ देती है। लेकिन हँसी का कमाल सिर्फ शरीर और मन तक सीमित नहीं — यह आत्मा को भी छूती है, हमें हमारी मानवता से जोड़ती है।

जब आप किसी के साथ दिल खोलकर हँसते हैं, तो उस पल में सारी दूरियाँ, सारे भेदभाव गायब हो जाते हैं। दो अजनबी, जो शायद कभी एक-दूसरे की भाषा न समझें, एक ठहाके में दोस्त बन जाते हैं। वर्ल्ड लाफ्टर डे इसी शाश्वत सत्य पर खड़ा है। यह दिन सिर्फ हँसी का उत्सव नहीं, बल्कि वैश्विक एकता का प्रतीक है। सवाल उठता है — क्या वाकई हँसी से दुनिया बदली जा सकती है? क्या एक मुस्कान वैश्विक संवाद की भाषा बन सकती है? जवाब है — हाँ, और यही जवाब वर्ल्ड लाफ्टर डे हर साल सिद्ध करता है। जब दुनिया भर के लोग एक ही दिन, एक ही समय पर हँसते हैं, तो वह सिर्फ ध्वनि नहीं, बल्कि एक ऐसी लहर होती है, जो नफरत, डर और विभाजन के खिलाफ़ खड़ी होती है। यह एक ऐसी क्रांति है, जो बिना खूनखराबे, बिना शोर, सिर्फ मुस्कान के साथ लड़ी जाती है।

आज का युग, जहाँ तकनीक ने हमें जोड़ा भी है और तोड़ा भी, हँसी को इमोजी और रील्स की कैद में बाँध दिया है। हम लाइक, कमेंट और फॉलो की भूलभुलैया में खो गए हैं, लेकिन वर्ल्ड लाफ्टर डे हमें असली दुनिया में लौटाता है — जहाँ हँसी स्क्रीन पर नहीं, दिलों में बसती है। यह हमें सिखाता है कि हँसी के लिए न तो पैसा चाहिए, न मंच, न कोई खास प्रतिभा। बस एक इच्छा चाहिए — और थोड़ा सा साहस, कि हम बिना वजह हँस सकें। चाहे आप किसी लाफ्टर क्लब में शामिल हों, अपने परिवार के साथ हल्की-फुल्की बातों पर ठहाके लगाएँ, या अकेले में अपनी पसंदीदा कॉमेडी देखकर मुस्कुराएँ — हर हँसी आपके भीतर की उदासी को पिघलाती है, आपको थोड़ा और ज़िंदा बनाती है।

हँसी की सबसे अनमोल खूबसूरती यह है कि यह हर किसी के लिए है। यह न तो अमीर-गरीब का भेद मानती है, न उम्र की सीमा, न देश की सरहद। लाफ्टर योग के सत्रों में लोग बिना किसी कारण के हँसते हैं, और यही बे-वजह की हँसी सबसे गहरी होती है। यह हमें याद दिलाती है कि खुशी बाहर की चीज़ों पर निर्भर नहीं, बल्कि हमारे भीतर की एक अनंत धारा है। आज, जब

मानसिक अवसाद, तनाव और अकेलापन हमारी सबसे बड़ी चुनौतियाँ बन चुके हैं, हँसी एक ऐसी दवा है, जो बिना किसी दुष्प्रभाव के हर घाव को हल्का कर सकती है। यह वह साधन है, जो बिना पैसे, बिना शर्त, हमें सुकून और आनंद देता है।

वर्ल्ड लाफ्टर डे का एक और अनोखा पहलू है इसका वैश्विक प्रभाव। यह दिन हमें सिखाता है कि हँसी सिर्फ व्यक्तिगत सुख नहीं, बल्कि सामूहिक शक्ति है। जब समुदाय, गाँव, शहर और देश एकसाथ हँसते हैं, तो वह ऊर्जा सिर्फ हवा में नहीं गूंजती, बल्कि सामाजिक तनावों को कम करती है, समुदायों को मज़बूत करती है, और शांति की नींव रखती है। इतिहास गवाह है कि हँसी ने कई बार तनावग्रस्त परिस्थितियों को हल्का किया है — चाहे वह परिवारों में छोटे-मोटे झगड़े हों, या सामाजिक समारोहों में अनजान लोगों के बीच की हिचक। हँसी वह भाषा है, जो बिना अनुवाद के समझी जाती है, वह दर्पण है, जिसमें हर इंसान अपनी सबसे खूबसूरत छवि देख सकता है।

जब दुनिया युद्ध, अवसाद और टूटन से जूझ रही हो, तब हँसी एक ऐसी क्रांति बन सकती है, जो बिना हथियार, बिना शोर, सिर्फ मुस्कान के साथ लड़ी जाए। वर्ल्ड लाफ्टर डे हमें यही विश्वास देता है कि छोटी-छोटी मुस्कानें बड़े बदलाव ला सकती हैं। यह हमें बताता है कि हँसी सिर्फ एक भावना नहीं, बल्कि एक ज़िम्मेदारी है — अपने लिए, अपने आसपास के लोगों के लिए, और उस दुनिया के लिए, जो अभी भी प्यार, एकता और उम्मीद की तलाश में है।

इस वर्ल्ड लाफ्टर डे हँसी को दिल की गहराइयों से गले लगाएँ और संकल्प लें — कि हँसी अब सिर्फ एक दिन की मेहमान नहीं, बल्कि हमारी ज़िंदगी का सबसे चटकीला रंग होगी। दोस्तों, परिवार, यहाँ तक कि अनजान चेहरों के साथ ठहाके लगाएँ। उन बेपरवाह पलों को फिर जियें, जब हँसी बिना वजह हमारे होंठों पर नाचती थी। क्योंकि जब हम हँसते हैं, हम न सिर्फ खुद को, बल्कि पूरी दुनिया को और खूबसूरत बनाते हैं। हँसी वो लय है, जो हर दिल को छूती है; वो रंग, जो हर आँख को सुकून देता है। यह वो अनमोल ताकत है, जो हमें याद दिलाती है कि हम इंसान हैं — नाज़ुक, नन्हा, मज़बूत, मस्त, और सबसे बढ़कर, एक-दूसरे के साथ दिल से जुड़े हुए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

मज़दूर का पसीना उसका संघर्ष और चुनौती....

मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे देना चाहिए। मज़दूर का पसीना एक ऐसा शब्द है जो हमें उनके श्रम और मेहनत की याद दिलाता है जो हमारे समाज की रीढ़ हैं। मज़दूर वर्ग के लोग अपने दिन-रात के परिश्रम से हमारे जीवन को सुगम और सुविधाजनक बनाते हैं। मज़दूर का पसीना एक ऐसा प्रतीक है जो उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण को दर्शाता है। चाहे वह निर्माण स्थल पर काम करने वाला मजदूर हो, कारखाने में काम करने वाला श्रमिक हो, या खेत में काम करने वाला किसान हो, हर कोई अपने पसीने से हमारे लिए अनमोल योगदान देता है।

मज़दूर का पसीना एक ऐसा शब्द है जो हमें उनके संघर्षों और चुनौतियों की याद दिलाता है। मज़दूर वर्ग के लोग अक्सर कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं, जैसे कि गर्मी, सर्दी, बारिश, और धूल। इसके बावजूद, वे अपने काम को ईमानदारी और निष्ठा से करते हैं।

मज़दूर का पसीना एक ऐसा प्रतीक है जो हमें उनके महत्व को समझने की याद दिलाता है। मज़दूर वर्ग के लोग हमारे समाज की रीढ़ हैं और उनके बिना हमारा जीवन असंभव होगा।

आइए, हम मज़दूर वर्ग के लोगों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करें और उनके योगदान को पहचानें। उनके पसीने और मेहनत को सलाम!

डॉ. मुस्ताक अहमद शाह हरदा मध्य प्रदेश.

सामाजिक समरसता के संवाहक संत रामानुजाचार्य

सुशील कुमार 'नवीन'

सामाजिक समरसता के संवाहक संत रामानुजाचार्य की शुक्रवार को जयंती मनाई गई। वे एक महान हिन्दु दार्शनिक तथा विचारक के साथ-साथ श्री वैष्णववाद के दर्शन में सर्वाधिक प्रतिष्ठित आचार्य रहे हैं। उनका जन्म 11वीं शताब्दी में 1017 ई.पू में तमिलनाडु के श्रीपेरुमबुदुर में हुआ था। उनके बचपन का नाम लक्ष्मण था। उन्हें इलैया पेरुमल के नाम से भी जाना जाता है जिसका अर्थ है उज्ज्वल। रामानुज नाम उन्हें उनके मामा ने दिया था। 1137 ई. में तमिलनाडु के श्रीरंगम में 120 वर्ष की आयु में अन्तर्धान हो गये थे। प्रत्येक वर्ष श्री रामानुज जयन्ती मनाई जाती है। जयन्ती का निर्धारण तमिल सौर कैलेण्डर के आधार पर किया जाता है। रामानुज जयन्ती चिथिरई माह के समय तिरुवथिराई नक्षत्र के दिन मनायी जाती है। जिसके तहत इस बार 2 मई को उनकी जयंती मनाई गई।

उनका जन्म वैशाख शुक्ल षष्ठी,1017) को हुआ था। पिता का नाम केशवाचार्य और माता जी का नाम कान्तिमती था। बचपन से ही उनकी बुद्धि विलक्षण थी। 15 वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने सभी शास्त्रों का गहन अध्ययन कर लिया था। 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह रक्षम्बा के साथ हुआ। सात वर्ष गृहस्थ आश्रम का निर्वहन कर 23 वर्ष की आयु में घर त्यागकर श्रीरंगम के यदिराज संन्यासी से दीक्षा ली।

संत रामानुजाचार्य एक प्रमुख भारतीय धार्मिक विचारक और वैष्णव आचार्य थे। उन्होंने विशिष्टाद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को प्रस्थापित किया और अपने ग्रंथों और उपनिषदों के व्याख्यानों के माध्यम से जनमानस को इस धार्मिक दर्शन के सिद्धांतों से परिचित कराया।

संत रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैत वेदांत के प्रमुख प्रतिष्ठाता थे, उनका मानना था कि जीवात्मा और परमात्मा में अंतर नहीं होता, बल्कि वे एक-समान होते हैं। उनका धार्मिक दृष्टिकोण भक्ति और प्रेम पर केंद्रित था, और उन्होंने विष्णु भगवान के प्रति भक्ति को महत्व दिया। उन्होंने वेदांत दर्शन को जन सामान्य तक सरल रूप में समझाने का प्रयास किया।

संत रामानुजाचार्य ने वेदांत के सिद्धांतों को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक ग्रंथों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनाएं श्रीभाष्य, गीता भाष्य, वेदार्थसंग्रह, गद्यत्रय आदि हैं। उनके द्वारा रचित ग्रंथों में भक्ति, सेवा, और समाज सेवा के महत्व को बड़ा बल दिया गया है। उनके विचार और सिद्धांत आज भी लोगों के हृदय में बसे हुए हैं और उन्हें एक महान आध्यात्मिक आचार्य के रूप में याद किया जाता है। वे वैष्णव मत के प्रसिद्ध संत भक्त माने जाते हैं। उन्होंने हिन्दू समाज के पिछड़े वर्ग की पीड़ा और उपेक्षा को हृदय से अनुभव किया। उस समय की प्रचलित सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठान पद्धतियों में यथा संभव सुधार तथा नई अनुष्ठान पद्धतियों की रचना भी की। सभी जात-वर्गों के लिए सर्वोच्च आध्यात्मिक उपासना के द्वार, लोगों की आलोचना के बावजूद उन्होंने खोल दिए। इस कार्य के लिए उनको स्थान-स्थान पर भारी विरोध का सामना करना पड़ा। वे सामाजिक दृष्टि से वर्णव्यवस्था के अन्दर किसी भी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नहीं करते थे। उनके अनेक शिष्य निम्न कही जाने वाली जातियों से थे। भगवान की रथयात्रा के अवसर पर तथाकथित निम्न जातियों वाले ही रथ पहले खींचते थे। वही परम्परा आज भी चली आ रही है। उन्होंने वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। उनका कथन था कि मन की कलुषता को समाप्त करो। न जातिः कारणं लोके गुणाः कल्याणहेतवः - अर्थात जाति नहीं, वरन गुण ही कल्याण का कारण है। संत रामानुजाचार्य के अनुसार, समरसता का अभिप्राय सभी व्यक्तियों के बीच धार्मिक और सामाजिक समानता को प्रोत्साहित करना था। उन्होंने समाज में जाति, धर्म, और समुदाय के आधार पर भेदभाव को खत्म करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि भगवान की अनंत कृपा और प्रेम हर जीव को समरस बनाती है। वह सभी को समानता के साथ देखते थे और हर एक को आत्मिक स्वतंत्रता का अधिकार माना। उन्होंने धार्मिक समृद्धि को प्राप्त करने के लिए जाति और जातिवाद के खिलाफ लड़ा और समाज में समरसता की बात की। उनकी सामाजिक दृष्टि, धार्मिक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक समरसता और समाज के विकास को भी समझने की दिशा में थी। उनकी धर्म के प्रति गहरी आस्था थी, इसीलिए उन्होंने धर्म को सामाजिक जीवन के हर पहलू से जोड़ा। उन्होंने न केवल सामाजिक दृष्टिकोण के माध्यम से जातिवाद का विरोध किया वही समाज को जाति और वर्ण के विभाजन के विरुद्ध एकता और समरसता के प्रति भी प्रोत्साहित किया। यही नहीं उन्होंने समाज को धार्मिक और सामाजिक संबलता के लिए शिक्षा का महत्व बताकर इसकी प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित भी किया। उन्होंने रामेश्वरम से लेकर बद्रीनाथ तक यात्रा की। आलवार भक्तों के तीर्थस्थानों की यात्रा व उत्तर भारत की यात्रा में काशी, अयोध्या, बद्रीनाथ, कश्मीर, जगन्नाथपुरी, द्वारिका आदि तीर्थस्थलों पर अपने आध्यात्मिक तथा सामाजिक विचारों को लेकर गए।

संत रामानुजाचार्य के समय समाज में जातिवाद बहुत प्रभावशाली रूप में विद्यमान था। उन्होंने सभी को समान दृष्टि से देखा और समाज में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव जागृत किया। स्वामी विवेकानंद जी ने अपने शिकागो के भाषण में संत रामानुजाचार्य का जिक्र किया था - उन्होंने कहा था कि संत रामानुजाचार्य ने उच्च और निम्न जाति के लोगों के बीच समानता की भावना जागृत की। । सामाजिक जागरण का महान कार्य करते हुए संत रामानुजाचार्य 120 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हुए। संत रामानुजाचार्य के विचार आज भी समाज के सभी वर्गों के उत्थान और कल्याण के लिए प्रेरणास्त्रोत है। बृहदारण्यक उपनिषद का एक प्रसिद्ध मंत्र है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत।

अर्थातः सभी लोग सुखी हों, सभी निरोगी रहें, सभी भलाई देखें, और किसी को भी दुःख न हो।

झारखंड के पलामू में नक्सली व पुलिस के बीच गोलीबारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। पलामू जिले के तरहसी थाना क्षेत्र के सिंजो महुअरी गांव में आज प्रतिबंधित नक्सली संगठन तृतीय प्रस्तुति कमेटी (टीपीसी) और पुलिस के बीच मुठभेड़ हो गयी. इस मुठभेड़ में पुलिस ने भारी मात्रा में नक्सल सामग्री बरामद की है. पूरे इलाके की घेराबंदी कर पुलिस सर्च अभियान चला रही है. नक्सली जंगल का फायदा उठाते हुए भाग निकले. मुठभेड़ में किसी के हताहत होंने खबर नहही.पलामू पुलिस को सूचना मिली थी कि तरहसी के सिंजो महुअरी के पहाड़ी इलाके में 10 लाख के इनामी नक्सली कमांडर शशिकांत गंझू के नेतृत्व में एक दस्ता किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए पहुंचा हुआ है. इस सूचना के आलोक में एएसपी अभियान राकेश कुमार सिंह के नेतृत्व में पुलिस ने सर्च अभियान शुरू किया गया. सर्च अभियान के क्रम में टीपीसी के नक्सलियों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी. पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई में फायरिंग की. इसके बाद इलाके में सर्च अभियान चलाया जा रहा है.मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए तरहसी थाना प्रभारी नीरज कुमार ने बताया कि शुक्रवार को करीब 11 बजे पीपीसी के साथ मुठभेड़ हुई है और पूरे इलाके में सर्च अभियान चलाया जा रहा है. सर्च अभियान में पुलिस की टीम ने कई नक्सल सामग्री बरामद की है. उन्होंने बताया कि आक्रमण गंझू के पकड़े जाने के बाद 10 लाख के इनामी नक्सली कमांडर शशिकांत गंझू ही टीपीसी की जिम्मेवारी संभाल रहा है. शशिकांत गंझू पर पलामू के इलाके में दर्जनों नक्सली घटनाओं को अंजाम देने का आरोप है. मुठभेड़ स्थल से पुलिस ने कई नक्सल सामग्री डायरी बरामद.

अवैध निकासी के कारण चर्चित प० सिहभूम के शिक्षा विभाग में पुनः निकासी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। झारखंड की लौह ,मैगनीज अयस्क भरा अमीर धरती पर बसा शैक्षणिक , आर्थिक, कुपोषित पिछड़ापन झेल रहा जिला में जिला शिक्षा परियोजना शिक्षा विभाग में वित्तीय अनियमितता की शिकायत की जांच फिर से चर्चा का विषय बना हुआ है . जहां सोनुआ प्रखंड के लेखापाल रोमा चक्रवर्ती पर 6 लाख 24 हजार रुपये की अवैध निकासी का आरोप है वहीं जिला शिक्षा अधीक्षक टोप्पो ने कहा कि ऐसी कोई हमें सूचना हनी है यद्यपि शिकायत पर हम जांच कर रहे हैं। वैसे उपायुक्त से लेकर सचिव तक शिकायत कर्ता ने आवेदन दे रखा है .

इस मामले में जिले के उपायुक्त के साथ-साथ राज्य के मुख्य सचिव, मुख्यमंत्री और राज्यपाल के प्रधान सचिव को शिकायत पत्र भेजा गया है

शिकायतकर्ता का आरोप है कि लेखापाल ने विद्यालयों के इक्को क्लब और पीटीएम मद की राशि गलत तरीके से निकाली. उन्होंने दावा किया कि शिक्षकों द्वारा दिये गये वेंडरों के बिल को अमान्य बताते हुए अपने पसंदीदा वेंडर के बिल पर जबरन हस्ताक्षर कराये गये और फिर पी एफ एम एस पोर्टल पर खुद से ही बिल अपलोड कर राशि की निकासी कर ली गयी.शि

शिकायत में यह भी कहा गया है कि इस निकासी की जांच पी एफ एम एस पोर्टल पर किये गये लॉगिन और आई पी एड्रेस से आसानी से की जा सकती है. शिकायत में यह भी कहा गया है कि जब शिक्षकों ने अपने स्कूलों के इक्को क्लब और पीटीएम की राशि की मांग की तो उन्हें यह कहकर टाल दिया गया कि राशि लैप्स हो चुकी है.सनद रहे कि यह वही जिला रहा है जहा 1996 में तत्कालीन बिहार में दो हजार करोड़ रुपए का पशुपालन घोटाला का उद्भेदन तत्कालीन उपायुक्त अमित खरे ने की थी .जिससे देश के राजनीति में भूचाल आ गया था । तत्कालीन उप विकास आयुक्त वरीय आई ए एस अधिकारी एस सिद्धार्थ अब बिहार के शिक्षा सचिव के पद पर कार्यरत हैं जबकि अमित खरे को अपनी ईमानदारी के कारण सेवा विस्तार मिला है ,वे प्रधानमंत्री कार्यालय में अब तैनात हैं ।

आवेदन में प० सिंहभूम के विद्यालयों को मिलने वाली अनुदान राशि में भी अनियमितता बरती गयी है. आरोप है कि लेखापाल द्वारा प्रत्येक विद्यालय को 4 से 8 हजार रुपये से लेकर 25,000 रुपये तक की राशि का भुगतान मनमाने ढंग से किया गया । आरोपी केशियर के पुर्व शिकायतों पर कार्रवाई न होना इलाके में चर्चो का विषय बना हुआ है।

कटक बड़ा मेडिकल कॉलेज तक चलेगी मेट्रो ट्रेन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य में मेट्रो रेल परियोजना की तैयारियां शुरू होने के बीच आवास एवं शहरी विकास मंत्री कृष्ण चंद्र महापात्रा ने इस मामले पर बड़ी जानकारी दी है। अब मेट्रो परियोजना का विस्तार न केवल त्रिशूलिया तक, बल्कि कटक बड़ा मेडिकल कॉलेज तक भी किया जाएगा। मंत्री ने बताया कि भुवनेश्वर हवाई अड्डे से विस्तार को त्रिशूलिया के बजाय कटक बड़ा मेडिकल कॉलेज तक बढ़ाया जाएगा।मंत्री के अनुसार, मेट्रो परियोजना को कटक बस स्टैंड और कटक बड़ा मेडिकल कॉलेज तक विस्तारित किया जाएगा। मेट्रो के लिए एक समिति गठित की गई है। यह समिति विभिन्न शहरों का दौरा कर अनुसंधान कर रही है। नई डीपीआर भी तैयार की जा रही है। मंत्री ने कहा कि इस मेट्रो परियोजना के लिए न केवल राज्य निधि से बल्कि केंद्रीय सहायता से भी सहायता प्रदान की जाएगी।

हालांकि, दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन की ओर से पहले दी गई जानकारी के अनुसार, जब मेट्रो का काम शुरू हो चुका है, तो शुरुआती चरण में भुवनेश्वर एयरपोर्ट से त्रिशूलिया तक मेट्रो लाइन का निर्माण किया जाएगा। इस पर 6,255 करोड़ रुपये खर्च

होंगे। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने तीन चरणों में 19 मेट्रो स्टेशनों और मेट्रो रेल पटरियों के निर्माण के लिए निविदाएं आमंत्रित की हैं। इस बीच, पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने नए साल 2024 में मेट्रो परियोजना की कामना की है। पिछली योजना के अनुसार, भुवनेश्वर हवाई अड्डे से कटक त्रिशूलिया तक कुल 20 मेट्रो स्टेशन बनाने का प्रस्ताव है। इस पर कुल 2163 करोड़ रुपये खर्च होंगे। भुवनेश्वर हवाई अड्डे से त्रिशूल तक 26 किलोमीटर लंबे मेट्रो रेलमार्ग पर 20 स्टेशन होंगे। प्रारंभिक चरण में मेट्रो ट्रेन तीन कोचों के साथ चलेगी। जिसकी यात्री क्षमता 765 होगी। यात्रियों की संख्या बढ़ने पर कोचों की संख्या भी बढ़ाई जाएगी। यह मेट्रो ट्रेन 85 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी। आधुनिक कोच, सिग्नलिंग प्रणाली और उन्नत टिकटिंग प्रणालियां स्थापित की जाएंगी। मेट्रो रेलगाड़ियां हर 10 मिनट पर चलेंगी। पिछली सरकार ने जहां इसे 2028 तक पूरा करने का वादा किया था, वहीं नई सरकार ने 2027 तक परियोजना को पूरा करने का लक्ष्य रखा है। इसके साथ ही उन्होंने नई डीपीआर तैयार कर इसके विस्तार की योजना भी सामने रखी है।

केआईआईटी विश्वविद्यालय में एक और नेपाली छात्र की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी) विश्वविद्यालय में एक और बड़ी घटना घटी है। गुरुवार शाम को सूचना मिली कि यहां पढ़ने वाली एक विदेशी छात्रा की मौत हो गई है। मृतक छात्रा प्रीशा शाह नेपाल के बीरगंज की निवासी है। उसका शव कंदे से लटका हुआ बरामद किया गया।पुलिस कमिश्नर सुरेश देवदत ने मीडिया को केआईटी हॉस्टल के अंदर एक नेपाली छात्र की मौत की जानकारी दी है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार नेपाली छात्रा प्रीशा शाह केआईटी में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही थी। ऐसा कहा जाता है कि वह कंप्यूटर विज्ञान में प्रथम वर्ष का छात्र था और छात्रावास में रहता था। एक छात्रा की परिसर में मौत हो गई। उनकी मृत्यु की परिस्थितियां अभी भी स्पष्ट नहीं हैं। हालाँकि, इस रिपोर्ट को लिखने के समय तक किट की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली थी। इब्कोसिटी पुलिस स्टेशन घटनास्थल पर अपनी जांच जारी रखे हुए है। पुलिस कमिश्नर, डीसीपी और अतिरिक्त जिला कलेक्टर भी मौजूद हैं।गौरतलब है कि देश के इस नामी शिक्षण संस्थान में कुछ महीने पहले एक छात्र की जान चली गई थी। संबंधित छात्र भी नेपाल का निवासी था और किट विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान छात्रावास में रहता था। छात्र की मौत की खबर ओडिशा सहित देश भर के प्रमुख मीडिया संस्थानों में प्रकाशित हुई। इस आत्महत्या से दुनिया भर में हलचल मच गई। इसका समाधान अभी तक नहीं हुआ है पिछिला केस मे नेपाल प्रधानमंत्री को हस्तक्षेप करना पड़ा था ।बहुत सारे विरोधी दल और सामाजिक संगठन आंदोलन किये थे ।अभी तक उसका नतीजा निकला नेही। इस बीच एक छात्र की आत्महत्या ने एक बार फिर विवाद खड़ा कर दिया है।

झारखंड में स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी खोलने की प्रक्रिया आरंभ करें : अलका तिवारी, मुख्य सचिव

परिवहन विशेष न्यूज

रांची। झारखंड में खेल-कूद की गतिविधियों को बढ़ावा देते हुए प्रतिभाओं को प्रशिक्षित कर निखारने के लिए खेल विश्वविद्यालय खुलेगा। खेल विश्वविद्यालय का संचालन झारखंड स्टेट स्पोर्ट्स प्रमोशन सोसायटी और सीसीएल के संयुक्त तत्वावधान में होगा। शुक्रवार को मुख्य सचिव अलका तिवारी ने इसकी प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश अधिकारियों को दिया। उन्होंने निर्देश दिया कि एक कमिटी बनाकर बिहार के राजगीर में खुले खेल विश्वविद्यालय सहित अन्य राज्यों के खेल विश्वविद्यालयों का अध्ययन करें और झारखंड की जरुरतों के अनुसार उसका इस्तेमाल करें। उन्होंने खेल गांव में 200 एकड़ में फैले 4 इनडोर और 6 आउटडोर स्टेडियम सहित अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर के समुचित उपयोग पर बल देते हुए निर्देश दिया कि राज्य की खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए और क्या बेहतर हो सकता है, उस पर फोकस करें। शुक्रवार को झारखंड स्टेट स्पोर्ट्स प्रमोशन सोसायटी की गवर्निंग काउंसिल की 11वीं बैठक को सी एस श्रीमती तिवारी संबोधित कर रही थीं।

मुख्य सचिव ने 4-5 साल तक के बच्चों को स्पोर्ट्स एकेडमी से जोड़ने की पहल करने का सुझाव देते हुए कहा कि विदेशों में लगभग इसी उम्र से बच्चों को प्रशिक्षित कर अंतरराष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी बनाया जाता है। बैठक में स्पोर्ट्स एकेडमी से जुड़े बच्चों की शिक्षा के लिए वहां सरकारी प्लस-2 स्कूल खोलने के सुझाव को स्वीकार करते हुए स्कूली शिक्षा सचिव को इसकी प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया गया। बताया गया कि स्पोर्टस एकेडमी के पास इंफ्रास्ट्रक्चर है, सिर्फ शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति की जरूरत है।

बताते चलें कि झारखंड में खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए झारखंड स्टेट स्पोर्ट्स प्रमोशन सोसायटी और सीसीएल के बीच 50-50 प्रतिशत के योगदान से 2015 में 30 साल के लिए एमओयू हुआ था। दोनों के संयुक्त तत्वावधान में 2016 से रांची के खेलगांव में स्कूली खेल प्रतिभाओं का चयन कर उन्हें निखारने के लिए रहने, खाने, पढ़ने के साथ विभिन्न खेलों के प्रशिक्षण की सुविधा दी गयी है। यहां 1400 बच्चों के प्रशिक्षण की सुविधा है, लेकिन अभी यहां 92 लड़के और 128 लड़कियों को मिलाकर कुल 220 बच्चे प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। प्रशिक्षक और सपोर्ट स्टाफ की संख्या 47 हैं। मुख्य सचिव ने इसकी संख्या बढ़ाने पर बल दिया। बैठक में बताया गया कि फिलहाल स्पोर्ट्स एकेडमी में 11 खेलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। चार अन्य खेलों का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। इसके लिए प्रशिक्षकों के चयन की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। 2021-22 से अभी तक स्पोर्ट्स एकेडमी से प्रशिक्षित 1628 बच्चे विभिन्न स्पर्धाओं में कई मेडल जीते हैं। उसमें अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में 4 गोल्ड, चार सिल्वर और 6 कांस्य पदक, राष्ट्रीय स्पर्धा में 74 गोल्ड, 70 सिल्वर और 118 कांस्य पदक सहित राज्यस्तरीय स्पर्धाओं में 763 गोल्ड 352 सिल्वर और 227 कांस्य पदक शामिल हैं।

सीसीएल ने दिया 5 मेगावाट का सोलर सिस्टम लगाने का प्रस्ताव

बैठक में स्पोर्ट्स एकेडमी के पार्टनर सीसीएल ने स्पोर्ट्स एकेडमी की गतिविधियों में बिजली की भारी खपत को देखते हुए खेल गांव में 5 मेगावाट का सोलर सिस्टम लगाने का प्रस्ताव रखा। इसका खर्च सीसीएल अपने सीएसआर फंड से करेगा। बताया गया कि बिजली बिल की बचत के पैसे का उपयोग खेल गतिविधियों को और उन्नत बनाने में किया जाएगा। वहीं खेल-कूद विभाग की ओर से बताया गया कि खेल गांव में स्थित इंफ्रास्ट्रक्चर 15 साल पुराना हो चुका है और उसके जीर्णोद्धार की जरूरत है। मुख्य सचिव ने इस दिशा में आगे बढ़ने का निर्देश दिया।

बैठक में गृह विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती वंदना दादेल, खेल-कूद विभाग के सचिव मनोज कुमार, स्कूली शिक्षा सचिव उमाशंकर सिंह, सीसीएल के सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह समेत स्पोर्ट्स एकेडमी से जुड़े पदाधिकारी शामिल थे।

झारखंड में सेवानिवृत्त पर कार्यरत डीजीपी लेकर भाजपा परेशान

पूर्व डीजीपी का क्या नाता है सरकार के साथ : बाबूलाल

कार्तिक कुमार परिच्छा,स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड के डीजीपी अनुराग गुप्ता के के सेवानिवृति के बाद अपने पद पर बने होने को लेकर इन दिनों भाजपा खास विचलित दिख रही है । प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि आखिर अनुराग गुप्ता में ऐसा क्या खास है कि उन्हें डीजीपी बनाए रखा गया है. बिहार में भी डीजीपी के खिलाफ थाने में 420 का मामला दर्ज है. ऐसे में ये आदमी झारखंड को कैसे बदलेगा, पुलिस कैसे काम करेगी, ये सोचने वाली बात है.

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि अनुराग गुप्ता को पहले हेमंत सोरेन सरकार ने 26 महीने तक सस्पेंड रखा था, लेकिन अब वो हेमंत सरकार के लाडले

अफसर बन गए हैं. झारखंड में ईडी की जांच चल रही है. अलग-अलग मामलों में कार्रवाई हो रही है. ईडी ने एक पत्र लिखा था जिसमें अलग-अलग अफसरों के नाम शामिल हैं. जिस मामले में ईडी के गवाहों की गवाही होनी है, अनुराग गुप्ता केस दर्ज करके या किसी और तरीके से उन्हें दबाने की कोशिश कर रहे हैं. यही वजह है कि हेमंत सोरेन और अनुराग गुप्ता के बीच गांठ पड़ गई है. जिसमें वह हेमंत सोरेन को घोटाले से बचाते हैं और यही वजह है कि हेमंत सोरेन उन्हें डीजीपी के पद पर बनाए रखते हैं.

चुनाव के समय उन्हें डीजीपी के पद से हटा दिया गया था क्योंकि उनके खिलाफ कई मामले दर्ज हैं, लेकिन जब दोबारा सरकार बनी तो उन्हें फिर से पुलिस का मुखिया बना दिया गया. अब रिटायरमेंट के बाद भी उन्हें असंवैधानिक तरीके से डीजीपी बनाए रखा जा रहा है. गृह मंत्रालय ने साफ कर दिया है कि वह डीजीपी नहीं रह सकते.

जब से अनुराग गुप्ता झारखंड के डीजीपी बने हैं, कोयला चोरी और अपराधियों का मनोबल बढ़ा है. कोयला चोरी रोकने की जिम्मेदारी डीजीपी को दी गई है. जिससे वसूला गया पैसा हेमंत सोरेन तक पहुंच रहा है. पैसे वसूलने के लिए कई लोग कई गाड़ियों में घूम रहे हैं. वे लोग कौन हैं और कैसे काम कर रहे हैं?

विश्व की सबसे ऊंची दुर्गा मूर्ति अब झारखंड के पलामू में

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, शक्ति की अधिष्ठात्री देवी मां दुर्गा की विश्व की सर्वाधिक बड़ी मूर्ति अब झारखंड राज्य के पलामू जिले में लगने जा रहा है. मंदिर निर्माण के लिए आगामी 14 मई को भूमि पूजन अनुष्ठान किया जायेगा. इसको लेकर जोरों-शोरों से तैयारियां चल रही है. इस भव्य मंदिर के निर्माण के लिए जमीन दाताओं के सहयोग से करीब 5 एकड़ से अधिक जमीन का अधिग्रहण किया गया है. पलामू जिले के हुसैनाबाद अनुमंडल के वर्चित बराही धाम में विश्व का सबसे ऊंचा दुर्गा मंदिर बनेगा. बराही धाम में 551 फीट ऊंचा मां दुर्गा का मंदिर और 151 फीट ऊंचा नवग्रह मंदिर का निर्माण कराया जायेगा. इस मंदिर का निर्माण कार्य शिवांश चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा कराया जा रहा है. बराही धाम परिसर में पहले से ही 105 फिट के दक्षिणमुखी हनुमानजी की प्रतिमा स्थापित है. हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा और प्रतिमा लोकार्पण के लिए परिसर में महायज्ञ कराया जा रहा था. इसी दौरान जमीन के नीचे से मां दुर्गा की प्रतिमा मिली, जिसके बाद इस जगह पर भव्य दुर्गा मंदिर

बनाने का निर्णय लिया गया.

ट्रस्ट के संयोजक रंधीर कुमार सिंह ने बताया की हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा और प्रतिमा लोकार्पण के लिए 2 मई 2022 से 51 कुंडिया श्री श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ आयोजित की गयी थी. इस महायज्ञ में त्रिदंडी स्वामी के पाद सेवक सुंदर राज स्वामी प्रवचन दे रहे थे. इसी दौरान अचानक स्वामी जी मौन होकर रो पड़े. उनके आंखों के सामने एक तेज प्रकाश आयी और कानों में एक वाणी सुनायी दी कि, "मुझे इस जगह से बाहर निकालो, महायज्ञ संपन्न हो जायेगा सभी लोग चले जायेंगे, फिर मुझे बाहर कौन निकालेगा ?". इस घटना के बाद तुरंत यज्ञ समिति के लोगो ने उस जगह की खुदाई शुरू की. हाथों से खुदाई नहीं होने के बाद जेसीबी मंगवाकर खुदाई करायी गयी. करीब पांच फीट गड्ढा खोदने के बाद जमीन से दो सांप निकले. लेकिन, दोनों ही सांप पल भर में गायब हो गये. इसके बाद आगे की खुदाई करने पर अंदर से शेर पर सवार अष्टधातु की मां दुर्गा की मूर्ति निकली. मौके पर मौजूद हजारों लोग इस अद्भुत क्षण के साक्षी बनें थे. इस दौरान ही ट्रस्ट के लोगों ने संकल्प लिया गया था की इस जगह पर भव्य दुर्गा मंदिर का निर्माण कराया जायेगा.

बराही धाम में स्थापित दक्षिणमुखी हनुमानजी जी के दर्शन के लिए प्रतिदिन परिसर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है. हनुमान जी के दर्शन के लिए न केवल झारखंड से बल्कि बिहार, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे अलग-अलग राज्यों से भी श्रद्धालु बराही धाम पहुंचते हैं. इस धाम परिसर में शिवांश चैरिटेबल ट्रस्ट और कई अन्य धर्मप्रेमियों द्वारा विगत ढाई साल से प्रत्येक मंगलवार को भव्य भंडारा होता आ रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023